

बि दे ह बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका बिदेह*



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

I SSN 2229-547X

VI DEHA

बिदेह १०७ म अंक १३ मग २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

५३ अंक १०७)



बि दे ह बिदेह *Videha*

**बिदेह** <http://www.videha.co.in> बिदेह प्रथम  
मैथिली पत्रिक ई पत्रिका *Videha 1st  
Maithili Fortnightly ejournal* नर  
अंक देखरौक लेव पुग सभके बिदेह कए

देख। Always refresh the pages for  
viewing new issue of VI DEHA. Read  
in your own script

Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gur  
mukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam  
Hindi

ई अंकमे छिट्टि:-



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

## १. संपादकीय संदेश

### २. गद्य



२.१.१. जगदीश प्रसाद मण्डल-गताश्रित आश्रित-



दीर्घकथा- काँसी- गिर कृपाव सा 'टैवव'-  
अनन्तराशी अकामये सामाजिक रिमर्श



२.२. सुजीत कृपाव सा-कथा-कहन  
सजाय ?

—



२.३.

सलनाबायण सा-डायबी

—



२.४.

खतुनेश्वर-मिथिला बाजा खान्दानन आ  
शरीद बङ्ग सा



२.३.

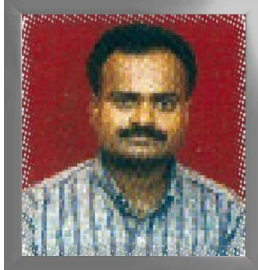
छंदन कृषाव सा-रिहनि-कथा-सद्बति



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह



२.७.

चन्द्रा

डा. केलागे कयाव मिथे- कथा-

—



२.१.

बिश्नेस

सन्दीप कयाव साहू-रिहनि कथा-अक्ष



२.४.

गेनहूँ-(हास्य कथा)

किशोर कारीगर-आरं हम ज़रौन भ२



### ३. पद्य



३.१.१.

सन्दीप कुमार साहू २.



शिरकुमार या 'टिन्' ३.  
जगदीश प्रसाद मण्डल

श्यामल सुमन ४.



३.२.१.

डा. शशिधर कुमार



“बिदेह” २.

बामनरास साहू



१०६ म अंक १५ मइ २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



३.३.१.

जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल



२.

जराहबनान कथपत्र



उमेश

पासवान



३.४.१.

अयोध्यानाथ चौधरी २.



उमप्रकाश ना



३.७.

बरि भूषण पाठक



३.७.

चंदन कृषाव सा



३.७.

जगदानन्द सा 'मन्त्र'



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली



इ.प.स.  
करीग

अमित मिश्र- गजल २.



मन्नाजी-

४. मिथिला कला-संगीत.



बाजनाथ मिश्र (चित्रमय



मिथिला) २.

उमेश मन्दन (मिथिलाक  
रनम्पति/ मिथिलाक जीर-जल/ मिथिलाक जिनगी)



३. गद्य-पद्य भावती.

अम्बिता सार्वगीक

ओडिया करिता- ओडियाँ अम्बिता सार्वगीक द्वारा





सूर्य, गङ्गासिंह मैथिली  
द्वारा

गजेन्द्र ठाकुर



३. रावना दूते-१.

जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिर'



२. डा. शशिधर कुमार "बिदेह"

—

१. भाषापाक बचना-लेखन -[मानक मैथिली] [बिदेहक  
मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष  
(ऑनबनेटपब पहिब वेब सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.  
एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql  
server Maithili-English and  
English-Maithili Dictionary.]



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

बिदेह ग्र-पत्रिकाक सब्छा प्रवान अंक ( ब्रैल,  
तिवहुता आ देरनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक  
लेन नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि । All the old  
issues of Videha e journal ( in  
Braille, Tirhuta and Devanagari  
versions ) are available for pdf  
download at the following link.

बिदेह ग्र-पत्रिकाक सब्छा प्रवान अंक ब्रैल, तिवहुता  
आ देरनागरी कपमे Videha e journal's  
all old issues in Braille Tirhuta  
and Devanagari versions

बिदेह ग्र-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ग्र-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.सीड ।



“बिदेह” ग्र-पत्रिका ग्र-पत्रसँ प्राप्त कक ।



अपन मित्रकेँ बिदेहक विषयमे सूचित कक ।



↑ बिदेह खा.ब.एस.बीड एनीमेटेबल अपन  
साइट/ ब्लागपब लगाउ ।



ब्लाग "लेखाउठ" पब "एड गाडजेठ" मे "बीड"  
सेलेक्ट कए "बीड यू.आर.एल." मे

<http://www.videha.co.in/index.xml> ठागप

केनासै सेहो बिदेह बीड प्राप्त कए सकैत छी ।

गूगल बीडबमे पठरा लेल

<http://reader.google.com> पब जा क२ Add

a Subscription बँटन क्लिक करू आ खाली

स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml>

पेस्ट करू आ Add बँटन दबाउ ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक  
पहिल पोडकास्ट साइट



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

<http://videharadio.wordpress.com/>



Videha Radio

मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि  
पारि बहल छी, (cannot see/write  
Maithili in Devanagari /  
Mthilakshara follow links below or  
contact at ggajendra@videha.com) उँ  
एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाउ । सगहि  
रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-  
प्रवान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए  
बैंगलोरमे आँनलाइन देरनागरी ठाँगप कक, बैंगलोरमे कापी  
कक आ रडि डाक्यूमेन्टमे पेसुँ कए रडि फागनकेँ  
सेर कक । विशेष जानकारीक लेल  
ggajendra@videha.com पब सम्पर्क  
कक । )(Use Firefox 4.0 (from  
[WWW.MDZILLA.COM](http://WWW.MDZILLA.COM) )/ Opera/ Safari /



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

Internet Explorer 8.0/ Firefox 2.0/  
Google Chrome for best view of  
'Videha' Maithili e-journal at  
<http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download  
of old issues of VIDEHA Maithili e  
magazine in .pdf format and  
Maithili Audio/ Video/ Book/  
paintings/ photo files. बिदेहक प्रबान  
अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो  
सभक हागत सभ (डिजिटल, रीड स्वयं साव आ  
दुरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करबक हेतु नीचाँक  
लिंक पब जाऊ ।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, नाटककार आ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

धर्मशास्त्री रिद्धापतिक स्थापना । भावत आ नेपातक  
माष्टिमे पसवत मिथिलाक धवती प्राचीन कातहिसें महान  
प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहल अछि ।  
मिथिलाक महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला  
बने मे देखु ।



गौरी-शैकबक पातरणि कातक मुर्ति, एहिमे  
मिथिलाकबमे (१२०० र्ष प्रक) अभिलेख अंकित  
अछि । मिथिलाक भावत आ नेपातक माष्टिमे पसवत  
एहि तबहक अन्याय प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र,  
अभिलेख आ मुर्तिकलाक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसें सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क,  
अनुसन्धान संगहि बिदेहक सर्च-अंजन आ नूतन सर्च आ  
मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसें सम्बन्धित रेसर्सागट सभक  
समग्र संकलनक लेल देखु बिदेह सूचना सर्च  
अनुसन्धान



बिदेह ज्ञानरत्नक डिस्कसन फोरमपब जाडु ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय  
ज्ञानरत्न) पब जाडु ।

ई रेब मुन प्रबन्धक(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क  
लेखक अहाँक नजरिमे कौन मुन मैथिली पोथी उपहास  
खण्डि ?

Thank you for voting !

श्री बाजुदेव मन्दलक “अर्धरा” (कविता-संग्रह)  
13.02 %

श्री रैचन ठाकुरक “रैलीक अपमान आ छीनबदेरी”(दूष्टा  
नाटक) 10.79 %

श्रीमती आशी मिश्रक “उचाष्ट” (उपन्यास) 6.35 %

श्रीमती पद्मा त्वाक “अनुभूति” (कथा संग्रह) 5.08 %

श्री उदय नारायण सिंह “नटिकेता”क “नो एन्ट्री:मा  
प्रवेशि (नाटक) 6.03 %



श्री सुभाष चन्द्र यादवक “रैनेत रिगडित” (कथा-  
संग्रह) 5.08%

श्रीमती रीणा कर्ण- भारनाक अस्तिपञ्चव (कविता संग्रह)  
5.71%

श्रीमती शैलानिका रमकि “किन्तु-किन्तु जीरन  
(आमेकथा) 7.94%

श्रीमती रिता बानीक “भाग रौ आ रैचन्दा” (दूठा  
नाटक) 6.98%

श्री महाप्रकाश-संग समय के (कविता संग्रह)  
5.71%

श्री तारानन्द रियोगी- प्रणय बहन् (कविता-संग्रह)  
5.4%

श्री महेंद्र मणियाक “दुतहा घैर” (नाटक)  
7.94%

श्रीमती नीता त्वाक “देशी-कान” (कथा-संग्रह)  
6.35%





श्री सियाबाम ना "सबस"क थोड़ै आगि थोड़ै पानि  
(गजल संग्रह) 6.67%

Other : 0.95%

ई रैब रौत साहित्य प्रवक्ता(२०१२) [साहित्य अकादेमी,  
दिल्लीक नेत अहाँक नजबिमे कोन मूर मैथिली पोथी  
उपहाऊ अछि ?

श्री जगदीश प्रसाद मन्दन जीक "तरेगन"(रौत-  
प्रेमक कथा संग्रह) 50%

श्री जीरकांत - थिथिबक रिखवि 25%

श्री म्बरीधर नाक "पिनपिनहा गाछ 23.53%

Other : 1.47%



ई रैव हरा प्रवक्ता(२०१२)[साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क  
लेख अर्थात् नजबिमे कोन कोन लेखक उपहास छथि  
?

श्रीमती ज्ञाति स्मृति चौधरी “अर्चिस” (कविता  
संग्रह) 23.15 %

श्री रित्त उषेक “हम प्रेते छी” (कविता संग्रह)  
7.41 %

श्रीमती कामिनी “समयसँ सम्राट करैत”, (कविता  
संग्रह) 6.48 %

श्री प्रतीका काष्ठक “रिषदन्ती रवमान कालक बति”  
(कविता संग्रह) 4.63 %

श्री आशीष अनटिन्हाक “अनटिन्हा आखर”(गजल  
संग्रह) 25 %

श्री अरुण सौभक “एतरे छी नहि” (कविता  
संग्रह) 6.48 %



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

श्री दिनीप कुमार मा "वृष्टि"क जगत्ते बहुरै (कविता संग्रह) 8.33%

श्री आदि यायारबक "भोथब पैसिनस" निथन" (कथा संग्रह) 4.63%

श्री उमेशी मन्दनक "निश्चुकी" (कविता संग्रह) 12.04%

Other : 1.85%

ई रैब अन्नराद प्रबन्ध (२०१३) [साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेन अहाँक नजबिमे के उपहाज छथि ?

Thank you for voting !

श्री नरेशी कुमार रिकन "ययाति" (मवाँठी उपन्यास श्री रिष्णु सखाराम खल्लुकर) 35.23%

श्री महेंद्र नावायण राम "कार्मेनीन" (कौकिली उपन्यास श्री दामोदर मारजो) 13.64%

श्री देवेन्द्र मा "अन्नभर" (रौन्ना उपन्यास श्री दिवान्दु पालित) 11.36%



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

श्रीमती मेनका मल्लिक "देशी आ अग्र करिता सभ"  
(नेपालीक अनुवाद मूल- बेमिका थापा) 14.77%

श्री छत्रु कुमार कथप आ श्रीमती शशिबारा- मैथिली  
गीतगौरिन्द ( जयदेव संस्कृत) 11.36%

श्री बामनाबायण सिंह "मनाहिन" (श्री तकसी शिरशेकव  
पल्लिक मनयारी उपन्यास) 12.5 %

Other : 1.14%

हेतु प्रवक्तव्य-समग्र योगदान २०१२-१३ : समानांतर  
साहित्य अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !

श्री बाजनन्दन ताल दास 52.94%

श्री डा. अमरेंद्र 25%

श्री चन्द्रभान सिंह 20.59%



## 1.संपादकीय

१

जगदीश प्रसाद मन्दन- एकठाँ राबोत्राही...गजेन्द्र  
ठाकुर द्वारा .....श्री

जगदीश प्रसाद मन्दन बी.ए. पार्ट-1 केरनि आ कबिते  
१९७१ अगस्त आम चुनाव आएन । जहिना कांग्रेस  
पार्टी जन-समूहसँ हटि किछु खास जातिक पार्टी रनि  
बहरन छन तहिना आनो-आन पार्टीक स्थिति छलैक ।  
कम्युनिस्ट पार्टी किछु ক্ষेत्रमे मजबूत छन छदा  
समावपन अलाकामे कमजोर छलैक । छदा तैयो  
जोब-सोवसँ पकड़ि बहरन छन । कांग्रेसक प्रति  
लोकक आकांक्षी रैछि बहरन छन । सबकाव विरोधी  
(कांग्रेस सबकाव) हरा रनि बहरन छन । कावणो  
छलैक, स्रतंत्रता आन्दोलनमे स्रतंत्र देशिक जे  
आकांक्षा होगत ओ तँ छलैहो छदा ओकर पुर्तिक  
कोनो उपाय नै भेल । संगे-संग कांग्रेस पार्टी  
जनसमूहक संग छोड़ि परिवार विशेष रा जाति-



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

बिशेषमे समष्टि चक्र छल । ग्रामीण समाजमे  
स्वतंत्रताक कोनो नाब स्पष्ट कपे सोना नै  
आएल । किसान प्रधान मिथिलाचरकेँ आजादी पुरैक  
स्थिति रैनल बहल । ओना देशेमे पंजाबक किसानक  
स्थिति सुधबि गेल । काबण ओगठामक सबकार धुषिकेँ  
प्रभुतासँ पकड़ि पानि-रिजलीक रैरस्था कऽ  
लेलक । पानि आ रिजली, धुषि लेल दुनु साधन प्रभु  
अछि । से रिहाब (मिथिलाचर)मे नै लेल । शिक्षा-  
रैरस्थामे सेहो जेहेन हेराक चाही सेहो नै  
लेल । सर्ग-सर्ग आरो रहुत काबण लेल । जगसँ  
बिद्यार्थीक रीच आकाशि सेहो रहुल । बाजनीतिक  
चेतना रहुने जगोनिहारोक संख्या रहुल । ह्रदा  
अपनेमे लड़ने-बगड़ने सब विरोधी पार्टीक स्थिति  
सेहो खबारे । नर चेतनाक सर्ग विरोधी (कांग्रेस  
विरोधी) सब बाजनीतिक पार्टी एक मंचपब आएल ।  
अंग्रेजिये शिसन जकाँ कांग्रेसो शिसनक बिकछ लोक  
उठि कऽ ठाढ़ लेल । ओना देशेक ह्रदा रिहाबक तँ  
कहने जेतअ जे स्वतंत्रताक उपबान्त पहिल जन-  
जागब छल ।

सब पार्टीकेँ एक मंचपब एने कोनो निश्चित कार्यक्रम  
रैनल अस्तित्व छल काबण एते जलदिराजीमे भग्ये



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कि सकेए । तखन तँ आम-चुनार पीठपव थडि तँए  
सबकाव रँदलैक कार्यक्रम रँनल ।

किसान-रौनितारक संग रूझिजीरियो मैदानमे  
उतबनाह । कांथ्रेस रिरौधीक नीक हरा रँनल । अपन  
मधुरैनी जिनामे अखन दूठा पारिषामेष्ट स्केत्र थडि,  
तगदिन दबलंगे जिनो छल । दुनु स्केत्रमे कांथ्रेस  
हावल । हावरै नै कएल रौठैक प्रतिशित रँहूत  
निच्छा उतवल । एकसूत्री कार्यक्रम, कांथ्रेस छंठाड,  
बहने कानो बाज्यमे एक पार्टीक सबकाव नै  
रँनल । थिचडाँ ये सबकाव रिरारो, रँगानो,  
उत्तराप्रदेशे आ आनो-आन बाज्यमे रँनल ।  
समस्यासँ ग्रसित बाज्य सब छलैह, किमहबसँ समस्या  
पकड़ल जाए, अख्य समस्या छल । तगरीच चतवल-  
गडगव भूदानो आन्दोलन उषिआए लगल । अदा  
तेयो किछु गोष्टे भूदानसँ बाजनीतिक मचपव  
एनाह ।

भूदानकेँ आन्दोलनक रुपमे ठाढ़ कएल गेल । ओना  
तेरांगनाक भूमि आन्दोलन चवमपव छल । जमीनक  
छथम भाग (छठा हिस्सा दान दिथ) हिस्सा मंगैक  
अभियान शुरू भेल । लोक नाथक-नाथ रीया दान  
देनि । सरहक अन्वयन भेलनि जे देशीक छथम



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

हिस्सा गबरीलौक रीच आओत । कोनो गाम दु  
प्रतिशेतिस् न२ क२ पनबह रीस प्रतिशेति तकक जमीन  
घब-घबाड़ १मे नगौ छै । तगठाम छथम हिस्सा  
सोतन प्रतिशेतिस् डुपब, जमीनक आमद-थर्च दनु भ२  
गेत । भवर्हि आगयो, २०१२ अमे ठेरो परिवार  
एहन थडि जेकरा चाबि डिसमिन जमीन नै छैक जे  
घरो रैना सकत ।

जहिना हरामे डुपिआगत भूदान आन्दोलन आएत आ  
गेत तेकर ओत प्रभार नै पड़त जत गामक एकठा  
गृह-उद्याग समाप्त भेने भ२ गेते । खादी-भंडाबक  
माध्यमस् कारोबार चलैत छत, तगमे तेना क२  
झसहन लागत जे थल-माष्टि दनु एकरैछ भ२ गेते ।  
जेहने दाना थल तेहने झसहनिक माष्टि, केना  
रैवाओत जाएत । ओना अथनो किछ गोठे भूदानी  
जमीन पारि खुशहालीक जिनगी रैनौने छथि तहिना  
कपड़ १क (खादी) कारोबार चलैत, झदा नगण्य  
कपमे । जहिना नुष्टमे चबथा नहा कहत जाओ छैक  
तहिना चबथोक नहा सठि बहत छत । झदा अथनो  
बुनियादी समस्याक भीड़ कियो जाओ नै चाहित  
थडि । ओहन समाजो नै रैन सकत थडि । ओना  
समाजो केना रैनत, दुकस्त केनिहावस् रैसी





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तुठैनिहारे अछि । रैरोजगारोक संध्या कम नै  
डैक दूदा ओहना रैरोजगाव तँ अछिये जेकवा  
मोठैव सागकिन, होठैव, मोरौगत होगत कपड़ १-  
नत्ता, भोजन-ढाजन सहित रीस हजाव कपेखा  
महीनाक जिनगी रैनि गेल अछि ।

तेतिस सूत्री कार्यक्रम न२ क२ मिनत-जूनत सबकाव  
रैनत । मैथिलिक पबीक्षामे अंग्रेजी भाषाके कमजोव  
कएत गेल संग-संग हाथ सुकृत तकक शिक्षा त्रि  
करैक अ राज उठत । १९३१ अक रौद अंग्रेजी  
शिक्षा आगू रैतत । जग अंग्रेजीक पठ १ग आठमा  
(हाथ सुकृत) सँ शुक होगत दुन ओ मिडन सुकृतमे  
प्रवेशे क२ गेल । दुठासँ पठ १ग शुक भ२ गेल ।  
घीच-तीड़ क२ अठावह महीना सबकाव चतत । हेल  
मध्याह्न चूना भेल । दूदा पहिलका थिचड़ १, जे  
सोनहली घाँस अलग दुन, ईरैव घी-थिचड़ १ सबकाव  
रैनत । समस्या-समाधानक प्रति ओते नै भेलै दूदा  
जन-जागवण जकव भेलै । तग रीच हवितकान्ति  
धुषिमे सेहो भेल । कतौ-कतौ तँ एहेन भेल जे  
जग खेतमे पाँच सेव कष्टा होगत दुन ओ क्रीन्ठन  
कष्टा उपजए लगत । दूदा अपना ईठामक जमीनक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

झाहो दुभाग्य बहन जे खेतरना नोकरी-चाकरी  
करथे शिबसँ रिदेशी धरि पहुँचि गेलाह, झुदा खेत तँ  
गामेमे बहि गेलनि । रैठागक एहेन रैरहाब जे  
रैठेदावकें नाभ नै होगत । पाग-कौड़ १ कमने  
संस्कारो तेज भेलनि । खेलाबेमे लोक खेत रैठेए  
आकि पागयो-कौड़ १ बहने लोक रैचत । पड़ने  
बहत । झुदा रैठि क२ रौप-दादाक नाक केना  
कठिअर ।

तथ सग सबकारी कार्यालय कागजी सार्वजनिक अड्डा  
रैनन अड्डि । मिथिलाचलक एक-एक समस्या  
मिथिलारसीक छियनि । अथनो रैछा सरलक सुकूनमे  
ई ठगसँ माबन-पीठन जाग छै जे ओ सुकून छोड़ि  
दैत अड्डि । एकैसम शिवादीमे जँ अठावहम सदीक  
रैरहाब चलत तँ ओगसँ सललित नाभक आशि नै  
कएन जा सकैए ।

जगदीश प्रसाद मन्दन १९७१ आ.क. चूनारी दौड़मे  
जनररी १९७१ आ.मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक  
सदस्य रैनना । चूनारो पीठेपब बह, मधेप्रवास  
कांग्रेस पार्टी हाबन ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

गाम-समाजसँ न२ क२ देशिक बाजनीति तकमे  
खबाजक स्थिति रैनए नगले । १९३१ ग्राक केबनक  
रामपंथी सबकाव तोड़िमे सबकावक साथ खसन ।  
सुरतवता सैनानियोक (आजादीक नड १७  
नडनिहारोक)क संख्यामे रैहूत कमी नहिये भेल  
हुन । किछु प्रथम नेता जकर मरि गेल हुनह ।  
बाजनीतिक क्षेत्रमे भाग-भातिज आ जातिराद,  
सम्प्रदायरद, दल-रैदल एवदि जेव माबनक ।  
नेत्रत्रक साथ सेहो घटन । जातिराद कपमे  
जत२ जनताक साथ नेत्रत्रक नजबिमे गिवन तत२  
कोनो पार्टीक रिपायक सांसद कोनो कबता-धोती  
पहिरि-पहिरि लोकक रीच खरैए नगलाह । रैडका  
नेताक संग छोटकाक रैनि चढए नगर किएक तँ  
जाति, कर्दूमर, गौआँ, पड़सी, जेन-देन ओकब  
आधाव रैनन । रिहारोक बाजनीति जठा-जठानक नाच  
जकाँ मिनहोबि खेनए नागर । प्रशिसनो नाभ  
उठौनक । रोठक पार्टीकेँ रिन रोठक पार्टी दरा-दरा  
शिसन पकड़ए नागर । एक तँ ग्राम-पंचायत सिनेमा  
पोस्टर जकाँ नाम गाम हुन, जेकवा मजगुत कवर  
सभसँ खरू दूदा देशिक हुन जेकवा आरो कमजोब  
रैना सबकाबी तंत्रक हाथमे समेष्टि क२ बाधि देन  
गेल हुन । कोठ-कचहरीक चतती खरि गेल । केन



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नै अरैत एक दिस हावत झुथिया झुथिया, हावत  
आरो-आरो सतासीन ह्थे नगर आ जनताक  
प्रतिनिधि सड़कपर बहि गेल । जमीनदाब-सामंत  
घसागत-घसागत घसा गेल, गाम-गामक ओकर जमीन  
गौआँक अथड़ हा रनि गेल । जेकर नाँ, तेकर  
भैसक स्थिति रनि गेल ।

रिचावधारक रीच बाजनीतिक पार्टीक रीच सेहो उठा-  
पठक ह्थे नागर । मेष्टी-मोष्टी सामाजिक, आर्थिक,  
रौद्रिक, बाजनीतिक सभ मंचपर रैचारिक संघर्षक संग  
सामाजिक-आर्थिक सेहो ह्थे नागर । जेकर  
परिणाम अन्दिवा जीक नेत्रत्रकानमे स्पष्ट भै  
गेल । आजादीक राँद कांग्रेसक रीच पहिने रैचारिक  
नड़ गे छल ।

गाम-गाममे सेहो प्ररोहितरादकेँ पक्का नागर ।  
जतिया आगु पतिया नै नगौ छै, निःशायिक भेल ।  
झुदा जग कपमे आर्थिक शोषण होगत छल तगमे  
कमी नै भेल । जातिमे किछ रैदनार आधन झुदा  
रैरहाबिक पक्ष ठामक ठामहि बहि गेल । कतरौ  
ठामक-ठामे बहन तैयो रैरस्थानक विरोधमे किछ नै  
किछ नाँ भैरै कएल । कावणो भेल, हो-हामे  
काज तँ शुक भेल झुदा पोथी-पत्राक भाषा तँ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धीमिह

संस्थाने बहए । पठनिहारोक संस्था कम आ  
बुमिनिहारक तँ सहजहि नै । झुदा तैयो किछु नै  
किछु चक-चुक चरिते बहर । कतौ ओम न२ क२  
माबि-पाँछि तँ कतौ किछु । जहिना पोथी-पतवाक  
दशा भेल तहिना बाजनीतिक मचपब गांधीरादक दशा  
भेलनि । एक्क रात एक्क पाँतिक ब्याख्या जते-झूत  
तते बगक हूथए नगर । जकबत थुडि, जकबत  
थुडि जे ई समस्याक समाधान मजगुतीसँ कएल  
जाए । नै तँ मुँडन आ सबाधक भोजमे कोनो भेद  
नै बहत ।

शिक्षा-संस्थान आरो एकठा थुडा रनि गेल । कोनो  
तबहक प्रतिबंध नै । रएह कओनेजमे गांधीरादी  
सिद्धान्तो पढ़ाता आ फील्डमे आरि थिन्त्रियो  
उड़ताह । आ रिषानसभा संसदमे रिकेरौ  
कबताह । एहेन खेन पढ़न्नेसँ भेल । झुदा एकठा  
जकब भेल जे जहिना १९४२ ग.क अंगेज विरोधी  
हरा पैदा केनक ।

तहिना १९७१ ग.क हरा सेहो केनक । एक दिस  
लौदीक माबन किसान, सामंत-पूँजीपतिक रीच विवाद,



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जाति-जातिक आ रक्षा-जातिक रीचक दूरी जेतन  
थेत जकाँ चौकिया क२ एकरैष्ट्र भ२ गेल । झुदा  
सोनहनी नै भेल । ओना कोसीक पुर (नेपाल हाथक  
सहित) रैनन, कोसी नहबिमे हाथ नागन झुदा की  
नाभ भेल, देखिते छिई ।

जग तबहक हलचल कओनेज आ हाथर शिक्षण  
संस्थानमे भेल तग तबहक हलचल हाथ स्कूलमे नै  
भेल । मिडल स्कूलक तँ चर्चे नै । जे हानिरसिंठीक  
सर्बोच्च पद (भी.सी) रिद्धत मंडलीक रीच छल ओ  
प्रशिक्षणिक अहमसक हाथ जाए लगल । केना नै  
जागत, रिद्धता आ प्रशिक्षणमे तँ किछ रैरहाबिक  
अंतर्ब अछिथे । कोनो काबगल निथामो नै लगौल  
जा सकैए । किछ सबकारी कओनेज तँ किछ गैब  
सबकारी । किछ रैनिते तँ किछ रैनैक रिचारे  
करैत । एहना स्थितिमे निथामे मजगुती केना  
आओत । उपबका पाब निछा दिस रहल । रिद्यार्थियो  
जे सार भवि नेतागिरी केननि ओ परीक्षा केना पास  
कबतल । तछ जे तँ कानूनक जकबति । छुड़  
ऊठल आ एक्क-दुग्ये किछ कओनेज छोड़ा परीक्षामे  
चाबै शुक भेल । कापी जँचनिहारोकेँ अगहन हाथ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नगननि । कतेक कंठी शिष्कक रीच छैठन । पाग  
हाथ नगने शैव दिस सेहो रैठनाह । झुदा किछ  
होड, किछ कमजोब लोकक रिद्यार्थीकेँ जकब नाभ  
भेननि । ओना जते हेरौक चाही से नै भेननि ।  
बंग-रिबंगक प्रागरेष्ट कओनेज कागजेपब उठि क२  
ठाठ भेन । कागजेपब पठ १७ कागजेपब परीक्षा  
आ कागजेक डिग्री रिकाए नागर । जगसँ बुनियादी  
समस्या छुटि गेल । नै मेडिकल कओनेज रैठन आ  
नै अंजीनियरिंग, नै अंजीनियर नै काबखाना । नै  
छैकनीकल कओनेज रैठन आ नै कृषि काबीगबक  
निर्मणि भेन । नै एग्रीकल्चर कओनेज रैठन आ नै  
कृषि किसान रैठन । उतब-दड़िन रिहाबक सर्रिपसँ  
ईशामक (मिथिलांचल) पठन-लिखनकेँ दड़िन रिहाबमे  
नोकरी भेठननि । रहुत गोष्टे घर-अंगना रना  
नैननि, झुदा दुनु राज्यकेँ रिभाजित भेने भाषाक  
सीमारेदी भेन । ओना जेहन एकवर्गाह भाषा  
मिथिलांचलक अछि ओहन दड़िन रिहाबक नै अछि ।  
काबखाना अछि जे जखन कर-काबखाना अछिये नै  
तखन कोन नोकरी पारैए आन बाजक लोक गुताह ।  
तँए भाषामे कोनो धक्का नै नागर अछि ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

हिन्दी आनर्सक संग री.ए. पास केरन्हि जगदीश प्रसाद  
मन्त्र, १९७९-१९। अ.क रैचमे सी.एम. कउनेजमे नाँ  
लिखेन्हि। पढ़ १७क स्तव सेहो कमि चूकन छन।  
आफेसब आ रिटायर्रीक रीचक संरंधमे जरेबदस्त धक्का  
लागल। जगसँ शिक्षकक प्रतिष्ठामे कमी आरि बहन  
छन। नीक शिक्षक अपन झूठ रँग कइ अपन  
प्रतिष्ठा रैचरैमे लगि गेलाह। आकाशि शिक्षकक  
रीच रैठरै कएल। पाग-कौड़ क लेन-देन आ  
पैबरी-पैगाम खुर रैठन। जाति आधारित छान-  
शिक्षकक रीच संरंध रैठन तँ दोसर दिस (आन-  
जातिक) संरंधमे कमियो भेल। ओना तँ सब  
कनासक झुदा एम.ए.क परीक्षा तीन साल पछुआएल  
बहए। कनास सम्पन्न केनाक बाद गाम आरि  
परीक्षाक प्रतीक्षा कबए लगल। तग रीच गाममे  
(रैबमा) दुर्गापूजाक रिचाव उठल। जतः-ततः चर्चा  
हुअ लागल। अकिशि लोक पूजाक पक्षमे बहथि।  
झुदा दुर्गापूजा तँ आन पूजा नै जे कमो जगहमे  
कएल जा सकैए। ई लेल अधिक जगहक जकबति  
होगत अछि। काब जे एक तँ दस दिनक पूजा,  
तगपब दोकान-दोबी, मेला, नाच-तमाशा सेहो  
होगए।





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

गौआक सहमति रैनने बैह, सकुनक प्रांगनमे रैसाव  
भेने, ओना तगसँ पहिनो गौआक रैसाव कते रैरे  
भेन झुदा जते लोक ई रैसावमे उपस्थित भेन  
ओते कहियो नै भेन छन । तहिना रैसावमे  
रैजनिहारोक संख्या रैठन । नर पीढ़ी कान्ह  
उठैनि ।

रैसावमे पूजा सखक चूना ह्थए लगन । दु-तीनठा  
जगह ओहन भेठन जगमे दुर्गापूजा सम्हवि सकैए ।  
झुदा खाली जगहेठा सँ नै ह्थए, दिन-रातिक मेला,  
तँए स्वस्मो अनिरार्य छि । तँए स्वस्मित जगहक  
महत रैठन । सकुनक प्रांगनक सहमति रैनन ।  
दोसब प्रश्न उठन रैनि प्रदानक । परोपष्टाक दुर्गापूजा  
दुनु ठगक चलेत । किछ ठाम रैनि प्रदानो होगत  
आ किछ ठाम नहियो होगत । झुदा गप आमेव  
गेन । एक मतक गाममे दुनु मत पनपन । जहिना  
रैसाव एक मतसँ शुरू भेन तहिना दु मतमे  
रिभाजित भै गेन । रैनि प्रदानक पक्षसँ अधिक  
रिपक्षक । दोसब दिस पूजा कबीर आरि गेन  
बैहक । जँ छसि जागत तँ साने छसि जागत ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

आहो रात सरैठक मनमे बहनि । घमर्थन होगत-  
होगत रैनि प्रदान करक । झुदा रिराद रैठि ये  
गेन । रिराद रैठिक काबि भेल जे पचायतक जे  
झुथिया बहनि, हुनकर प्रभार अधिक बहनि । झुदा  
समाजोमे नर चेतना जागि चूकर छल । शुक्रमे  
(१९७२ ई.) जखन पचायत रैनर तखन जे झुथिया  
रैनराह ओ १९७२ ई.क चूनारमे हारि चूकर छलाह ।  
ओहो मतभेद बहरै करनि ।

पूजा दस-राबह दिन पहिने एकठा जुरैदिस घटना  
घटल । ओ घटना ई जे मौजूदा झुथिया किछ  
गनन-चुनल लोकक रिचाबसँ दोसर स्थानपर माने  
सकलक प्रांगनसँ अलग स्थानपर पूजाक न्यो नह  
लेलनि । समाजक रीच आकाशि रैल । झुदा आगू  
रैठिक हिममति नै । मनमे उत्साह जकर झुदा  
डरो । काबणो स्पष्ट छल जे अलाकाक झुडहन  
लोकक समर्थन ओही स्थानकेँ भेट गेल । जगदीश  
प्रसाद मन्दल जी सब दोहरा कह रैसाव केवलहि ।  
सोम्या-सोम्या तँ कियो विरोध नै केवलन्हि झुदा  
खुनि कह अरैयोलो कियो तैयार नै । जुरैदिस  
समस्या ठीक कह ठाढ़ भेल गेल । ई रात सब



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

बुनौत जे जहिना थठपठ भेलोपव जहिना रिंथाहक  
रौद समनौता भगये जागत अछि तहिना एरेबक  
हुसनापव पुजोमे हेरे कबत । उँ मोक्या हाथसँ  
निकरने पुजे निकरि जाएत । रैसाबमे उँ भेल  
जे दोसरो पुजा ह्वाए । सएह भेल । सर्ग-सर्ग  
एहो उँ भेल जे सब समाजसँ रौहव चँदा कब  
नै जाएत जाए, भनहिं जतरै चँदा हएत ततरै न  
क२ पुजा कएत जाए । नै पान उँ पानक उँटैयेसँ  
काज चलाएत जाए । ह्दा दोसव दिस (जग दिस  
ह्थिया बहथि) चँदाक भवभाव भेल । सबकाबीसँ न  
क२ आनो-आन पँचायतक चँदा भेल । सर्ग-सर्ग  
एहो भेल जे गाममे रँन्हुआ चँदा सेहो भेल ।  
रँन्हुआ चँदा ए जे चँदा देनिहारक रिचावसँ होगत  
अछि नै कि जरदस्ती । ह्दा सेहो भेल । चँदाक  
नाँपव जुबिमानाक रुप पकड़क । खुनि क२ नै,  
चूपे-चाप । पबिस्थितियो अन्नकुने पकड़ एत । जे  
आदमी नगड १-नमनष्टमे ओमवा गेल अछि ओ कत२  
जाएत । ह्दा समाज (गाम)मे उँ कोनो रात छपित  
नहिये बँह डै । तीन-पाँचमे समाज रँष्ट गेल ।  
दू दूगस्थानक दू पाँच आ दूदिसिया । दूदिसियारना  
सब रँन्हुआ चँदामे हँसनाह ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पूजाक आर्वाभ भेन । दूनु स्थानक रीच किछु खास-  
खास अतिव भेन । ओ अ भेन जे जगदीश प्रसाद  
मन्दिर सभ गामक लोककेँ नर दोकानदावक रुपमे  
ठाढ़ केरन्हि । कियो मिठांग तँ कियो दोसब चीजक  
दोकान केरनि । समाजक चंदासँ पूजा हएत समाजक  
लोक दोकान कबताह तँए मेरामे रँझी (रैक्स)क  
प्रारधान समाप्त कइ देन गेन । किछु गोष्टे तार  
ठाकि ठाढ़ भइ गेलाह जे हमरूँ सभ ओहिना पूजाक  
आयोजन कवरै जहिना ओ सभ कबताह । भवहि  
चंदा नै पुरत तँ रयकतिगत रुपमे देरै । एहेन  
कबीर पान-सात गोष्टे भेलाह । तंग सर्ग अहो  
भेन जे सभ ओंग स्थान (दोसब स्थान) पब नै  
जेता । हेब दुदिसिया सभ हँसलाह । हँसरै नै  
केलाह जिमहब जाथि तिमहब लोक नु-नु, थु-थु  
कबनि । एमहब आरथि तँ ओमहबका आ ओमहब जाथि  
तँ एमहबका झूठे-काने रौकिथरैए नगननि । पुरान  
पीढ़ीक रिचावकेँ धक्का लागल । नर पीढ़ीक हाथमे  
समाज आएल । तंग सर्ग अहो भेन जे रैबमाक  
रंगरक गाम जगदरो आ कटुरियो रँझी गेन ।  
जगसँ दूनु गामक समर्थन दूनु स्थानकेँ भेष्टल ।



मिनि-जुनी सबकाव रैनने हागयो सकुन प्रभारित  
भेन । किअक तँ किछ सकुन सबकावक नियंत्रणमे  
आएन । रुदा सब नै आएन । जे आएन ओकर  
हानतो सुधबनै आ शिक्षककेँ रेतनो रैठनि । रुदा  
जे नै आएन ओ ठामक ठामहि बहि गेल । जगसँ  
एक नर नट १५ शिक्षा रिभागमे शुक भेल ।

सन् सैतानीस...

भावतक स्वतंत्रताक विचारिक मन्दा फहरा बहन  
हुन ।

रुदा कम्युनिस्ट पार्टीक माननाग हुन जे भावत स्वतंत्र  
नै भेल अछि ।

असली स्वतंत्रता भेटैर रौंकी छै...

मिथिलाक एकठा गाम...

जन्म होगत अछि एकठा रैचाक.. ओही रर्थ ...



ওগ স্বতঁব রা স্বতঁব নৈ ভেন ভাবতমে...

পিতাক মূহু...গবীরী..

কেস মোকদমা...

রচিতক লেন সংঘর্ষমে ভেঠলৈ স্বতঁব ভাবতক রা  
স্বতঁব নৈ ভেন ভাবতক জেন....

আগ রেবমামে পাঁচ-দস রাঁঘাসঁ পেঘ জোত ককরো  
নৈ..

ওগ গাম মে আগ জীরিত খুন্টি আগযো কিসানী  
আমেনিভিব সংস্কৃতি...

পুরোহিতরাদপব ভ্রাঁহ্মারাদক একদ্বত বাজ্যক জতহ  
ভেন সমাপ্তি..

সংঘর্ষক সমাপ্তিক রাঁদ জিনকব লেখন মেথিলী সাহিলমে  
আনি দেলক পুনর্জাগিবশা...

জগদীশি প্রসাদ মন্ডল- একটা রাঁযোগ্রাফী...গজেন্দ্র  
ঠাকুর দ্বাৰা .....শীঘ্র

( বিদেহ ৩ পত্রিকাকৈ ৩ জুলাই ২০০৪ সঁ খখন



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

धरि ११+ देशिक १,३१० ठामस १+,३४३ गोठे द्वावा  
३६,०२९ रिभिन्न आग.एस.पी. सँ ३,३३,४६९ रैव देखन  
गेन अछि; धन्यवाद पाठकगण। - गुगल एनेलेटिक्  
डेष्ट। )



गजेन्द्र ठाकुर

[ggajendraa@videha.com](mailto:ggajendraa@videha.com)

[http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post\\_3709.html](http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html)

२. गद्य



२.१.१. जगदीश प्रसाद मण्डल-गताशिस आग-



दीर्घकथा- काँसी गिर क्माव सा 'टैवव'-  
अनधुवनी अकाममे सामाजिक रिमर्श



२.२. सुजीत क्माव ना-कथा-केहन  
सजाय ?



२.३. सलनाबायल ना-डायबी

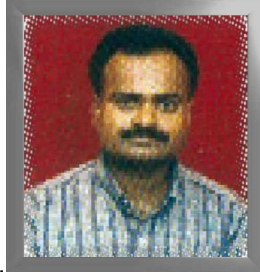




२.४. खड्गेश्वर-मिथिला बाजा आबदानन आ  
शेरीद बङ्ग सा



२.५. छंदन कथाव सा-बिहनि-कथा-सद्वति



२.६. डा. कैलाश कथाव मिथे- कथा-  
चन्दा

—



२.१. सन्दीप कुमार साहू-रिहनि कथा-अबू  
बिश्वास



२.२. किशोर कारीगर-आरंभ हम ज़रूरत भइ  
गेतहूँ-(हस्त कथा)



२.३. जगदीश प्रसाद मण्डल-गताश्रित आगू-दीर्घकथा-



२.४. शिर कुमार साहू-अनन्तधन्य  
अकासमे सामाजिक रिमर्श



जगदीश प्रसाद माहो

गतशिस आगु

दीर्घकथा- काँसी

सूर्योदय भ२ गेल । रैनदेरक पनौ कामिनी आ रैथै  
स्वशीत प्रमत्त भेल अपन-अपन काजमे लागल, झुदा  
मनमे रिचित स्थिति रैन बहक । ने स्वशीत माथे  
किछ कहैत आ ने माथ रैथैके । दूनुक मनके  
रैनदेरक काँसी भीतरे-भीतरे थिछैत बहए । जगस  
मनक पीड़ । रैठैत बहक । मनक पीड़ । ताथवि



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

रैठोत जाधवि ओकवा निकारि दोसबकेँ ने कहन  
जागत छि। तखने अकासमे एकठाँ कौआ  
राजत। कौआक रौनमे कामिनीकेँ अपशिखन बूँस  
पड़नि, झुदा सुशीलकेँ सखन बूँस पड़नि। धूम्रा  
तोड़ोत कामिनी राजनि-

“कौआ, कौआक रौन केहेन ओर सन भेल।”

ओना रैनदेरक हाँसी दुनूकेँ बूमन, झुदा तैयो मनकेँ  
बूमनरैत रैनरैत कामिनी रैजलीह। माँक रैथाकेँ  
सुशील बूँस गेल, झुदा जिनगीमे एहिना सोग-पीड़।  
अरै-जाग डैक। छोटसँ-छोट पीड़। होय आकि  
पैघसँ-पैघ होय झुदा समेक सँग तँ लोक समबिये  
जागत छि। जगसँ धीरे-धीरे कमेत-कमेत मेष्टा  
जागत छि। जहिना चलोने वास्ता चाही, से तँ  
नीक कि रैजाए छिये। समाज तँ ओहन समुद्र छी  
जगमे करोड़।-अबरो जीर-जन्तु स्रष्टा भे  
जीरन-यापन करैत बहै, भवहि एक-दोसबाक राँठे  
घेरैत बहै छै, पकड़ि-पकड़ि खेरो करै छै  
झुदा, तैयो तँ बहरै करै। नीक कि अथवा, मनुख  
मनुखे रीच बहैत छि। माँक पीड़।केँ सुशील



भाँपि गेल । मन-मन सोचलक जे एक तँ रैचाबीकेँ  
जिनगी भबिक सगी छुट्टि बहन छन्हि तथपब जँ  
हमछँ ओहने रात कहँनि तँ आरो मनमे धक्का  
लगतनि । छेपब-छेप लगने आरो अधिक रेंदनाक  
खनभर होग छै । झुदा जहिना कड़ू लगने लोक  
पानि पीरँ कड़ू कम करैए तहिना जे दर्द मेथरैक  
उपाए कवरँ तँ दर्द आगू नै रँढा या तँ ठमकर  
बहतनि रा कमतनि । समगम होगत सुशील माथकेँ  
उत्तर देलक-

“माए, कौथा तँ केहेन सुलब राजल । करँकराएन  
कहाँ ? ”

सुशीलक रात सुनि कामिनी रँजलीह-

“आन दिन केहेन सुलब भिनसुबका रौली निकालै छलै  
आग केहेन सरँसरँएन रौल निकाललक । ”

माथक छदक रेंदनाकेँ सुशील भाँपि लेलक । ओना  
मनुष्यक छदक थाह नै छैक । एक दिस कगयाक  
हाहा जकाँ रिन हलोक उड़ैए तँ दोसब दिस जूथान  
पति, कमागरँला जूथान रैथोक मृत्यु, सेहो तँ सहरँ  
करैए । रँष्ट छँल रा कँल होड आकि छोटसँ



नमहब खापि होड, लोककेँ चलैले तँ राँष्ट्र चाहै  
करी । एकठाम रैसनासँ तँ जिनगी नहिये चलै छै ।  
कोनो ने कोनो उपाय तँ करै पड़ै छैक । कतौ  
लोक कुदि कइ खापि पाव करैत छि तँ कतौ  
रँगलक माँष्ट्र काँष्ट्र रा छीनि कइ ओकवा पहेँष्ट्र चलैत  
छि । कतौ एहनो होग छै जे नमहब ईष्टान रा  
कष्टान बह छै तँ ओकवा छोड़ा दोसब राँष्ट्र रना  
नगए । मागक पीड़ारैँ कमेत ने देखि स्त्रीनक  
मनमे उठन । एक-एक टैपासँ सेहो राँष्ट्रक खापि  
भवन जागत छि आ खापिक हिसारसँ चैकान काँष्ट्र  
सेहो भवन जा सकैत छि ।

स्त्रीन राजन-

“माए, हमरा तँ कौआक रौनमे सकन बुनि पड़न ।  
जहिना ककरो कोनो रसुत हरेनासँ दुख होग छै  
तहिना ने भेटिनिहाबकेँ खुशियो होग छै । रीचक  
रसुत तँ एकेँठा बह छै । एक्क राँत रा रसुत एकक  
नेन नीक छि तँ दोसबाक नेन अपनो भइ जागत  
छि । जीवन बस्सक पतियो होगत छि आ रैष्ट्र  
होगत छि । झुदा एक काज बहिनो दुनूक करैक  
रिषिमे किछ-ने-किछ अन्तब तँ भगये जागत



अडि । रएह अन्तव तँ एक-दोसबाक रीच अन्तरो  
पैदा करैत अडि । ”

सुशीलक रिचाव कामिनीक रिचावक सोन्या-सोनी ठाढ़  
भइ गेल । कामिनीक रिचाव ठमकननि । एकाएक ठाढ़  
भेने जहिना शिबीबमे नोक अरैत डेक तहिना  
कामिनीकेँ एननि । मनमे नोक नगिते डोरननि ।  
डोरिते नजबि एक दिस पतिपव तँ दोसव दिस  
पुत्रपव रिभाजित हुअ नगननि । जग दुवढायामे  
अथन धबि बहनौं ओ तँ दुई बहन अडि । मन निवाशि  
हुअ नगननि, झुदा नगने आगुमे पुत्र देखि आशि  
जगननि । पुत्रा तँ पतिये जकाँ प्रहरी होगत  
अडि । निवाशिक मचकीमे आशिक आशि नगननि ।  
द्वदय सिंहबननि । सिंहबिते पुत्रक प्रति प्रेम  
जगननि । ओ प्रेम नै जे प्रेम मागक आशिये  
पुत्रकेँ होगत । रनकि ओ प्रेम जग आशिये पुत्रक  
आशिये माए जरीत छथि । जहिना जतसँ जतकण  
आ ओससँ ओसकण रनि पुनः जत रा ओसक सृजन  
करैत अडि, तहिना । निवाशि मनमे खुशीक संचाव  
भेननि । संचाव होगते थिलैत करी जकाँ मन



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

थिनरनि । जहिना थापड़ा मे मकै रा धानक नारौ  
एक-दुगये फुट्टि-फुट्टि बग रँदनेत तहिना मनक बग  
रँदन ए नगरनि । केना लोक कहै जे कोनो रीखाक  
नेन अन्नकुने रातारवण भेटेनापव अरब होग छै ।  
अरबक नेन तँ रहै रातारवण अन्नकुन भै जागत  
अछि जग मुनक ओ रीखा आ रीखाक गाछ होगत  
अछि । जँ से नै तँ एक दिस अगम पानिरना  
समूहमे रीखा अरबि पनिगाछक जन्म दैत अछि तँ  
दोसब माँ-पानि रीच सेहो दैत अछि । ततरे  
किछ ? दोखवा रौन ओ आ चखान भेल पाथरामे तँ  
कोनो-ने-कोनो गाछक रीखा तँ अरबिते अछि ।  
जखन दुनियाँक सभठाम शक्ति मौजूद अछि तखन  
मिथिलाक भूमि किछ शक्तिहीन भै जाएत । जे  
रीत भबिक पैठक बच्चा नै कह सकैत अछि । जे  
धवती बिखाबीकेँ भिक्षु रँना सकैए, भोगीकेँ जोगी  
रँना सकैए, ओ जोगीकेँ किछ ने भोगी आ  
भिक्षुकेँ बिखाबी रँना सकैए । एक नर शक्तिक  
उदय कामिनीक मनमे जमि चुकल छनि । साँसे  
धानक नारौ जकाँ मन दु हाँक भै गेल छनि ।  
जहिना थापड़ा मे एक-हाँक, दु-हाँक, तीन-हाँक  
होगत नारौ थापड़ा सँ उड़ै चाहैत अछि, उड़ै  
करैत अछि तहिना कामिनीक रिचा उड़नि । मृदा





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

झूठक रौर स्रथा गेरनि । कठक तवास रैठए  
नगरनि । झुदा पति-पुत्रक रीच चलेत धावमे  
अपनाके पारि कामिनीक हृदय छुटैपठैनि । सुशीलक  
आँखिमे आँखि गाड़ैत रैजलीह-

“रौंड सुशील, अहाँक पिता आ अपन पतिक तँ अंतिम  
दिनक क्षण क्षणकि बहर अछि । चलि कइ आग दुनु  
माए-रैठै भैठै कइ लिखनु ? ”

माएक रौत सुनि सुशीलक मन ठमकर । ककरो मनमे  
हुनक रक्षा होगत अछि तँ ककरो पानि-पाथर रैनर  
ओना-पाथर रैबसै । झुदा जहिना मबरौ दुनु करै  
तँ जरीओ तँ कबिते अछि । भैठै कबए चागले माए  
कहै छथि झुदा कि ए उचित हएत ? हम सब जेरे  
कबर तँ तँ कि हुनका भैठैनि ? आ हमरे सबके  
भैठैत ? अस्ताचल गामी सूर्यक नाभ तँ ओकरे  
भैठैत छै जे उदीयमान अछि । उदीयमान नै अछि  
ओकरा ने तँ जेहने दिन तेहने राति, तখন  
अस्ताचलक महत्रे की ? हुनका -पिता- किछ नै  
भैठैनि, भैठैनि रएह जे अपना ने काँसीपव  
चढ़ा बहना अछि आ परिवारक ने । जँ परिवारक  
ने तँ कि अखने काजपव परिवार चलि सकैए आ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

नीक काजपव नै चलि सकैए । जूँ चलि सकैए तँ ओ  
थुद नीक राँष्ट्र छोड़ि अपन राँष्ट्रपव चलि अंतिम  
दर्शन देखा बहना छि । अंतिम दर्शन की ? यएह  
ने जे धवतीपव कनेत एनौँ हँसत जाएँ आकि  
जहिना कनेत एनौँ तहिना कनेत जाएँ, तँ कि  
एहेन जिनगीकेँ सुभव जिनगी मानरै ? कथमपि  
नै ? जखने घबसँ डेग उठाएँ तखनेसँ लोक कहरौं  
कबत आ थुकरौं कबत जे थुनिया-अधवमीक रँह-  
रैँष्ट्रकेँ देखियो ? निबनज जकाँ केहेन धमोड़  
दैत जा बहन छि । मागक प्रश्नक उत्तर दैत  
सुशील राजन-

“माए, कोन झूठ देखए आ देखरँए जाएँ । सोन  
पड़नापव पिता यएह ने कहता जे अही सभने जा  
बहन छी ? झूदा अपना सभ कि पढ़रँनि ? ”

सुशीलक रिचाव कामिनीक मनमे अतिभारकक रूपमे  
जगलनि । जहिना सगयो हाथक वस्ती रिन सहाबाक  
धवतीसँ नै उठि सकैत छि तहिना ने नाबियो  
छि । डाढ़मे चेष्ट मारि ने रिधातो रिषिक बचना  
केलनि । रैँष्ट्रक सहाबा देखि कामिनीक मनमे अगिला  
जिनगीक आस जगले बहनि । रिहल भ२ रँजनीह-



“रैठै, रैठै रैनि जै धवतीपव आरी तै रैठै कहरैत  
चनी । आरै तै तौही ने सभ किछु भेलह । रैपर्य  
भेने एक आरुषी मात्र नगत । झुदा आरो जिनगी  
तै संग मिनि चनरै कवरैह कि ने, तौहव जे रिचाव  
हेतह यएह ने हमरो रिचाव हएत । कहना भेलह  
तै तू प्रकष-पात भेलह ? हम कतरौ हएरै तै  
घरे भवि हएरै । ”

मागक रात सुनि सुशीलक मन पसीज गेल । अपन  
दायित्वक भान भेलै । झुदा नगले मन झुबडि  
गेलै । एक दिस धवती सदृश निश्चल माए तै दोसव  
दिस हकमी अपवाधी, धवतीक पापायो पिता देखए  
नगल । पितक प्रति मनक उष्मा तेज भइ गेलै ।  
राजनि-

“माए, परिवारक रैडका रौन उतरैक दिन..... । ”

सुशीलक रौन रैन भइ गेलै । रिसमित अरस्थामे  
सुशीलकें देखि कामिनी राजनि-

“सोग नै कबह । जग दिनक जे भरितर्य छलै ओ  
भेलै । जहिना जवन-मवन धवती आदिक रैन पारि  
सिर्फ जीरिते नै सृजक सेहो रैन जागत छलै ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

तोँ तँ सहजे प्रकथ छिथि । आन के केकवा कहत  
आ केकव के सुनत । झुदा जहिना तोहब पिता  
तहिना तँ हमरो पति छथिये । तँ अन्तिम  
घड़ि मे श्रद्धापूर्वक स्मरण कइ रिसबि जाह । चरह  
अंगनक ओसावपव रैस चाहो रैना पीर आ गपो-सप  
कवर । दुनियाँ किछ कहत, झुदा तोहब झूठ देखि  
एतेन खुशी भइ बहल छल जे जिनगीमे कहियो नै  
भेल छल । ”

मागक रात सुनि सुशीलक मन ओहिना रुझल । उठल  
जहिना आरेशी झूठमे दुबलाखा नै छै झुदा रूढ़  
असानो तँ नहिये छल ।

रैष्ठक आस भवर रात सुनि कामिनीक हृदय पसीज  
गेलनि । रैजरीह-

“रौखा, आर तू रौखा नै रैष्ठ भेलह । रौपक काज  
कइ देखि परेथि दुनियाँक संग चलैक एक सिपाही  
भेलह । परिवार-समाज कर्मभूमि भेलह । नै अन्का  
पढ़ने आनकेँ ज्ञान होगत आ नै अन्कव ज्ञान  
अन्का जे सरतवि उचिते हेत । तँ अपन समए,



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पबिस्तिथिके अकैत पबिरावके आगु झूहे समारैक त  
भाव माथपव आरिसे गेल छह । केहेन मनुख रनि  
धवतीक धाव केनौ, यएह ने जिनगीक पबीछा छी । ”

माए-रैठाक रीच जिनगी पबिरावक गप-सपक रीच  
कामिनीक मन कथनो पतिसँ हठियो जागत झुदा  
नगले पुनः आरि मनके पकड़ि लेत । जखन मनसँ  
हठैत तखन अपनो हाथ-पएव निहावि-निहावि देखथि  
आ सुशीलोकै निहावि-निहावि देखथि । मनमे उठननि  
पाथि तँ ठिँकुरियोकै होग छै, अकाममे उड़रौ  
करैए झुदा तँ ओ छिड़ तँ ले कहागत । छिड़  
लेन तँ पाथिमे दम चाही । से कहाँ ठिँकुरीमे होग  
छै । कनियो किछु होग छै कि पाथि छुँछि जाग  
छै । जगसँ अकाम उड़रै रैन भऽ जाग छै ।  
तहिना तँ अखन अपनो पबिराव भऽ गेल अछि ।  
हम उमरदाव छी तँ घबसँ रहब किछु कबरै ने केनौ  
आ सुशील तँ सहजे कोनो भाव बुझरै ने केनक ।  
ले रहबागक कावणो भेल जे अपनाके घरक  
सीमामे बखलौ । जे उचितो भेल आ अन्वचितो  
भेल । अछुगिनी होगक नाते जिनगीक सब वृत्तिसँ  
पबिचित हेरैक चाहि छल से ले भेल । जँ से भेल



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

बैत त जेकर नीक-अधरा बृत्तिक रिचाव करितौ।

झुदा, अपसोटो केने त नहिसे किछु रहत।

राजनि-

“रैछै, जौ ई धवतीपर रैछै रनि आरौ त किछु क२  
देखारौ। जौ से ने त रैछैक महत्त की?”

मागक रात सुनि सुशीलक मन नर करशेन दुस्सा जकाँ  
नर कपमे पनगत। मागक आँखिमे आँखि गाढ़ा  
राजनि-

“माए, दुनियाँमे सब अपन-अपन भाग-तकदीब न२  
जिनगी रैनरैत अछि। जेहेन जेकर जिनगी  
जोरैक राँठ बहै छै तेहेन से भाव उठा चलैत  
अछि।”

सुशीलक रात सुनि कामिनी रिद्धत होगत रँजनीह-

“रैछै, जहिना एक रैछै रैनन-रैनाएन परिवार-  
खनदानकेँ नाश क२ दैत अछि तहिना एक रैछै  
रैनन-रैनाएन परिवारकेँ उठा ठाढ़। क२ दैत  
अछि।”



जहिना कल्पवृक्षक निच्छ रैसिनिहाव रौड़ १गत बहए  
तहिना हाँसीपव चट्टेत रैनदेरक परिवारक मन  
रौड़ १ बहन छट्टि । असममान जागकार हृदयक पाछु  
कठियावीरना 'बाम-नाम सत् है, सरैको यही गत  
है ।', कहैत चलैत हृदा घुमतियो कार जखन कि  
हृदा नै बहैत, रहै कहैत जे 'बाम नाम सत् है,  
सरैको यही गत है ।' भवहि मृत्युक आंगन आरि  
लोह-पाथर, आगि छुरि रिसवि जागत रा छोड़ा  
दैत । जगठाम रैछासँ सियान पवि मंत्र जपैत  
तगठाम एहेन जिनगीक दशा किअक ? जहिना वस्त्रा  
चलैत रैतह कখনो वस्त्रासँ हटैत तँ कখনो सटैत  
ननकारो भवैत आ कখনो असुखि भवै रौको रैन  
जागत तहिना माए-रैष्ठक अर्थात् सुशील-कामिनीक मन  
पिता-पतिक हाँसीक किछ समए पूर्ण प्रवरा-पद्धरा  
जकाँ वस्त्रा-कस्मी करैत ।

कामिनी- “रैष्ठ, तीन गोरैक परिवारमे एकक अंत  
भवै बहन छट्टि तैयो तँ दु गोरै रैचलौ । तैहव  
रिखैह होगते हवै तीन गोरै भग्ये जाएँ ।”

मागक रात सुनि सुशील राजन-



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

“एहिना परिवार कम-रैसी होगत एलैए आ होगत  
चलते । तगले कहु माथ धुनरै । तखन तँ एकठा  
रात रूम पड़त जे आनकेँ केकब परिवारक भाव  
उठरैए, अपन परिवारक भाव तँ अपने उठरैए  
पड़त । ”

कामिनी- “है, ३ तँ रैस रैजलह । ”

स्त्री- “दुखे कि सुखे परिवारक रौम तँ  
परिवारक लोककेँ उठरैए पड़ते । ”

स्त्रीक रात स्त्री कामिनीक मन सहमि गेलनि । रैष्टा  
सहजहि अनाड़ी ये अछि, अपने कहियो बारे ने  
रूमजौ । तखन..... ?

रैकाव रैल भऽ गेलनि । जहिना भुमकमक समए  
धवतीक सभ किछु डोरए नगैत तहिना कामिनीक  
भीतब-रौह डोरए नगेलनि ।

पावक रैहत पानिमे जहिना पएव असथिरो कऽ  
ठपैमे खबड १गत तहिना कामिनीकेँ हूअ





वगननि । सुशीलोक मन रिचनित होगत म्हादा मनके  
थीव करैत राजन-

“माए, प्रश्न तँ छुट्टिये गेल अछि । उतब कहाँ  
देनैह ।”

सुशीलक प्रश्न मन पाड़ा कामिनी रजनीह-

“अछुट्टिनी रनि जग प्रकथक संग पकड़नौ हुनका  
चीन्हि नै सकनिथनि । आग बुनै दब् जे प्रकथक  
भीतब सेहो, प्रकथ होग छै आ नाबीक भीतब  
सेहो नाबी होग छै । जू से बुनने बहिनौ तँ  
एतेक दूरी नै रनि परैत । ओना परिवारक भीतब  
अपन भाव निमहिमे कहियो कोतारी नै केनौ  
म्हादा.... । आरँ उपाई कि अछि ?”

रजैत-रजैत कामिनी ठमकि गेलीह । जहिना नदी-  
नाराक पानिक रँग आगुमे रान्ह पारि ककि जागत  
तहिना कामिनीकेँ भेलनि । सहत रेंधन माछ जकाँ  
छुटपछुट वगलीह । छुटपछुटगत मनमे आरँ वगननि,  
एक दिस तत्ररेता तानिक चिन्तन-रिरेचनमे वगन  
बैत अछि तँ दोसब दिस रयक्ति-रयक्तिक रीच  
सेहो होइ वगन अछि । सब सबसँ आगु रँदए



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

चाहति छि । जगसँ सँगे चरै छुटै जागत छि ।  
समाज रिखाति भऽ जागत छि । श्रमिक अश्रमिकक  
राँच दिशै-दिशान्तबक अंतब रैन जागत छि ।

दुनु माए-रैँषा गमसम भेल एक-दोसबाक झूँह  
देखैत । गममी तोड़ि अशीत राजन-

“माए, तोहब की अच्छा छु ? ”

रैँषाक राँत अनि कामिनीक मन शान्त भऽ गेलनि ।  
पतिक हाँसी मनसँ छुटै गेलनि । मन पाड़ि राजै  
नगरीह-

“रैँषा, रहूँत दुनियाँ देखलौं । नाना-नानी, दादा-दादी,  
बाप-माए, मामा-मामी, केहु कहैह । पाछु उनै  
तकै छी तँ सब किछु देखै छी झूँदा आगु तकै छी  
तँ तोबा छोड़ि किछु नै देखै छी । जहिना नमहब  
गाछु असि बस्ता बोकि दगए तहिना आगु बुझि  
पड़ैए । ”

मागक राँत अनि अशीत राजन-



“माए, तौहब जे अछ्छा छोड, ओकबा जहँधबि भ२  
सकत पुबरैक कोशिशि कबरँ । जे धवती छोडा  
चलि गेल, ओ तँ सहजे चलि गेल । ओकबा संग किछ  
थोडरै जेतग । झुदा जे अछि ओकब तँ आशी  
अछिये । ”

आशी भवन सुशीलक रिचाबमे आस नगरैत माए  
रँजनीह-

“दुनियाँक खेत छिउँ जे एकपब सए ठाढ़ अछि आ  
कখনो सए सए दिसि छिड़ि आएन बहए । तँए सब  
किछ रिसबि जाह । रीतनाहा कान्हि मन बाखह आ  
अगिला कान्हि नैन हाथ-पएव उठारैह । ”



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



शिर कृपाव सा 'ष्टव्व'

### अन्धधन्या अकासमे सामाजिक रिमर्श

“अन्धधन्या अकास” आधुनिक मैथिलीक चर्चित गद्यकाव  
श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पहिल पद्य संग्रह अछि ।  
जगदीशजी सन् २००८सँ पूर्ण मैथिली साहित्यक क्षेत्र  
अनछिन्त नाँउ छलन्ह, झुदा गत तीन-चारि रँबखक  
भीतब हिनक विरिध रिमर्क उपन्यास, कथा, नाटक,  
एकांकी, रॉन गद्य साहित्य आदिमँ मैथिली साहित्यकेँ  
उतब आधुनिक हागमे प्रवेशक अरसबि भेट गेलनि ।



मूरतः कथाकाव आ उपन्यासकाव जगदीश प्रसाद  
मण्डन कोनो चन्दा या मन प्राचीनता ओ नरीनताक  
सन्धिक करि नै आ ने हिनक बचनामे पबम्पवारादी  
प्रातिक कतह दर्शन होगछ । भुरनेश्वर सिंह भुरन  
जकाँ ने जगदीश नरीन प्रगीत कार्यक रयाख्याता  
छथि आ ने आवसी प्रसाद सिंह जकाँ आशु करि ।

१३. करिताक संग्रह “गर्दधनुषी अकास”मे जे आ  
रैशिष्ठता प्रमापित कएलनि ओ अछि सम्पूर्ण समाजक  
नेन समन्वयरादी दृष्टिकोणक दार्शनिक खरलोकन आ  
अर्थनीतिक सम्यक रिल्लेषण । अनटोकेमे करिता  
सरहक कएँ हिनक रिवाठ सबन जीरन दर्शन प्रदर्शित  
होगत अछि ।

“मणि” रिषधर साँपकेँ सेहो मनोबम रँना दैत जकब  
लोभमे सपेवा सरहक अँत भँ जगछ । ओ मणि  
तँ रैत्रानिक दृष्टिकोणसँ कार्पनिक थिक, झुदा मणि  
करितामे करि अपन मनक मनोभारकेँ मट्टा-मट्टा  
मणिक रूप रेखाक सँदेशे दैत छथि । भारराचक  
संज्ञा थिक-मणि झुदा जाति आ रयक्तिक बचनक  
नेन भारक आरशकता प्रासांगिक होगछ । जखन



१०६ स अंक १५ मङ्ग २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

अर्न्तमनमे दिव्य ज्योति जागत तँ तन अरशिय  
प्रज्जरित हएत । नस्फमी तखने गुतीह जखन  
कर्मपथ उज्जरन हएत । कर्मपथकेँ प्रकाशित कबरौक  
लेन स्रस्त्र मोनक आरशियकता होगत छैक ।  
पहिने ३ अरधावना छन जे स्रस्त्र शिबीवमे स्रस्त्र  
मनक निरास होगत छैक, झुदा आधुनिक रैत्रानिक  
दृष्टिकोणे ३ मिथ्या प्रमाणित भऽ बहलैक । रयस्त  
जीवन शिरीमे मोन अस्थिब भऽ गेल छैक । रिन  
कर्मक अर्थिक प्राप्तिक भ्रमसाँ मनमे रिचनन  
स्राभारिक जगसाँ मोन अस्त्रस्त्र । जखन मोन  
अस्त्रस्त्र तँ शिबीवक अस्त्रस्त्र हएँ कोनो अजगृत  
नै । ‘चिन्ह रिन गुमि भावी’ रैत्रानिक दृष्टिकोणाँ  
अस्त्रवशिः सत्य मानन जाए । सोडियम कार्बोनेट  
धोरिया सोडब थिक आ सोडियम रागकार्बोनेट  
पेठक अम्लीयताकेँ दुब करैत अछि । मात्र ‘राग’  
शिरुद हठनासाँ जौ उलठा सेरन हएत तँ जीवन राग-  
राग भऽ सकैत अछि ।

झुदा सामाजिक जीवनमे धोरियो सोडब अनिरार्य  
किएक तँ मात्र पेठक अम्लीयता दुब कएनासाँ शिबीवक  
मोगत नै धोखर जा सकैछ । तँए जीवनमे सरहक



नेन समाहासाव स्थान देन जाए । श्रेष्ठ जीवन  
मानर कहै छै मानरता उद्देश्य जकर ई पातिस  
वचनात्मक समन्यरादी न्याय दर्शन प्रदर्शित होगत  
छैक । समाजक आगाँ पातिस लोक जखन कात  
लागल रक्खाकै मर्माँ हत करैत छि, तखन कातक  
लोक सेहो उग्रता प्रदर्शित करैत छि । ई  
प्रकारक अदवा-रैदवाक भार जगदीश जीक ई  
करितामे नै भेटैत । ए तँ सकारात्मक सोचक  
आशीरादी दार्शनिक जकाँ अपन करिताक गति श्री  
करैत छथि-

मनुष्यक भेद रिभेद

मेठैकै छी धर्म ओकर

संभरत: ज्ञानक रवद पुत सभकै आदर्शरादी रैनराक  
संदेश देन छि । ओना अर्कबाब मिनएराक क्रममे  
एकठाम चूक गेल छथि

जखने मन मणि रैनत छिठकत ज्योति धवतीपव

अपने रौष्ट अपने देखै हँसैत चरै पृथ्वीपव



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

ईश्याम पृथ्वी पबक स्थानपब 'पवतीपब' जौं लिखन  
बहितएँ उँ शिर्द सार्मजस्य भऽ सकैत छन । ओना  
करिक दृष्टिकोण भऽ सकैत छैक जे किछु आव  
होन्हि ।

गंभीर आशु कारयक मान्यता समाप्त होगत मैथिली  
साहित्यमे रिचाब मुनक पद्य रिवने भेटैत छि ।  
जीवन आ आध्यात्मिक संरंध चरन्त समाजक रीच  
देखैमे आरि बहन छैक । सब दिशि भागमभाग  
सोचरौक नेन हूबसत नै । मैथिली साहित्यमे  
छायारदक कार निरपिण उँ नै कएन गेल छि,  
झुदा अनछोकेमे किछु साहित्यकाब ई कार्य रिषापब  
समए-समैपब बचना कऽ दैत छथि । 'चर रे जीवन'  
करिता आध्यात्मिक दर्शनसँ कर्मशील जीवनक संधि  
कवरौमे पूर्ति: सफल मानल जा सकैछ । महाकवि  
आवसीक कहँ छनन्हि जे सब लोकमे आशुत्र  
होगत छैक झुदा लेखनीसँ अभिरयकत कवरौक नेन  
अन्तमन आ आत्मिक मितन जिनकामे लुप्त रह  
'आशु करि' मानल जएताह । जगदीश उँ आशुकरि नै  
छथि, झुदा 'चर रे जीवन' हिनक श्कणिक अन्तमन आ





आत्मीय मितनक पक्शामे आशु करिता अरुण्य भ२  
गेन । जीरनमे गति सराधिक उपयोगी आ सम्प्रभु-  
सरशक्ति मान तत्र थिक । जग रसुनधवाक माथपव  
हमव असुतित् अछि ओ कथनो ने ककेत छथि ।  
ग्रह-नक्षत्र सब सदिखन गतिमान, अंतिम कार धरि  
जीरन गतिमान, ऋगनापव प्राण गतिमान होगत  
अदृश्य चक्रमे प्रवेशि क२ जागत अछि ।

“यात्रीकेँ आवाम कहाँ छै

यात्रा पथ रिश्राम कहाँ छै ।”

जे अभागन छथि ओ सुतने बहथि ऋदा हुनको  
शरीरमे स्थिति, जन, पारक, समीर, कषिबक संग सब  
अंग मोरि कपसँ गतिमान बहत अछि । सूर्य-  
तरंगन सेहो चलै छै रैत्रानिक मान्यतासँ सरथा  
अनुचित मानन जागत अछि । सूर्य ने तँ उगैत  
अछि आ ने डुमैत अछि । तँ करिक एक पातकेँ  
मात्र उत्साह रर्षनक नेन करितरक किछ मंद रात  
मानन जाए । रास्तरिक कपसँ आ असत्य मात्र  
करितेमे स्क्रम्य जौ कथा बहितए तँ अप्रासंगिक  
मानन जा सकैत छन ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुबनी

जेना जगदीश कथामे शिर्द समजन क२ जेत छथि  
उना करितामे कतह-कतह गुनवा जागत छथिन्ह ।

“समए सर्ग चर, भूत सर्ग चर

गति सर्ग चर मति सर्ग चर ।”

सभठाम सर्ग उदेश्य आ कथोपकथनक जेन सरथा  
उचित, ऊदा स्रवात्मक पद्यमे कथोपकथनक सर्ग-  
सर्ग अर्काव आ छंदक सम्मिलन सेहो आरक्षक  
होगत छि । आ करिता कोनो अतुकांत करिता नै  
तँ छंदमे आरक्ष कबरक जेन करिके रीशेष पियान  
देरक छनि । जगदीशक शिर्द-कोषमे मैथिलीक  
थाँशी शिर्द सभ भवत छनि तँ हिनकासँ आव आशि  
कएन जा सकैत छि ।

रौन मनोरिज्ञानक दृष्टिसँ आ पद्य उपहृत मानन  
जाए । जे रौन आ हारारस्थक सधि भ२ सकैत  
छि किअक तँ ई अरपिमे जीरनक गति-चक्र  
रूमर रीशेष अनिराय होगछ । ईसँ भाषा-साहित्य  
रिकास सेहो होगत छैक । आवसी प्रसाद सिंह,  
सोहन नार द्विरेदी, सुमित्रा नंदन पंत आ हविरशि  
बाय रचन सन हिन्दी साहित्यक “आशुकरि” लोकनिक



ई प्रकारक पद्य प्रारंभिक आ माध्यमिक शिक्षामे  
रिशेष लोकप्रियता प्राप्त कएने छल ।

“दृष्टि नै कहियो स्व-ताव

दृष्टि नै कहियो जिनगी रैहार ।”

जखने जीवनमे गति मति आ नियतिक विरेशी  
अलग-अलग भऽ जागत छल तँ जीवन उदासीन आ  
परिणाम कष्टदायी, तँ करिक ई उक्तिरें रिचारक  
संग-संग शिक्षा मुक्तक सेहो मानल जाए । गति रिन  
पहिले जिनगी अक्षय हेब अकर्मण्यता आ परिणाम  
जिनगी रैहार, अकर्मण्यता आ धारपव दृष्टिकोणरें  
प्रमाणित कएल गेल जे सरथा उपयुक्त नैहैत  
छल ।

जीवन जीराक कलासँ सँध कार्यामे प्रायः करि  
लोकनि सुर्यरें नायक रैना कऽ करिता निथैत  
छल । हिन्दी साहित्यमे जानकी रत्नभ शिखरी  
आध्यात्म दर्शनक समीप- “मेरे पथ में न बिचल  
बहा” सँ कएलनि तँ मैथिली साहित्यमे कालीकान्त ना



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

रूच- “मृगी जकाँ हम कापि बहर छी, माँखुबसँ तन  
माँपि बहर छी” कएँ समाजक बग्न दशोसँ रँचि क२  
जीरँ छीत छथि । झुदा जगदीशे ई समाजक  
मैरकँ साह कबरौक नैर उद्विग्न छथि । ‘धोरँ घाँ’  
करिता कोनो मैर रसुक मुन नै, रबन समाजक  
धत-धतयपव लागल रुचककँ साह क२ क२ ई सँ  
रचरौक प्रेरणा थिक-

“धोगरँ घाँ ओ घाँ छी,

पाप धूआ पन रँनैत बहत

खजान-जान बाति दिन

बगडाँ सान चढ़रँत बहत”

मैथिली साहित्यमे बीतिक विभाषीय नाटक, प्रीतिक  
महाकार्य अर्थहीन रैवागी कार्य शोस्त्र कथनो  
रिनोदी, कथनो चरन्त करिता आ कथनो नाम-गाम  
आ ठामक पद्यसँ भवन पद्य संग्रहक प्रधानता अछि  
किएक तँ भनमानुस जे लिखत रएह कोसक पाखव  
मानल जाएत । तँए अन्तरक ई साहित्यमे



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नीतिशास्त्रसँ सन्निहित पद्याभारकेँ 'धोरै घाँ' सन  
करिता पुवा करैत छि-

उना-पका बातिकेँ

साने सान सूर्ज स्रडकेँ

स्रथ आरामक पहव छी न

हँसि-हँसि बाति दिन न्नाडै-ए ।

कोनो आरक्षक नै जे जाज्वरन्मान नम्बरक कर्मसँ  
निकसैत प्रभारक सभैषा पविषाम उभमे रहैत । सूर्य  
ज्योतिक प्रतीक छथि, झुदा कथनो उँ हिनको किवण  
जीर-अजीरकेँ उना-पका दैत छि तत्पश्चात्  
अन्हाव । हिनक प्रतिभा आ कर्मपब करिकेँ कोनो  
संदेह नै उँ भवमानसोक अथनाह कर्मक विरोध  
कवरौक चाली । ईसँ समाजमे दृष्टिकोणक रिजय  
प्रासंगिक रहैत । वृक्ष मात्र गगनगामी..... एकव एक  
दृष्टि एकठाँ उद्देश्य होखि पर्वच शीव रिचनसँ  
भवन नम्बर बथैत छि । एक प्रनि अकास आ  
दोसव पतार प्रकृतिक बग रौसक गिवह जकाँ  
प्रत्येक दृष्टिपब पठाक्षेप । नाष्टक अकमे एकसँ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

रैसी दृश्य होएँक चाली, झुदा प्रकृति अर्थात् रिपाता  
अपन प्रत्येक अंकके अलग-अलग दृश्यसँ आरंभ कऽ  
रिपिष नाटकीय पविदृश्यक मंचन करैत अछि । ई  
पद्यक प्रत्येक छंदमे रिशेष अर्थ न्यापन अछि जे  
पाठकक मस्तिष्कपव ज्यामितिक दरारें अरुण्य  
रैनाएत-

जहिना डारि करैछन नीची

थोपिते थोपिछा पकड़ैए

निच्छाँ-डुपव ससवि-ससवि

अपन-अपन राँठ पड़ैए

भावतीय संस्क्रुतिक संग ३ दृढगि बहन जे  
पवम्पवारादी दृष्टिकोणक किछ अरुम्भित तत्रसँ  
लोक परेणान तँ छथि झुदा कियो ओकरा समाप्त  
होमए देरैए नै चाहित छथि । 'काँठव प्रथा' ई  
कपेमे सभसँ निश्चित मानल जाए । 'सासु-पुतोहू  
रातमे करि ओना स्पष्ट कपेँ काँठवक पविषाम  
सुरकपक उद्घाषन नै कएने छथि, झुदा पवक रैछीकेँ  
रैछीक कपेमे सुरिकाव कवरँ स्वसंस्कृत समाजक नारी



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नेन असहज होगछ । ए रिडरना जे अपन सतानक  
सर्ग जे सिनेह बह्छ ओ दोसबाक सतान जे आर  
आत्मसात भऽ गेल छथि तिनका नेन असंभर ।  
ओना एकबा स्रार्थ सेहो नै मानल जा सकैछ किअक  
तँ प्रतोहक आरशयकता र्याहूत रैषीसँ रैसी होगत  
छैक । ईमे प्रतिद्वन्द्वताक भार बहैत छि ।  
मनुक्थकै अपन अपिकाव तँ मोन बहैत छि ह्मदा  
कर्तव्यरोधक ज्ञान जिनकामे नै बहत ह्मका  
पाविराबिक शीतिक सपन देखाग सरिता अन्वित आ  
भ्रामक ।

प्रतिद्वन्द्विता ई खेतमे सास्र-प्रतोह दू दोषी ह्मदा  
सास्रक दोष रैसी किअक तँ आनक रैषी अपन घरमे  
अनलाक रौद हास-पविहास सास्रक ह्मथसँ पहिने  
निकलरौक सभारना बहैत छैक-

ओसाव पुरबिया रैस सास्र

पड़न प्रतोहकै देन धाही

अकड़ा कऽ मकड़ा रौजनि

देहक पानि नऽ गेल हाही ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

ककरोपव जौं नुठका हेंकर तँ प्रत्याभवमे पाथव  
अरुण्ये भेठेत, किएक तँ कियो-ककरोसँ कम नै ।  
अपनाह देखोसँ सँस्काव मनुक्खमे पहिने अरैछ तँ  
नरकी कनियाँ कोना छुप बहतीह-

पानिये तँ पसवि देहमे

पीरै गेल सल्लो पाणि

की कवरै, हुरिते कहाँ अछि

कहाँ पड़ल छी जानि... ।

ई प्रकारक आरोप-प्रत्यारोप ग्रामीण समाजमे  
रैबोरैबि देखए मे अरैत अछि । पविषाम पविहासक  
संग-संग अपन दैनन्दिनीमे नागनि प्रतोहू साम्बमे  
रैसनि ननदिकेँ रीचमे सेहो नह अरैत छथि ।

करिक कहँक उद्धर्ष्य छन्हि जे स्रस्र जड़ि सँ  
स्रस्र बृष्क रिकास हएँ प्रासंगिक तँ साम्बकेँ अपन  
मर्यादाक सम्बर्ण बाथि प्रतोहूक संग ओहने रैरैहाव  
कवरैक चाहियनि जेना रैष्टीक संग करैत छथि ।





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

प्रतोहूँ सेहो सासुमे अपन माँक छुँ देखौक  
आरक्षकता छैक ।

प्रयोगात्मक रूपेँ आरै ई प्रकारक अनछेष्टन क्रिया-  
करापक संभारना क्षीण भऽ बहलैक किएक तँ  
पलायनवादी समाजमे सासु-प्रतोहूँ एक संग बहतीह,  
रिबले अरसवि भेटैछ । जगदीशजी गाममे बहि कऽ  
साहित्य साधना कऽ बहन छथि तँ ई प्रकारक घटना  
गाम-घरमे घटित होगत देखानाग करिक लेन  
कोनो अजगृत नै । करिताक रिमूँ आ शिल्पसँ  
रैसी महत्त्वपूर्ण अछि करिक उद्देश्य । एते दृष्टिसँ  
जौं देखल जाए तँ करिता नीक छैक । भाषा  
रिज्ञानक रूपमे अछुत किएक तँ अपन गद्य जकाँ  
एठोम जगदीश पाली, अकड़ा, मकड़ा, हारी, नसिया,  
निचेन सन ब्रुप्त होगत शिर्द सभसँ पछुकेँ राखित  
रूपेँ रौबि करिता श्रेणीय रैना देननि ।

“रौड़ एत रैछेही” शीर्षक करिता ई संग्रहक सभसँ  
नीक रिमूँकेँ केन्द्रित कऽ कऽ लिखल गेल अछि ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जीवन दर्शन आ आप्यात्मक तान्त्रिक रिरेचन अत्यन्त  
रिस्मयकारी छायावादसँ भवन मानन जा सकैछ ।  
‘पवदा’मे ओम्बाएन जिनगी जकाँ रतिमान मनुक्थक  
जीवन भऽ गेल अदि । प्रयोगात्मक कर्पे आर  
कोरबक कनियाँक ओ कप कतए जकब कल्पना करि  
कएने छथि, झुदा गामक समाजमे एखनो कोरबमे  
नुकाएन कनियाँ भेटैत अछि । कोरबक कनियाँ तँ  
मर्यादाक अनुपातनक नेन नुकाएन छथि झुदा कर्म  
पथपव रिचवण करैरना मनुक्थ कष्टि कऽ किएक बहि  
बहन अछि ? जे किछु नै जानि बहन अथि  
अशिक्षित मुक अननुआवसँ सामर्थ्यशील मनुक्थ किएक  
तकराब कऽ बहन छथि ? अपन-अपन कर्मक संग-  
संग माए-रौपक कर्म ओ धर्म सँतानक सफलताक रौष्ट  
उज्ज्वल करैत अछि । ईश्वर धर्मक भार संप्रदाय नै  
अपितु मानवीय मूल्यक सम्यक अनुपातन मानन जाए ।  
रितगित पथपव जौ चवण बाखन जाए तँ रूगध  
रितेनाग स्राभारिक आ जखन रूगध रितेना जाएत तँ  
रौष्ट कलम अरुण्य भऽ जाएत-

रौष्ट रितेना रूगध

रौष्ट रिसवि गेल



## जेम्हरे जे चले

तेम्हरे पहुँचि गेल... ।

कर्मक रीखा जौ सत्र तम ओ बज बस बसस  
लौबन नै जाएत तँ मनोकामना भ्रम रनि अपन  
सिद्धिक आशमे ब्रुपत अरणीय भऽ जाएत ।

कोना बचनकाव जौ सूर्य नायक रनि करिता  
निथैत छथि तँ कोना अचबज नै, झुदा रैसीठाम  
करि सूर्यकेँ बीति ओ प्रीतिक नायक रना कऽ करिता  
निथनाहै ओ रौरौरि मैथिली साहित्यमे देखएमे  
अरैत अछि । अपन आलोचना कवर सँरहक नेन  
सँभर नै, ओना कतौ-कतौ हास्य बसक करितामे  
करि लोकनि अपन मज्जाक अरणीय उडरैत छथि झुदा  
एना कवर करिताकेँ लोकप्रिय रनाएँ मात्र मानल  
जाए । ‘अपनेपव हँसि छी’ शीर्षक करिता मुनतः  
रत्नमान शिक्षा प्रणालीपव करिक आलोचनात्मक कार्य  
शीर्षमे प्रभाव थिक । सूर्यकेँ नायक रना कऽ टोबिक  
डिग्रीक आधारपव शिक्षा मित्रक नौकरी प्राप्त  
कवरौमे हेब-हेब देखाओल गेल अछि । गाममे बहि  
कऽ रिहावक शैक्षणिक प्रणालीपव कहुँ छिप्पणी  
न्यायोचित । शिसन तँ कतरौ मजगुत मानल जाए



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुबनी

झुदा जखन रैरैसुथे भ्रष्ट, तखन गमानदावीक दारौ  
केनाग भ्रामक सिद्ध होगत डैक । साम्यरादी  
रिचावधावाक अस्फुवशी: सम्पोषक करि कोनो  
बाजनेतिक दल रिशेषपव ठिप्पणी नै केने छथि ।  
अर्थनीति जौं भ्रामक ह्थए तँ ई नेल सम्पूर्ण  
समाजकेँ दोथ देल जख । लोक जखन सूर्य भ्रष्ट  
भइ गेल छथि तँ प्रजातंत्र रा शीसन तंत्रपव दोथ  
देरै अन्वर्चित-

नाथे कपेयामे

दशौ कष्टा जमीन गमेनौ

थर दक्षिना देने रिना

थर भागक भाव उठेलौ.... ।

ओना भावतीय पविदृश्यमे रिहावक राज्य रैरैसुथा  
भरहि स्तवीय मानल जा बहर झुदा शैक्षणिक  
रिहालीमे योग्यतमक उन्नवजीरिकामे धन रैल आ  
रुचकरैल रैसी भावी पड़लैक, ज्ञानक मोजव एथनो  
नै भेटै बहर । पाँच हजावक लोकबीक नेल  
मुन्यरान रसन्धवाकेँ रैचि लोक लौठवी नगा बहर



छथि । एकव दु गोष्ट रूपविशाम- पहिल धरि कार्य  
जे हमवा समाजक बीठ थिक तकव महत्र समाप्त  
भइ बहलैक आ दोसर प्रतिभाक पनायन अरुण्यभारी  
किएक तँ साधनहीन प्रतिभा सम्पन्न रूयकति ई भ्रष्ट  
मचपव कोना आसीन होथि-

रिनु धनक धनिक जहिना

ताम-माम देखैए

देथि-देथि आँथि ककथाए

नाजे आँथि झनै छी

अपने पव हँसै छी..... ।

रिचावमूलक पद्य देशिकारक दशिक एक कर्पे सत्यशि:  
चित्रण करैत छि । चाककातक पविदृश्य हेहव भइ  
गेलैक, ई दशामे सोन राँठ अकन्याकाबी नगनाग  
कोनो अनुचित नै । टोष्टगव तीक्ष्ण रान चना कइ  
भ्रष्ट लोक अपनार्के सत्य सारित कबरामे कोनो  
अर्थे नै हँसैत छि किएक तँ धनक संग गालक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जमाना एक तँ टोबि आ दोसब सीना जोबि । ई कहुँ  
सत्यकेँ साहित्यमे कोना स्वीकार कएल जाए आ तँ  
भरिष्यक गप्प झूदा यात्री आ आवसी जकाँ अपन  
लेखनीक सँग जीरनमे सम्यक साम्यवादी जगदीशक आ  
करिता समाजक लेल दिशो निर्देशि कऽ बहलैक ।  
ओना आ अलग रात जे रत्नमान पविदृश्य त्रासक  
वाज्यकाति जकाँ नै जखन कसो आ रातठेयबक  
आखब-आखबसँ समाजमे काति आरि गेल छल ।

आशिरादी दृष्टिसँ जौ सोचल जाए तँ साहित्य  
समाजक दर्पण अरुण्य प्रतीत रहैत, झूदा प्रत्येक  
पाठक एकब सम्यक् तत्रकेँ जौ अपन जीरनमे  
उताबि लेखि तखने आ सँभल मानल जा सकैछ ।

अमरी:.....

समाजक माने सरलक दृष्टिकोण आ आचार-रिचारक  
सब गेष्ट कप व्यापक अर्थमे मथन कएल जाए ।  
जगदीशजी 'धोर घाँ' करिताक राद 'धोरि घाँ'



करिता सेहो लिखने छथि । ‘दर्शन’ कोनो पोथी  
पढ़ाि नै उपेन्न कएन जा सकैछ, अ तँ जीरनकेँ  
देखरौक अपन दृष्टिकोण होगत छैछि । उदयनाचार्य  
कोनो काशी आ प्रयागमे बहि ‘न्याय कस्माजिनि’ सन  
पोथी नै लिखने बहथि । बाजपुत कालक ‘कवियन’  
हुनक साहित्य सृजनताक गहरव छनि । तँए  
जगदीशसँ ठेम्स नदीक सभ्यताक आधुनिक रिम्रक  
आशि केनाए सर्रथा अन्वित हएत किएक तँ मिथिलाक  
आँटी गाम ‘रैबमा’ हिनक साहित्य साधनाक केन्द्र  
रिन्दू छन्हि । दर्शनक तीन रयस होगत छैछि-  
नीति, श्रृंगार ओ रैवाग्य । सामाजिक जीरनमे  
बहनिहार मनुक्खक नेन तीनुक सम्यक काल ओ भार  
होगत छैक । जीरन क्रममे संतुलन रैनएरौक नेन  
तीनु रयससँ अलग-अलग सत्र बज ओ तमो ग्वा  
छैपकैछ । ‘सात्रिक भार’ करिता सत्र ग्वाकेँ आपाव  
रैना कइ लिखन गेल छैछि । सात्रिक भार  
रिवासतपव आपावित होगत छैक । जाहि ठामक  
भूमि सात्रिक, हरा पानि सात्रिक माने नैसंगिक  
संस्कार सात्रिकतासँ भवन होगछ ओगठाम एकव  
प्रभार अरशियंतारी होगत छैक । तस्म्य, संकल्प आ  
दृष्टा सेहो मनुक्खकेँ सम्यक शीशिरत कर्म दिशि नइ  
जागछ, झुदा ई नेन संस्कार अन्वर्शिकी आदिपव



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

र्यक्तित्तरक रिचाव निर्भव होगछ । स्वभार-कभार  
आदि सगहि चलेत छि मूदा ई लेन दृष्टिकोणकेँ  
जाहि कपसँ देखन जाए रएह कप दृष्टिगोचर  
हएत । करिताक भार दर्शनपर आधारित सबन  
शेर्दमे मूदा रिचाव रौधक लेन गुठ छि तँए एकबा  
रेशी लोकप्रिय ले मानन जाए पर्व साहित्यिक  
विकासक लेन आ जीवन-दर्शनक लेन हाकतिसगत  
करिता थिक ।

दिर्य प्रकष ओ जे सोनह कवासँ परिपूर्ण होथि ।  
'दिर्य शक्ति' शीर्षक पद्य सबन कपेँ पठनाक बाद  
किछ विशेष ले देखबामे अरैछ मूदा जेना करिक  
र्यक्तित्तर अन्तर्मुखी तहिना पद्यमे गुठ बहस्य  
मापन छैक । दिर्य शक्तिसँ पूर्ण होएबाक बाद  
मनुजमे प्रथम ज्योतिक आरवा पनकि जागत  
छि । नीक-अपनाह रिचाव संस्कारसँ उत्पन्न होगत  
छि मूदा गंगा माने परिव्रताक परिचायक संस्कारसँ  
आरंभ जनभावक कोथिमे सरहक लेन समान स्थान ।  
जग भूमिपर रसुदेर रिवाजथि रएह रसुपा..... ।





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नन्द आ रसुदेरक प्रसंग तँ रतमान सामाजिक  
परिदृश्यमे 'उपनास' जकाँ भऽ गेल अछि झुदा करि  
आशिरादी छथि....

पाँचम कला रनि जे रीखा

मनुज मन रिवजेए

डेगे-डेगे डगबि-डगबि

सोतहम कला परैए...

जगदीश जीक जे कार्य सृजनता ओ र्यगनाक  
रिषेयता छन्हि ओ थिक हिनक आशिरादी सकावात्मक  
दृष्टिकोण । अपन पद्यमे कतौ करि सामाजिक  
दर्शासँ निराश नै छथि । कावक अकावकेँ अपन  
पद्यमे देखैत तँ छथि झुदा ओहिसँ उद्विग्न नै ।

'उड़ि आधन चिड़' करितामे रतमान मानरक मनोरुति  
उमति लेखनीसँ करिताक कपेँ उछुत कऽ करि  
परायनरादपर तीक्ष्ण प्रहार कएलनि अछि । ई  
परायनमे मात्र अपन माँसँ परायन नै अपितु  
संस्कार आ मानरीयमूल्यक पड़ गेल सेहो देखाएल



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

गेन अछि । 'चिड़'क उदाहरण मात्र करिक छायावादी  
दृष्टिकोण छन्हि, कटेष्ट तँ संस्थातिक पभावकरै  
मानन जाए । जे चिड़ अपन डीनो-डारबकरै रिसबि  
सुरार्थ आ प्रतिमतक नहबिमे जतऽ घोर भवते  
ओहि बास कबत ओहि चिड़'क मधुव स्वप्न  
समाजकरै कोन काज-

ओहन स्मृति स्मृते की

जे मने मन घुबिआगत बहते

पसबि नै परैत जे कहियो

तरे-तब थिआगत बहते.... ।

करिसँ रैशी समाजक नेन रिडरना जे रैषिसँ भठकन  
रैषैही अपन मूत रैषपव श्रिष्ठा तँ रयक्त करैत  
अछि, झुदा जग पथमे पहिन रैव उदयायन आदिक  
दर्शन होगत अछि ओग पथपव फेब धुवर पथ  
भ्रष्टक नेन असंभर जकाँ नगैत अछि । अपन मूत  
संस्कारक पभावक कवर उचित नै मात्र स्मृतिसँ मूत  
माष्टिमे मातृत्त कोना उपेन रहत । तँ 'परायन'  
कोनो कपेँ उचित नै ।



मिथिलाक माष्टि-पानिसँ बनौत-बनौत हिन्दीक चर्चित  
उपन्यासकाब बनौत नाथ रेणु आंचलिक रैन गेलनि ।  
जौं मैथिलीक गप्प करी तँ कथाकाब तँ कथा  
जगतमे वलित, बाजकमल, धूमकेतु, रुमाव परन आ  
कमला चौधरी सन प्रांजल आंचलिक कथाकाब भेल छथि  
झुदा आंचलिक कार्य जगतमे समग्र सामाजिक  
दैनन्दिनीकरै छुबैत करिमे यात्री (चित्रा) ओ आवसी  
प्रसाद सिंह (सूर्यझंझी)क पश्चात् जगदीश प्रसाद  
मण्डलकरै मानल जअ । 'सान-पाव-पावा' करिता  
कोनो कैचीक शानपव आपावित कार्य बून नहि आ तँ  
मानरीय मुन्य ओ संवेदनाक शानपव आपावित पद्य  
अछि-

जे पावा सिबजअ गर्गा

कमला कोशी ओ महानन्दा

ओ पाव कहिया धवि ठमकि

मानैत बहत हंदा ?



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

गंगा, कमला आ कोसीक किछेबमे रसल गाम सब  
मिथिलाक पबित्रिक भीतब अरैछै ई तबहुक उन्नेथ त  
रहुत बास करितामे भेटैत अछि, हुदा ईठाम  
महानन्दाक चर्च क२ करि प्रविषा रिहाबक स्केत्र  
किशेनगंजसँ आगाँ धरिक लोककेँ आश्रित क२ देनन्हि  
जे अछि मैथिले थिकेँ ? मात्र पद्यमे नयातमकता  
भबरक लेन एना नै कएन गेल । करि मोन भारुक  
होगत छैक, भारमे रहनाए करिक प्रवृत्ति हुदा  
मिथिलाक संस्कारसँ भवन बहनाक रादो आ स्केत्र  
साहित्यमे अपच जकाँ छल, तँए करिक भारनाकेँ  
सम्मान कबरक चाही ।

‘जहाँ न जाए बरि रहौं जाए करि-’ आ राक्य जे  
कियो लिखने होथि हुदा आ सरखा रिचाबमुनक  
अछि । ई संग्रहक किछ पद्य जेना पपीहाक गीत,  
रिखधबक रीथ, नंगबकष्ट घोड़ । आदि पढ़नासँ  
स्पष्टतः बुझना गेल जे डायारादी दृष्टिकोण  
बचनाकाबकेँ छोड़ि सरहक लेन पूर्णतः बुझनामे नै  
अरैत छैक । ‘कोशली’ शीर्षक करितामे करि  
चन्द्रभानु सिंह मैथिलीक सबसतारकेँ स्पष्ट रूपेँ  
पाठक आ श्रोता नग पवसि देने छथि हुदा पपीहा  
गीत शीर्षक पद्य कोनो चिड़-चुन्नीक स्वरपव



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

आधारित सभ्प्रति गीत नै अ तँ सम्पूर्ण दर्शन थिक-  
जीवन-मरणक दर्शन । धवती अकाश, जल-थल कानि-  
अकानि सन सहचा १ रिपरीतार्थक जीवन दर्शन.....

कार्यक रयाख्या रँड कठिन होअछ, तँए गजेन्द्र  
ठाकुर जीक ई मतसँ सहमत छी जे करिता कम  
लोक पढौत छथि । चरन्त गीत-नादकेँ जौ  
छोड़ि देल जाए तँ प्रायः साहित्यिक कार्यमे कतौ  
नै कतौ करि सूर्य जलित बहैत छथि । किछ  
रिश्ते रिमरकेँ स्पर्श कबएँना करिता सभमे सेहो  
ढायारादितक आरव नागर बहैत अछि । ई ओहक  
मध्य रिन्दू दब रिन्दू प्रवेश कबर किनको नै  
दृक्क, तँए करिताक रास्तरिक दृष्टिकोणकेँ करि-  
छोड़ि कियो नै बुझि सकैत छैक ।

“सबस्रती रँदना” कोनो देरोपबाध म्मा मँ नै, आ  
नै पावम्परिक सनातन सभ्प्रतिक अरमरकेँ स्पर्श



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

करैत भक्तिगीत । ई रन्दनामे समाजक अस्तित्व  
दर्शाकेँ समाप्त कबरौक लेल बुद्धि देरीकसँ याचना  
कएल गेल छल । किछु विशेष दिरसकेँ देरौपासनाक  
लेल चयन आ तात्कालिक आस्था कोनो भक्तिक  
श्रद्धा नै, एकबा करि आर्द्रमानने छथि ।  
साम्यवादमे आस्तिकता विशेष पथसँ संरक्षित नै बसैत  
छल । कर्म प्रधान रीतिचरन करिक कोनो करिता  
मात्रमे नै आ अन्तिमात्माक ज्वाब थिक । मात्र एक  
दिन रस भविष्ये बुद्धि आरवहन आ शेष दिरस-  
वातिमे क्रमाश्रय चलेत बहरौमे संस्कारक पलायन  
अवस्थामुखी छल । तँ सबसँतीस प्रतिष्ठा आ  
प्रतिपल सँग बहरौक प्रार्थना कएल गेल छल । कर्म  
आ ज्ञानक सारौवि जौ नै छल तँ सनेहसँ सनेह  
स्पर्श नै कइ सकैछ । जेना महाकवि विद्यापति  
“अपन कबम कर हम उपभोगर तोहि किए तेजह  
पवाने सथि हे मन जनि कबहु मनाने.....” विधि कर्म  
करक मुन्याकिनमे कर्तक कर्तव्यकेँ आपाव रनेने  
छथि । जगदीश सेहो कहैत छथि-

“जे ह्रस्व से ह्रस्व ह्रस्व

तगले किछु छी कहैत



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सभ जागे सभ सूते

एक दिन हेते सरहक अंत....”

एमे याचक भगरती सबसतीसँ किछु रिशेष ले  
मँगैत अछि मात्र सत्कर्मक रौप्य चरक दिशा  
निर्देशक आशि बसेत अछि । जौ एमे ओ छसि  
जाएत तँ भगरानक सर्ग-सर्ग आन करबो दोख ले ।

कामना तँ सभ करैत अछि झुदा ओकवा कर्मक  
पतराबिसँ जौ निरुद्ध आगाँ ले रैठ एत जाए तँ  
प्रतिस्पर्धक हागमे पाछाँ बहरँ प्रार्थना अछि ।  
सरहक आगाँ आ पाछाँक रौप्य स्नान ले, सभ ठाम जीर  
अपन अस्मित्वक बम्कार्य निरुद्ध नागर छथि एमे  
रिजयशी ओकरे भेटैत जेकर चंचल मन कट बहत  
आ भीड़-भाव देखि उज्ज्वल जाएत ले-

“दृष्टि ते नाष्ट धरा”

भीड़-भीड़ रैनैत बहत



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

एक-दुगये भीड़ छैपैमे

भीड़मे भवमति बहैत....”

कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के ठस जकाँ दुग्ध आ नीबमे  
रिभेद कबरौक प्रयोजन किएक तँ हबि-हबी सन  
सहचरी कখনो नावायण कখনो रैग तँ कখনो साँप  
सेहो भ२ सकैत अछि ।

ई प्रकारक कार्य सामान्य रहैत आकर्षक आ सुस्रुद्ध  
नै भ२ सकैछ अछि निष्क्रिय जीवन बेलापव अत्रात  
अनिरार्य । जेना भूमिगत जन पीरौक योग्य होगत  
अछि अछि आसुतजान कठसँ पीअन नै जा सकैछ  
किएक तँ ओ सीबम थिक । एह सीबम नाद आ  
स्नाहमे नाद आ स्नाहमे ि नर्जनीकबणक स्थितिमे  
सोडियम आ क्लोरीन मिठा क२ नस द्वारा सुग्रा भोक्ति  
शरीरमे चष्टाओन जागछ । तँए जगदीशिक करिता  
हास्य आ प्रीतिक मर्चसँ थपवी रैजएरनाक नेन भनहि  
उपयोगी नै होनि अछि अछि अछि अछि अछि अछि  
छैक तँए मृतक समान भ२ बहन समाजक नेन एकवा  
सीबम अरस्था मानन जाए ।





भृत रनि रहुत बास करितामे भैठैत अछि अदा  
“अगहन” करिताक माध्यमसँ करिक भृतक रिरेचन  
अत्यन्त रिगम्भा छन्हि। “समय पाठ तकरव बने,  
केतक सीटो नीब” जकाँ करि अगहन केव आ  
राहनमे किसान जकाँ उताहन नै छथि। जखन धान  
नरानर शीशिसँ धराकेँ स्पर्श करव नरौत अछि, तँ  
किसान मजदूरक धैर्यक रान्ह दुष्टर स्राभारिक। अदा  
करि धैर्य धरौक नैत आगाह करैत छथि-

“तीन दिन, आठ अगहन राकी

पड़फड़ रैसी नै अग्रताड

धीवजसँ सब किछ होग छै

तग रीच घबक काज सबिआड....”

स्राभारिक छैक प्रषि प्रधान देशमे किसान मजदूरक  
जीरिकाक साधन कोनो सब मासक रिशेष ताबिथकेँ  
नौकबिहावा जकाँ धनसँ क२ नै अरैछ। रबथ भरिक  
मेहमति आ पसीनाक गंगा जखन रान्ह तोड़रौक नैत



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

उफान तोड़ि बहर तँ करिक ि नर्देशि जे घबक  
खान काज सभ सविया क२ पहिने खबिहान रँनाएन  
जाए एकठै यथार्थ प्रयोगराद मानन जा सकैछ ।  
बातुक नाच देखरौक जेन दर्शक लोकनि गाम-गाममे  
सपविराव जागत छनाह झुदा ओ छत्रिमतासँ भवन,  
किष्क तँ भोव होगते जखन कलाकावक कप रँदनि  
जागत छै तँ दर्शकक कोन ठेकान ओतए ठका  
गेन । झुदा चौकीपव धम्म धम्म जखन चानक रौन  
पड़ि चष्ठाएन रँहाव भ२ जागछ किसानक नाच  
कर्मकर रँनि कोठीमे भवि जागत छि । ओ चौकी  
सृष्टेज नै ईठाम मान सम्मानक माने आजीरिकाक हन  
आ अर्थक आराहन । एछ कर्ममे लोक सभ पवानी  
हसु न२ क२ खेत दिशि जागत छि झुदा अन्नपूर्णा  
सर्ग अपन घर घुँरैत छि । रँनारँनी नाचमे ठका  
अर्थात् अन्नपूर्णा सर्ग जागत तँ छि झुदा घुँवरौक  
कार खाली हाय अपन आंगन आ रँथान रापस अरैत  
छि ।

मनोबँजन तखने नीक जखन कर्मक गति प्रखर हूँ  
करिक ई शिक्षामे समाजक रास्तरिक कप-रेखा  
दृष्टि पठनपव उभवि क२ समझ आरि गेन । ई  
प्रकावक सँदेशि भृत रँनिक माध्यमसँ मैथिली  
साहित्यमे सँभरतः पहिने नै भेटैत रहत । ग्राम्य



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जीवनक रूति चित्रक निदेशिक रएह भइ सकैत छडि  
जे गामक संस्कार आ रयरस्थार्के आत्मसात कइ  
नेने हउए ।

जीवन तीनू मौनिक गुण सत्र बज ओ तमक  
दार्शनिक खरलोकन मैथिली गद्य साहित्यमे “खरुब  
ककक तर्ग” कएँ प्रा. हरिमोहन ना कएने छथि,  
झुदा गर्भव चिन्तनकेँ हास्यक रिहाडी मे उषिया  
देनासँ एकव प्रसंगिकता ओठाम निष्क्रिय भइ गेल ।  
ई कमीकेँ जगदीशजी “तर्ग” करितामे पूर्ण कइ  
देनि । तर्ग कोनो जल तर्ग नै जीवन  
क्रियाशीलता ओ शैलीक तर्ग थिक । एकठा कहरी डैक  
जेहने छनिहो हो कहुँ तेहने भेटैत हो कहुँ-  
रास्तरमे जीवन कीड एक मैदानमे जेहने दृष्टिकोण  
बहत ओहने खेतरक खेतीना भेटैत ।

आओ धरि मैथिली कार्य जगतमे जे कमी खनैत  
छडि ओ थिक बचनकारक जीवनशीली ओ बचनक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तावतम्यक अभावर । संभरतः जगदीशिक करिता  
पठार्थि पाठक करिक दृष्टिकोणपव प्रश्नचिन्ह नै ठाढ़  
क२ सकैत छथि । शैक्षणिक पाठक्रममे कोनो चर्चित  
र्यक्ति जीरन पविचय मात्र सकावात्मक दृष्टिकोणकेँ  
पनकरैत देन जागत अछि । प्राथमिक आ माध्यमिक  
शिक्षामे समालोचना छत्र नै क२ सकैत अछि, ओगमे  
मर्यादाक रान्हकेँ नाओरै संभर नै । मैथिली  
साहित्यमे संभरतः एहिना होगत बहरन अछि ।  
र्यक्तिगत रा किछु खास रत्नाकेँ महिमामंडित कवरौक  
क्रममे अप्रकाशि साहित्यकाव समाजक रास्तरिक  
वृत्तिचित्रकेँ नाँपि देरौक प्रयास करैत छथिन्ह । ई  
दुर्भाग्यसँ साहित्य कवकित तँ होगत बहरन झुदा  
किनको एकव स्केत नै । सब शिर्द समंजन आ  
आत्म संतुष्टिमे लागन छथि कि एक तँ आत्म  
संदृष्टिक कप रिचित्र भ२ गेन छैक ।

जगदीश जीक कार्यमे ३ सभ नै भेटैत कि एक तँ  
हिनक दृष्टिकोण साफ़ छन्हि ३ सामाजिक रिडरना आ  
रिषमताकेँ नाँपि क२ नै बाखए चाहित छथि । आर  
निर्भव करैत छैक जे समाज हिनक दृष्टिकोणकेँ  
कतए पवि मोजब देतन्हि-



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

सत रँनि कथनो बाजु रिबाजए

बजु रँनि-रँनि शोसन कबए

धरिते धावण तम तम-तमा

मनह-मनह हुनगसँ गिबए....

ई पद्याश्रिमे गिबए केव स्थानपव थसए बहरौक चाही  
झुदा गिबए रा थसए जे निथन जाए ए तँ अस्मबशी:  
सत्य अडि समाजक परिदृश्यमे अधोगति शिखबकेँ  
छुरि नेतक । “रान्हसँ थापि डूँच” अनिश्चयराचक  
लोकोक्ति छत झुदा मिथिलाक समाजमे आरँ ए  
निश्चयराचक भ२ गेल । अंग्रेजीमे कहरी छै  
“Nature and signature remains  
constant” झुदा मिथिला स्फेद एकव अपराद  
थि थक । मचीय भाषणमे जीरन शीलीक उद्घापन कतरौ  
साह बहए झुदा रास्तरिक कप किछु आव भेटैत  
अडि ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रिवादित पृष्ठभूमि जगदीशजी कतरौ दूब होथि  
झुदा साहित्यकाव रूकर्मिक हाथसँ फेकल अस्फुतकेँ  
माथसँ नगा कऽ सम्यक जीरनक कतरौ उद्घापन कबए  
पबँ जखन लेखनी उठएत तँ सत्य अरुण्य  
परिवर्णित भऽ जाएत । “नवकष्ट घोड़ १” एकव  
प्रत्यक्ष प्रमाण मानल जाए । करि समाजसँ मात्र  
सिनेह चाहित अछि । कोनो आत्मिक करि सुखी नै  
आ नै ओकरा समाजसँ पिवही रा सम्मानक आशि... ओ  
तँ मात्र चाहित अछि जे रिद्धतमंडनी ओकर बचनकेँ  
जन-जन धरि पहुँचा कऽ ओकर दृष्टिकोणकेँ  
परिवर्णित कबथि । जकर अन्तर मैथिली साहित्यक  
रासत्रिक रूपकेँ पाठक धरि पहुँचरा बहल अछि ।  
अर्थात् ई साहित्यमे पावदर्शीकेँ कछु पावभासक  
समानोचक सेहो एखन धरि नै आएल छथि ।

“गीत-१” द्वारा करि एकठाँ निनीक समानोचकसँ  
मैथिली साहित्यक बस्त्रक आशि बसैत छथि ३ सँभल  
हएत रा नै ३ तँ भविष्यक विषय थिक झुदा  
जगदीशजी अर्द्धधनुषी अकासक द्वारा की देवनि ईपव  
मथन कएनासँ उठब आधुनिक मैथिली कार्य जगतकेँ  
अरुण्य सुस्थ चिन्तन भेटैत ।



ई कनापब अपन मंतर  
ggaj\_endra@videha.com पब पठाड ।



स्रजित

रुमाव ना

कथा



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

केहन सजाय ?

कामनी मैडम काज समाप्त कएलाक बाद चम्पा  
उतावलीह । हुनका जाठक अनुभर भऽ बहर छल  
। आग आठ राजि गेल । साँस बालीमे  
परिवर्तित भऽ गेल छल । चौकीदाबकँ आहिंस  
रैन्द कबरक आदेशे दऽ ओ सार ओठलीह आ अपन  
कम दिस रैठि गेलीह । कामनी मैडमकँ एतऽ  
अएला एक हप्ता मात्र भेल छल ।  
एकठा सबकारी रिटायरयक प्रधानाध्यापक पदसँ अरकाशि  
प्राप्त मैडम अपन घर जाए चाहित छलीह । रुदा  
मावराडी सेरा समितिक अध्यक्ष बामबतन शर्मिष्ठी  
हुनका महिला सदन होस्टलके जिम्मेवारी स्वीकारक  
लेल रौप्य कऽ देलौहि । महिला सदनकँ मावराडी  
सेरा समिति चला बहर छल ।  
चाबि हजार रिटायरक प्रधानाध्यापक लेल ओ सदन छेष्ट  
छल । शर्मिष्ठी एहि सदनके लेल कोनो अनुभरी  
राजि तकि बहर छलाह । तँए कामनी मैडमसँ ओ  
पदभाव ग्रहण कबरक आग्रह कएलौहि, जकरा मैडम  
अस्वीकार नहिकऽ सकलीह । एतऽ पचास महिला,  
भोजन रैनारऽ रैला तीन गोष्टे भनसिया आ किछ  
कार्यनियक कर्मचारी छल । एतऽ बहऽ रैला कर ३.१  
सदस्य छल ।  
सदनके नियमानुसार ९ रँजे प्रार्थनाक लेल सब सदस्य





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

खंडान, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवविज्ञान

संभारनमे उपस्थित होगत छन । तँए मैडम  
महिलासभकँ चिन्ह नागन छनीह । एहिमे किछ  
रिवाजित सेहो छन । केओ सबकारी कर्मचारी, केओ  
रिमा कम्पनी, केओ शिक्षिका, केओ एनजीओकर्मी तँ  
किछ अङ्गनियब सेहो छन ।  
हरक दिन अपन काजक हिसारसँ ओ सब जागत छन  
झुदा सँ आठ रँजेधरि कोनो हाततमे घुबि जाएकेँ  
नियम छन । ओना मार्केटिङ्ग रा एनजीओमे काज  
कबन्हँनाके वाति ९ रँजेधरिके लेन छुट्ट छन ।  
आरथकता पडनापव ओ वाति १० रँजेधरि राहब बहि  
सकेत छन झुदा एहिमे लेन मैडमकेँ पहिले सूचित  
कबराक नियम छन ।  
आमेरिग्लोस आ बुद्धिमतासँ काज कबन्हँना उच्च शिक्षित  
महिलाकेँ देखिकँ मैडम स्त्रीक रँदनेत प्रतिभापव  
रँहूत प्रशन्न होगत छनीह । असगब बहूत अरनाकँ  
सरना रँनेत देखि हुनका नीक लगैत छन । ओ  
एतँ एक रर्थक लेन अनुब्रूत छनीह । सदनमे  
अलग अलग रत्ना छन । एठैच राखकम रँना कम,  
तीन रँड रँना कम आ केब चाबि रँड रँना कम ।  
चाबि रँड रँना कमक लेन राखकम राहब छन ।  
मैडमक प्रभारसँ एक्क हप्ता भितब होस्टलमे सहाय  
तथा अन्य कार्य नियमपूर्वक होरँ नागन ।  
एतँ बहन्हँनी नडकी नेपाक सभ ठामक छन ।  
किछ मैथिल, किछ रीबगङ्ग दिसक, किछ पहाडक तँ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह

किछ हूँ, जुँ, दिसक लोक सेहो छन । एहि  
नडकीमे एकठ्ठा श्याम बंगक, जे मौनताक चदवि  
ओठने, ओकब राजिह्र खनग छन । पातब छितब  
हारती । रँडका रँडका आँखि एक्क रँबमे सभकेँ  
अपना दिस आकर्षितक२ लैत छन । ओकब भोला  
चेहरामे त२ गजरके हार भार अरैत जागत छन  
। आँखिमे डेबाएन सन देखागत छन । कोनो  
रँनारँपी त्रुंगार नहि । ओ पाउडर, काजब, टिङ्करीधरि  
नहि लगैत छन ।

समान्यतया एत२के नडकी आमेनिर्भर भेलाक कारण  
अपन कप सज्जापब विशेष ध्यान दैत छन । काँठन  
केशि, मीनन डँड, नीपन पोतन चेहरा, पैंन्शीनेरून  
कपड़ १ । कमाउ सभ छन तँए रनिठनिक२ बहैत  
छन । एहनमे भोजपुरी भाषी ओ नडकीक सादगी  
उभरिक२ देखाग देरै२ लगैत छन । हनका बंग  
रँना सतराब हती पहिबने, नहि आगबन, नहि किछ  
।

बातिमे छिन्नी देखैत नडकीक खराज, हल्ला रा हँसीसँ  
सभागृह गुञ्जित होगत बहैत छन । झुदा ओ नडकी  
कोनो कोणमे ठेहनपब दाँठी अडकाक२ आ दुनु हाथसँ  
पएबकँ घेबने नहि जानि कत२ देखैत बहैत छन  
। छिन्नी दिस प्रायः ओकब ध्याने नहि बहैत छन ।  
अपने सँसारमे ध्यानमग्न अपने रिचाबमे हेबाएन बहैत  
छन । ओकब आँखिमे देख२रँना उदासी मैडमकेँ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रैब रैब चिन्तित करैत बहैत छन । ओकबा कोन  
रिपति पडन छैक मैडमकै ए रात डरूँ मारैत  
बहैत छन ।

रैबियामे सदन खाली बहैत छन । एक दिन  
रैबियामे मैडमक कानमे गीतक एकठाँ सुन्दर स्वर  
सुनाए पडन । ओ स्वरकै नहि रोकि सकलैथि ।  
शीघ्रतासँ ओ स्वरकै पाछु ओहि कम तक गेलीह जतः  
भोजपुरी भाषामे गीत गारि बहल छन । देरानमे  
ओत लगओने गीतमे निमग्न रहि आँखिसँ नोकक रँखा  
भः बहल छन । दर्दमे डूबल स्वर श्रृङ्खित भः बहल  
छन ।

कमक राहबसँ मैडम किछु देब गीत सुनैत बहलीह  
। एकाग्रता भंग करै ठीक नहि बुझि मैडम ओतयसँ  
घुबि एलीह । रैब रैब ओ अएह प्रश्नक उत्तर तकि  
बहल छलीह, आखिब ओकबा कोन दुःख छल । कि  
ओ एतेक उदास बहैत छल ?

दोसर दिन मैडम ओहि कमसँ नगड़ एक आराज  
सुनलैथि । कमक अन्य नडकीसँ ओकबा उकठाँ पैछी  
भः गेल छन । तँए हेतु ओ नडकी चिचिया  
चिचियाकः गाँठि पठि बहल छन । ओकबा कोनो  
होश नहि छल, कि राजि बहल छन ।  
मैडम शीघ्र ओतः पहुँचलीह आ ओकबा देखिते बुझि  
गेलीह जे ओकब मानसिक अवस्था ठीक नहि छल ।  
ओकबा ने अपन कपड़ एक होश छल आ ने बुझि



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

पारि बहन छत्र जे ओ कि रोजि बहन छट्टि ।  
छट्टन आँखि ओकर अस्त्रस्तक रँखानक२ बहन छत्र ।  
ओ भोजपुरी, मैथिली आ नेपाली भाषाक मिश्रणमे  
किछ रँबरवा बहन छत्र । मैडम ओकरा निम्नक गौरी  
आ दुध द२क२ जरबदस्ती सूता देलीह ।  
ओकर नाम चमेरी छत्र । मैडमकेँ आरँ ओकर चिन्ता  
होरँ रागन । एखनधरि चमेरीकेँ प्रति हुनकर जे  
उत्सुकता छत्र से आरँ परेशानीमे रँदनि गेल छत्र ।  
आरँ ओ सोच२ नगरीह जे कोनो प्रकारे चमेरीकेँ  
रातचितक लेन तैयार कएन जाए । ओकर मोनमे  
रिश्नास रँद १०२ जाए । मैडम सोचेत छलीह जे  
कहूना ओ खुनिक२ अपन रात कहि मोनक रौम हलुक  
कएन । झुदा एहिमे कोनो शिक नहि छत्र जे ओ  
नडकी रँदूत रँडका दृष्टिना मोनमे दरवने छट्टि रा  
कोनो एहन कावण छट्टि जाहिसेँ ओ कृष्णवस्तु छट्टि ।  
चमेरीक विषयमे मैडम एक प्रकाशसेँ अनुसन्धान शुरू  
कएलेहि । होस्टलक आफिसक बजिष्ठरपव ओकर  
पूरा नाम पता नहि छत्र ।  
चमेरी कम्प्यूटर एपिपिङ्क२ किछ पैसा कमगत छत्र  
। समान्यतया होस्टलक नडकीकेँ ओकरासेँ शिकायत  
बैत छत्र । ओ रँसी समय छुप बैत छत्र, ककरोसेँ  
ओकरा कोनो सरोकार नहि बैत छत्र । झुदा  
कहियो कहियो छेष्टको रातपव नडि जागत छत्र ।  
गाडि पठेत कोनो दिन सूर्य टिबटिबाक२ रँबरवाए



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नगैत छन । दोसब नडकीसँ दुब नहि सगड़ ।  
नगारैरैना रात रा नहि हँसी मज्जाक सभसँ दुब बहैत  
छन । ओकबा कोनो ने कोनो समझा खरथु छिट्टि  
।

मैडम ओकबासँ रात कबरक कोशिसक अममे कोने  
ने कोनो रैहना रैना एक दु रैब अपना कममे  
रैजगलैह । झुदा चमेनी कोनो सन्ताषजनक उठब  
नहि देखक ओ मात्र हँ रा नहिमे जराँ दह दैक ।  
किछु दिनक राँद चमेनीक कमक एकठा नडकी आरिक्  
राजन, 'चमेनीक' रैहूत रौखाव छिट्टि । '

मैडम तुबनु ओकब कममे गेलीह । रौखावसँ  
तडपैत चमेनी ओछाएनपब पडन छन । मैडम  
ओकब माथपब हाथ बथलैह । माथ पूरे दहकि  
बहन छन । ओकबा तुबनु दराग पिछगलैह ।  
रौखाव कम कबरक नेन मैडम ओकब माथ नग  
रैसिक २ ठंठा पानिक पछि देरै २ नगलीह । रौखावसँ  
चमेनीक रैहोशी जेहन खरस्था छन । ओ रैबरवा  
बहन छन, 'मन्मीके घब जाएँ' घब जाएँ, अपन घब  
जाएँ ।

ओकब रात सुनिक २ मैडमके हृदय कानि उठन ।  
रौचारी असगरे छिट्टि । एकबा घरौ छिट्टि कि नहि,  
घब जाए चाहैत छिट्टि, माए राँबूके स्पर्शक २ बहन  
छिट्टि । रैहोशीक खरस्थामे हृदयक रात झँहसँ  
निकनि बहन छन । एकब घब त २ छिट्टि नहि, कि



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

एहिसे पहिने एकब माता पिता कते रौतब छन रा अ  
एकब सपना छि ? मैडम किछु बुनि नहि पारि  
बहन छनीह ।

भोवमे रौखाब कम छन झुदा चमेनी रहूत कमजोब  
भे गेल छन । झूठ सुखा गेल छले । आँखि  
धँसि गेल छले । राखकमधवि जेअरौक शिजि ओकबामे  
नहि छले । मैडम ओकब शिविवीक आ मानसिक  
अरुआ देखि सही अनाज कवाएँ अपन दायित्व  
बुझलैहि । हुनका सह डाक्टरब दम्पति स्मरण  
अएलैहि ।

नोकबीसँ अरकाशि पओलाक रौद अ दम्पति अपन  
नर्सिङ हौम थोति लेने छन । डाक्टरब पति पनी  
दुनु मैडमके मित्र छन । ओ सब मैडमके रहूत  
सम्मान करैत छन । चमेनीक उपचार डाक्टरब  
सोनिया सह रँठियाँ जकाँ कइ सकत एकब पूर्ण  
रिश्वास मैडमके छन । मैडम डाक्टरब सोनियाके  
चमेनीक रिषयमे टेलिफोनपब कहलैहि आ चमेनीके  
नकइ नर्सिङ हौम पहुँचनीह ।

चमेनी कमजोबी आ रौखाबक थकानक कारण रैहोशी  
सन हातमे छन । डाक्टरब ओकवा ठीकसँ जाँच  
कएलैहि । नर्सक सहयोगसँ ओकवा कपड़ १ रँदनाओल  
गेल । दराअ आ अल्ट्रासोन देलाक रौद अग्रिस्तु भे  
डाक्टरब सोनिया मैडम नग आरि रँजनीह, 'घरबएके  
कोनो आरथकता नहि छि, कमजोबी रहूत छि दु



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

तीन दिनमे ठीक भऽ जाएत, हम ओकरा एडमिष्टक  
नेनहुँ छँडि । ' कनि बकिकऽ डाक्टर मोनिया हेब  
रँजनीह, 'ओकरा गर्भपात कएन गेल छँडि ।  
एखनधरि ओ किछु कहबैक अरुस्थामे नहि छँडि ।  
अपने जे कहनहुँ छँडि ओकरा देखिते मानसिक  
शान्तिक नेन आरथक दराग शुककऽ देने छी ।  
स्नान भेलाक बाद ओकरासँ रात कवर रँटियाँ हएत  
। ' मैडमके कनी सोचमे पड़ैत सन देखलाक बाद  
ओ कहनीह, 'अपने मैडम चिन्ता नहि कर हम  
टेलिफोनपर खरबि दैत बहर, अपने तीन दिनक  
बाद आउ आशा छँडि ओ स्नान भऽ जाएत । हमसभ  
एकरा रँटियाँ जकाँ पान देर । '  
चमेलीकेँ अस्पतालमे छोडिकऽ मैडम होस्पिटल चलि  
अएनीह ।  
नडकी सबकेँ कहलैन्हि जे चमेलीकेँ रौखाव छँडि ।  
अतः अस्पतालमे भती कवा देन गेल छँडि, चिन्ताक  
कोनो रात नहि, तीन चाबि दिनक बाद ओकरा आनि  
लेर । एतेक कठिकऽ मैडम अपना कमरे चलि  
गेलीह । ह्रदा मैडमक मोनमे उथल पुथल मचने  
बहल । चमेलीकेँ नऽकऽ अनेक रिचाव मस्तिष्कमे  
घुमि बहल छल । हुनका स्नानपब रिश्नास छल ।  
अनुभवी नजबिसँ ओहि राजिकेँ पबथ सही छल वा कम  
उमेवरना चमेलीकेँ बुझऽमे तऽ नहि गेली भऽ गेल  
छलैन्हि ?



১০৬ স অংক ১৭ সঙ্ক ২০১২ (বৰ্ষ ৭ সন্ম ৭৩ অংক ১০৬,

বৰ্ষক্ৰম, ISSN 2229-547X VIDEHA

মাহুৰীমিহ

চমেণী খবাই, বদচন, ভূমি খন্ডি গ্ৰ মানহকে নৈন  
হুনকব মৌন তৈয়াব নহি হুত । অনেক সম্ভাৰনা হুত  
জে শায়দ কেও একবা অসগৰে বহনাক কাবণ কাগদা  
উঠা নৈনে হো বা কাজ দেৱাক নানচ দহকহ একব  
গজ্জতি নুঠি নৈনে হুখএ ।

মৈডম সোচি বহন হুণীহ, ' চমেণী বদচন তহ নহি  
খন্ডি, কাবণ ওকবা নগ নে পৈসা আ নে কপড় ১,  
গহনা । এক দুঠা সনৱাব ক্ৰতী খন্ডি ওকবা  
ভেঠৈৱাক নৈন কেও অৱৰো নহি কৰৈত খন্ডি । নহি  
কোনো চিঠী, নহি কোনো ফোন । ' তীন দিনক ৰাঁদ  
চমেণীক ৰিচাবমে ওমৰাএন মৈডম দৈনিক কাম কাজ  
সমাপ্তকহ অস্পতান পহুচনীহ । ৰেবীয়াধৰি ডাকঠব  
সোনিয়া ৰাস্তাসাঁ দ্ৰুজ ভহ জাগত হুখি । মৈডম  
চমেণীক কমমে পহুচনীহ, ও ওচুধনপব সূতন হুত  
। ওকব দ্ৰুহপব আভা চনি আএন হুত ।

শান্ত, অসহায় চমেণীকে দেখিকহ মৈডমকে দুদযমে  
মমত্ৰ চনি আএন হুত । ও চমেণীকে মাথপব স্ফহসাঁ  
হাথ বখনৌহি, তখনে চমেণী আঁখি খোৱনক ।

মৈডমকে দুনু হাথ কসিকহ পকডি ৰাঁজন, ' মৈডম  
হমবা গৱত নহি ৰুঁত্ৰম । হম খবাই নহি হুী ।  
হমৰাপব ৰিশ্বাস কব হম কোনো গৱত কাজ নহি  
কএনে হুী । বিতেশে চাহিত হুৱাহ ৰাঁচাকে পানন  
পোষণ ৰাঁটিয়াঁ জকাঁ হোগক । হমবা সভ জকাঁ  
তকৱিফ ওকবা নহি হোগক । আৰ্থিক অস্থিৰতা আ





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

माए बापक प्रेम, बासेना भेष्टैक सही माहौलमे  
रैचार्के रैठियाँ जकाँ देखभाल होएरौक चाही .....'  
रैहूत झुनिकनसँ एतेक कहि झुनिकन सन्तानसँ अस्मर्थ  
चमेनी हिचुकि हिचुकि कानन नगर ।  
मैडम ओकर पीठ थप थप ओलेहि तऽ झुनिकन स्पर्श  
पारिकऽ चमेनी किछु शान्त भेल ।  
ओ रैहूत किछु राजऽ चाहित छल । डाक्टर ओकरा  
किछु देब शान्त भऽ रैसराक लेल कहलक । ओकरा  
चाह पिराक लेल देलक, एकव रौद चमेनी दिस  
तकैत कहलैहि, 'देखु एहि रातकेँ रैठियाँ जकाँ बुझि  
निथर हम सब अहाँकेँ शुभ चिन्तक छी । बिना किछु  
बुझने सब किछु कहि देबै यथा समुद्र हम सब  
अहाँकेँ सहयोग करै ।'  
डाक्टरक ओ शब्द चमेनीकेँ किछु कहराक हौशिया  
रैठलक । ओ राजल, 'मैडम हमही अहाँकेँ सब  
रात कहऽ रैना छल । अहाँ आ डाक्टर दिदी केँ  
छी हमबा बुझऽ नहि आबै बहल अछि, अहाँ सब  
हमबा रैचलहुँ अछि । मैडम अहाँ हमबा होस्टलसँ  
नहि निकालबै हम प्रार्थना करैत छी, हम ओहिठाम  
रैठियाँ जकाँ बहबै । ककरो तकलिफ नहि देबै ।  
चमेनी जे अपना विषयमे कहलक से सुनि मैडम  
आश्चर्य चकित छलीह । एहनो लोक होगत अछि  
। एतेक निश्चय, पथक दुदयरीना ।  
रैबारब देखऽ अरैत अछि जे ककरो बिना गयक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रचा घबक सदस्य रैनि जागत छि । पाततु  
जानरबसँ सेहो हम सब जूडि जागत छी । अगत  
रैगनकेँ रैचा सेहो नीक नगाह नगैत छि । एका  
एक पाततु करुब रिनागकेँ छोडि देरौक कप्पना  
असम्वर नगैत छि । हेब एतह तह घबमे पतन  
एक दशकसँ निब सग होगतो एहि नडकीकेँ छोडि  
देरै सोचिकह मैडम सिहवि उठनीह ।  
ओ केहन माँ छि रा माँ सज्जा सेहे ओकरा नेन  
अनूचित छि । की महिनाक एतेक स्त्रीरूप सेहो  
तह सकैत छि ? जाहि रैचाकेँ पौसपुते कि  
नहि रैनउने हूँ झुदा अपन पत्नी तह मानने छन,  
अपन नाम तह देने छन, पागत पौसिकह पठउने  
छन । ओहि रैचाकेँ रस सृष्टिपव निर्ममतासँ छोडि  
देनक मैडम किछ देब सोचिने बहनीह ।  
चमेनी रीवगङ्गके सप्पन यादर परिवारबमे पतन रैठन  
छन । जतह ओ सामान्य आ स्वस्थित सहज  
राज्यारस्था रतित कएने छन । भडन पुडन  
परिवारक कौशिन्याकेँ रैचा नहि होगत छन । रैचा  
होएरौक कोनो सम्वारना नहि देखनाक रौद कौशिन्या  
अनाथाश्रमसँ दु बरसक रैचाकेँ अनने छनीह । ओहि  
रैचाक नाम चमेनी बाखन गेल । अपन पितियौत  
भाग रहिनक सग चमेनी रैडका भेल । प्रेम,  
संरक्षण आ संस्कार ओ पारि बहन छन । परिवारक  
अन रैचा जेकाँ एकरा नेन हरेक प्रकारक प्ररह छन



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

। ओ बूँचैत छत्र जे ओकबा गौद नैत गैत अछि  
। झुदा एहि रातकेँ नहि कहियो नुकसँत गैत आ  
नहि कहियो उचाव कएत गैत ।

एकठ्ठा नम्रा समय रित गैत । चमेनी एक एक सिटी  
चटैत यौरना अरुस्थामे पहुँच बहर छत्र । बूँचमान  
चमेनी +मे पटैत छत्र । आश्चर्यजनक रूपमे  
कौशिला ठनैत डमेवमे गर्भरती भइ गेलीह, हुनका  
मातृक आरुष्ट भेल । घबमे सब खुशी छत्र ।  
चमेनी सहित सब आँखि पथने छत्र । चमेनी आ  
ओकबा पापाकेँ खुशीकेँ ठेकान नहि छत्र । समयपब  
कौशिला प्रवर्केँ जग्य देलीह । शायद एतहि  
चमेनीकेँ खबरेँ दिन शुक भेल । अपन कोथिसँ  
जनमन प्रवर्केँ पारि कौशिला धन्य छलीह । ओ  
जोडन सँझकेँ तोडरौक निर्णय कएलीह ।  
एक दिन चमेनीकेँ पापा कहलैन्हि जे चमेनीकेँ  
झुंझीकेँ सगेँ गाम जएरौक अछि झुदा, चमेनी बूँच  
नहि पारि बहर छत्र जे पठाअयक समयमे किए  
ओकबा पठाओत जाबहर अछि । झुंझी तइ हरेक  
समय कामकाजसँ घुमेत बहैत छत्र । गर्मी रा दुर्गा  
पूजाक छुट्टीमे रँचाक मामा रा मौसी नग पहुँचरैत  
छत्र । झुदा असगरेँ झुंझीकेँ सग जएरौ  
चमेनीकेँ किछु जमि नहि बहर छत्र । ओकबा  
अस्त्रिकाव कएलाक रौद मन्मी रँहूत समनओने छत्र की  
दु तीन दिनक रात अछि गाम जएरौ जकरी अछि ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

छोठका रैंगमे दु चाबिष्ठा कपड़ १ बाथिक२ चमेनीकै  
रिदा क२ देन गेन ।

घबक सब रैछा झंसीजीके कोबामे पनन रैठन छन  
। तँए चमेनी हुनका संग रिदा भङ्गेन । अ  
यात्रा चमेनीक जीरनके धार रैदनि देत ओकरा कि  
पता छन ।

मथा बातिमे चमेनी सूतन छन । तखने झंसीजी  
ओकरा जगओनक । कोनो रँस स्टैन्ड चनि आएन छन  
। जत२ तत२ लोक सूतन छन । रँस स्टैन्डक  
एकठ्ठा कोनूपर खाली रैखएपर झंसीजी सूत२ नैन  
कहलैन्हि आ ओकर माथ नग रँसि बहनाह । दु  
घण्टाक रौद रँस आएत से रिना कोनो आर्शिकाके  
चमेनी सूति बहन । तखने झंसीजी छुपचाप ओत२सँ  
निकनि गेलैथि ।

रैहूत समय रित गेन । माथ नग ठकठकके आरौज  
सुनिक२ चमेनी जल्दीसँ उठन, रौद आरि गेन छन ।  
किछ देबक नैन चमेनीकै किछ बुझ२मे नहि आरि  
बहन छन कि ओ कत२ थिछि । पुनिस किछ कहि  
बहन छन, लोक जम्मा भ२ बहन छन । पुनिस किछ  
गरेज बहन छन । चिचियाक२ किछ पुछि बहन छन  
। झुदा ओकर भाषा चमेनीकै बुझ२मे नहि आरि  
बहन छन । झंसीजीके कोनो अता पता नहि छन  
। चमेनी नग नहि पैसा छन आ नहि किछ । ओहि  
ठाम बहन पुनिस झंसीजीकै किछ देब खोजनक आ



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

जखन नहि भेटैत तह चमेरीकै अनाथ आश्रिममे पठा  
देतक ।

अनाथ आश्रिममे चमेरीक हात रहुत खराब छल ।  
उतहके भाषा, रातारवण, भोजन सबमे रहुत अलुब  
छल । ओ रूमि बहन छल जे कोनो दुर्घटनाक  
काबज झुंसीजी ओकवासँ अलग भइ गेल छल ।  
पापा ओकरा लेरीक लेल तुलबुल एताह । घबपव  
सब परेशान छल । कानि कानि कह रिताएन दिन  
निवासीक अनाथकै आओव घनघोबक बहन छल ।  
एतहके काम कब रानी, बह रानी सब मूर्ख आ  
गन्धमे बहरीक आदी छल । खुर गाबि रोजि बहन  
छल । नडकी सबकै पिछैर समान्य रात छल ।  
चमेरी भयभित छल करी ओकवासँ सहानुभूति नहि  
छल ।

रायस्वापिकासँ चमेरी किछ प्रुडैत छल तह कोनो ध्यान  
नहि दैत छल, उलठै चमेरीकै डाँटि दैत छल ।  
ओ सब कहैत छल, कथिनए कनेत छै, जीरनभवि  
कनिते बहरै, तोवासँ भेटैत केओ नहि एतह, तोवा  
अपना लग बाथरीक बहैतह तह छोटितह किए ?  
चमेरीकै एक एक क्षण उतह बहरै झुंसीक भइ  
बहन छल । झुंसी समय करी लेल बकैत नहि  
छल । एक एक दिन रित बहन छल चमेरी हताश,  
निवासी आ उदासी छल । अनाथ आश्रिमक भोजन  
ओकर कण्ठमे नहि ससबि बहन छल । घबपव ओकरा



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

उपलब्ध, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

आँचाव, चर्चनी, तबकारी, माछ, माँस आ आदिछ,  
भोजनसँ भडन खावी भेटैत छन । बसग्रन्ना रिना  
ओकर भोजने प्रवा नहि होगत छन । आश्रिममे  
मोठ मोठ काँच पाकर दुष्टा रोष्टी, रिना आदक दानि  
रा तबकारी आ हप्तामे दु दिन एक राँटी भत  
भेटैत छन ।

ओत२ बह२ रँना नडकी सभ ओकरा रँहूत समनरैत  
छन । अपन भत छुपचाप चमेरीकै देरौके  
कोशिस करैत छन । ओह नडकीसभसँ ओकरा किछ  
सहानुभूति भेटैत छन ।

आश्रिमके नियम अनुसार चमेरीकै बिद्यालयमे नामाँकन  
कराओन गेल । नेपाली माध्यमसँ ओकरा किछ रूँम२मे  
नहि आरि बहन छन ।

कोनो तबहँ एस.एन.सी. पास कराओन गेल ।

आरि चमेरी पबिस्रितिसँ समनोता कर२ चाहनक ।

झुदा अनाथ आश्रिमक नियम अनुसार ५+ रररक ओमेव  
प्रवा होगते अनाथ आश्रिममे बहरौक अनुमति नहि  
थडि ।

एहि क्रममे ओ अपन पापाके कतेको पत्र पठौनक

। झुदा कोनो उतव नहि अनाक रौद अन्तिम

प्रयासक रूपमे अपन मोसीकै एकठा पत्र लिखनक

। मोसीसँ चमेरीकै रँहूत स्नह छन । मोसी एहि

शेहबक अनाथ आश्रिमसँ सम्पर्क कएलैन्हि आ कहनाक२

होस्टलमे बाखएरौक प्रयास क२ देलैन्हि । जेठ

रँहिनद्वावा कएन गेल पापक प्रायश्चित छोट रँहिन



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

यानी मौसी एहि प्रकार कएलक ।

अ होस्टल स्रष्टा आ स्रतन्त्र छल । एहि ठाम बहल  
काल चमेरी कम्प्यूटर ठागप सिखलक आ जन्दिअ अपन  
पएवपव ठाठ हएराक कोशिस कबइ लागल । १२  
कक्षाक पठाग सेहो शुरू कएलक । चमेरी कम्प्यूटर  
ठागपिछाके लेल जतइ जागत छल ओतइ रेबियाक  
छुट्टीमे ओ खाली बहल छल । ओतइ छोट फुलराबीमे  
चमेरी घण्टाघरि बहल छल । फुलराबीक रातब बिक्रा  
स्टैन्ड छल । ओ बिक्रा स्टैन्ड नग बितेशि दैनिक  
अरैत छल । स्कूलक रँचा सँम चाबि रँजे जागत  
छल । ओ १० रँजे रँचाके स्कूलमे छोडलाक बाद  
अहिना फुलराबीमे स्रतन्त्र अरैत छल । ओ छपचाप  
चमेरीके प्रत्येक दिन देखैत बहल छल ।

बितेशि ओकरासँ परिचय रँठओलक । बितेशि अपन  
आ सहानुभूति चमेरीके मनहमके काज कएलक ।

चमेरी हुनकासँ घुनि मीनि गेल । धीरे धीरे ओ  
बितेशिके अपन रितल घण्टा सुनओलक । बितेशि  
सान्त्वना देलैन्हि, जीराक गच्छा रँठओलैन्हि । सूर्य  
बितेशि अपन काकाके घरमे बहि बहल छलाह । ओ  
चमेरीक पिछा १ रँजेत छलाह । एक समान दुनु एक  
दोसबके पसिन कबइ लागल । संसारक सताओल  
चमेरी बितेशिसँ अलग होरैइ नहि चाहैत छल । ओ  
बितेशिके विराहक परित्र रँखनमे रान्हयके लेल  
कहैत बहल, दिन रितैत गेल एहि क्रममे पेरैमे



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह

रैचा भ२ गेल ।

मैडम प्रदुलैन्हि, तौ रीबगङ्ग जाए चाहित छै ?

तोबा हम स्वर्य न२ जएरौ । '

चमेनी तुबनु राजन, नहि मैडम, नहि हम रन प्रूरक  
करबोसँ किछ नहि चाहित छी । झुदा, मोन करैत  
खुट्टि एक रैब हुनका सभसँ भेटैक२ पछी जे, कोन  
अधिकारसँ ओ हमरा पौसलैन्हि आ फेब हमरा  
जनसागबमे भुसा देलैन्हि । हम जन्मसँ अनाथ छी  
। ओतहि पलितहुँ, एहि गन्दा रातारबराक असबि त२  
नहि पडितए । किए हमर रिश्तासकेँ तोडन गेल  
। '

'अनाथ आश्रमक अनुभर कि कछ, छोट उमेरमे हमरा  
आचानक समावक सभसँ खरा दृष्टि देखा देलक ।  
हमर बुद्धिमता रार्थ भ२ गेल । महत्त्वपूर्ण शिक्षाक  
रर्ष ररदि भ२ गेल । यदि पहिलेसँ आश्रममे  
बहितहुँ त२ अपन माझा दोसब हिसारसँ रैठरितहुँ ।  
हमरा कतहुँ नहि छोटलैन्हि ओ सभ । मौसी आ  
बितेशि हमराजँ सहावा नहि देने बहितैथि त२ या  
मरिगेन बहितहुँ रा पागलखानामे अरथ पहुँच गेल  
बहितहुँ । '

मैडम ओकर माथ सहलोलैन्हि । डाक्टर सोनिया  
रातके रैदललैन्हि । ओ कहलैन्हि, जे भ२ गेल से  
भ२ गेल एहि परिस्थितिसँ अहाँकेँ नडरौक खुट्टि ।  
तीन चाबि दिन हमरा नग बद्ध । हम अहाँ आ





बितेशिक रिषयमे अरथे किछु सोचरै ।  
मैडम थोजिक२ बितेशिके रजगुनेहि । ओ सज्जन,  
मेहनती आ गमान्दाव नडका छन । दिन भवि  
सुकुनक बिक्रा चनरैत छन आ बातिमे पठैत छन ।  
म्लान्तकक पठागके अन्तिम रर्यक छान छन । मैडम  
आ डाकठब सोनियाक सल्लाहसँ बितेशि चमेरीसँ रियाह  
कएनेहि ।  
डाकठब सोनिया चमेरीकँ अपन अस्पतारमे नोकरी  
देनेहि । आथिब चमेरीकेँ जीरनक एकठा किनावा  
भेटैए गेल ।

ए कनापब अपन मतर

[ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाड ।



सल्लाबायण ना



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

## डायरी

रैसाथ मासक रैब महुर डैक झुदा एहि रैब एहि मास  
मे असहनीय घाम भ' बहर डैक | कणक ठाम स'  
नोत पता डुर | रौह, द्विवागमन, उपनयन स' पूरा  
मिथिला पठन डुर | घाम त' रैब बैक, तैयो दिनांक  
१४ ४ ०१२ जुड सि तन दिन रिदा भेलौ अपन  
देस, अपन गाम | गाडी नेलौ आ अपने चररैत रिदा  
भेलौ | संग मे पनी रेणुजी बहथि आ पितयौत  
अनुज टि० जी० सुरेश जे पतवातु थर्मि कानेज मे  
शिक्षक छथि | ओ एक दिन पहिनहि आरि गेल डुराह  
| डुर रजे भोव मे रिदा भेलौ आ पहिन पवार  
दबलगा मे छोट साठु डा० महादेव जी ओहिठाम डुर  
जे हम सब नौ रजे पछुँच गेलौ | एक तबह रूम  
पहनाग प्राबन्ध भ' गेल डुर | जखन हमर रौह भेल  
बहथ त' हमर सारि कंचन न्या मात्र दू सारक बहथि  
झुदा आरि, आरि त' ओ रूठिया नानी जकाँ गप्प करैत  
छथि | कियेक नहि आथिब उमरो त' पुर तैतानीस  
भ' गेल छनि | कानेज ठीच छथि तै गप्प हकरा  
मे पछुँ भ' गेल छथि | सुन्दर चाह पियेलनि आ  
जलखत त' एहन सुन्दर रनेने बहथि जे मोन हूँ  
आंग्र चर्छते बनी | दूनु रैन मे नैह क' गप्प  
ततेक ने होमय नगनि जे रूमाय जे आग



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

एतहिये ने बहय पवय | जखन रँहिन रँहिन क'  
भेँठ होयत ड़ैक तखन दुनिया मे दोसब बहिये  
नहि जायत ड़ैक | रँस नैहब | से हम देखत गप्प  
तुवत खतम होयराँना नहि ड़ैक | जखन क' कने  
देह सोम कवय लगलौ ता आँखि लागि गेल | आँखि  
हुजल त देखेत छी राँबह पब घडीक दुनु सुग ड़ल  
| एम्ब देखत दुनु रँहिनिक गप्पक प्रराँह ककराँक  
नाम नहि ड़ल | रँहूत कहना सुनना पब दुनु गोष्ठाक  
गप्प बकर | एम्ब पुनः आग्रह होमय लागल जे  
रँसिया रँडी था निआ आग जुडसितल ड़ैक | नहिये  
मानलनि दूँष रँडी थागए पबल |

मधुरनी २ रँजे पहुँचलौ | सुखद आनन्द भेल जे  
पचासी रँबखक हमब सासु राँनकोनी मे ठाँठ हमबा  
सभक राँठ तकेत बहिये | पहुँचते पहिने त माय  
, रँष्टी क' ड़ैकखीन जे कतेक देवी क' देवही  
| भोले स' राँठ देखेत छुनियोक | फेब माय  
कहलखिन , नहा जे आ फेब किछु था जे तखन गप्प  
कबिहे | सान त' हम सभ पँढने मे केने बही |  
हिनकब छोटकी भाँडजि , रिभा सबरँत रँनेलनि  
, मैमनी चाह रँनेलनि आ जेठकी सबहोजि  
पहुँचलनि, ओमा , आग त' जुडसितल ड़ैक | ओहना रँबकी  
रौआ जेल रँडी त' रँनेरँ कबितियनि | नैहब मे  
रँष्टी आरँय त' रँडी स' स्वागत होयत ड़ैक | से



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

देखियौ जूडसितर ठेक ते रैडीक त' ३ पारनिअ  
ठेक । ओहना अहाँक साब कहलथिन्ह जे ओना अरैत  
छथिन ते माछ त' रैनरै कबय । से अहाँ आजुक दिन  
माछ खेरैक ? हम कहलियैन , अहाँ केहन रैताहि  
जकाँ गप्प करैत छी । आजुक दिन ज' माछ भेटै  
जाय त' रूमू भवि सारक यात्रा रैनि गेल । जन्दी  
थारी नगाड । भोजनोप्राति साम मे मधुरनी स' अपन  
गाम पितरबाब चलि गेलौ ।

मधुरनी स' गाम गेलौ त' बास्ता मे सडक दीस ध्यान  
गेल । २००३ मे नीतीश जी पहिल रैब म्हायत्री  
भेलाह आ एहि क्षेत्र स' श्री बिनोद नारायण मा  
जीतलाह त' एहि क्षेत्रक लोकक स्मृति लेल बस्ती  
टोक स' बाजनगर तक पक्की सडक रैनायन गेल  
। म्हादा चाबि पाँच रैबथक अंदर सडक जीर्ण शीर्ष भ'  
हुँगए गेल अछि । एहि रोड पर एखन तक मेष्टिनेस  
नहि भेल अछि । ३ स्थित बहतेक त' होब १० सार  
पहिले बारा स्थिति भ' जेतैक ।

गाम पहुँचलौ । दरबारा लोक सब स' पूरा भवन  
हुलैक । मिष्टक रौत कान्हि ठेक । हमर पूजा अग्रज  
श्री बघुर्षि मा जी पहुँच गेल हुलाह । अग्रज सर  
नारायण जी सेहो उपस्थित हुलाह । अन्य पितियोत  
सब सब ठाम स' आरि गेल हुलाह । माष्टब साहेर



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवविज्ञान

रैथैक रौत छनि । मांशुव साहेरै श्री अमवनाथ ना  
हमव पितयौत अग्रज छथि । हम सब भाग जखन  
कोनो काज मे पहुँचैत छी त आनन्दक समूह मे  
नहाय नगैत छी । सभक आकर्षण हमव अग्रज  
बैत छथि । हुनका दसठाँ लोक घेबने बैत छनि आ  
ओ सुन्दर सुन्दर अपन गप्प सब दैत बैत छथिन  
। गप्पुचव अधिकारी छलाह , तेँ गप्पक कमी बहते नहि  
छनि । गाम अरिते नगैत अछि जेना सभठाँ तनार  
समाप्तु भ गेल । अपन गाम , अपन लोक , रैचपक  
रौत सगी सब , काकी , काका सब सँ गप्प क मोन  
आनन्दित भ जायत अछि । एहि सँ आनन्दक रौत  
आओव की हेतैक । रौत सगी याव जखन भेटैत  
अछि त मोन अनेरे प्रसन्न भ जायत अछि । भोव  
मे सब कनम गाछी गेलौ । पूवा गाम आमवस भ  
गेल छैक । ब्रह्मस्थान मे पहिबका रैव पाकवि गाछ  
एखनो याद भ जायत अछि । हमव प्रपितामह सुनाम  
धन्य नैयायकि पं० कैलाश याक नगाओन ओ रैव  
पाकवि पूवा छैन क सितरता प्रदान करैत छलैक  
। झुदा एकदिन ओ रिहाबिक रोग सहन नहि क सकत  
आ धड़ाम सँ थसि पवत । कतरौ रौडँडी पबौक, यदिव  
रैनैक झुदा पहिबका नैसञ्जिक सुंदरता आरै कहाँ  
? दुर्गा घब रिशात रैन गेल छैक । झुदा दुर्गा स्थान



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

आ माध्यामिक रिद्यनयक जमीनक अतिरिक्ता भ' बहन  
डैक ।

आग सरेरे स' चहन पहन डैक । साँम मे मिष्टक  
र्राह चचवाहा गाँर मे हेतनि । रविघाती लेन सभ  
तेयारी क' बहन डैक । उपेक्षा सभक दाढ़ी मोछ  
कपटि बहन डैक । रंगना सन् उज्जव धोती  
पहिन याव दान पव पट्टि गेल डैक । साँम मे  
मार्शन आ सुमो स' रविघाती गतरा दिस रिदा भ'  
गेल । बाँझी, मंगरौनी, पितराराव मिथिलाक प्राचीनतम  
गाम थीक । एखनो मिथिलाक संस्कृति एहि गाम सभ मे  
भेँठैत । शुद्ध मैथिली भाषा, मैथिल भेषभूषा, आ  
मैथिल संस्कार एखनो एहिठाम जिरैत डैक । मैथिलीक  
गीत एखनो नवना सभ र'ब छैप छैकाव स' गरैत  
छथि । अथलै शुभ क' नगनमा शुभे हे शुभे क' स'ग  
रविघाती रिदा लेन । मधुरनी स' जितरावपुव रेल्हाव  
सिरिपट्टी होयत कब्रखानी चौक पट्टचनौ आ नवाव  
कोठी होयत चचवाहा । सडक कतौ ठीक नहि छन  
। रिहावक विकास एहि सभ ठाम नहि डैक ।

अथरार मे जे पटैत छी ओ अथरार तक डैक  
। हमरा गाम मे दू मास स' रिजनी देरी गुम छथि  
। प्रसिद्धात्मक जिवि गेल डैक । पूरा गाँर जेनेरेछै स'  
नागन नेने अछि । मधुरनी मे १० रजे बाति क' राद



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

लागन खरैत छैक । रिहाबक विकास देहात मे  
देखायत । आखिब ए सबकार की क' बहन छुट्टि ?

मैथिलक रीबियातीक भोजन आरै आधुनिक भ' गेलैक  
छुट्टि । पहिने कम रीबियाती बहत छलैक त' स्वागतो  
सकोब नीक होयत छलैक , आरै लोक की कबत  
। जसु जनारो तसु गिब गिबी । पहिबका रीबियाती  
, आह पछु नहि । थाय मे आ थूआरै मे होब बहत  
छलैक । साहिक भोजन बहत छलैक । आसन गलैक  
, पात गलैक , दोना मे सचाब गलैक । झुदा आरै ने  
ओ लोक आ ने ओ कबाह । आरैक रौखया सभ क'  
पुछियोन जे रिमकी केकबा कहत छैक । सौजन  
केकबा कही । नहि कहता । मैथिलक अपन पबम्पवा  
छैक जे रैब अप्प थर्च मे निमहि सकैत छैक झुदा  
आडसुब रैसी भ' गेल छैक । एक दोसब स'  
प्रतियोगिता भ' गेल छैक । गवरैक रैष्टी कतरौ  
संस्कारी बहय , कतरौ सुन्दर बहय , ज ओकबा रौप  
क' ठाका नहि होयक त' नीक रौह नहि होयतैक  
। झुदा ठाका रौता अपन ककपो कन्याक रौह नीक स'  
नीक घब मे करैत छथि । ए समस्या मिथिले मे नहि  
पूरा देस मे पसबन छुट्टि । एकब निदान सबकारे ठा  
क' सकैत छुट्टि झुदा रौठक बाजनीति नीक काज  
कबहि नहि देतैक । एकब पबिषाम पूरा समाज



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

भोगि बहन अछि | १० - १३ प्रतिशत क' नेन +० -  
+३ प्रतिशत कियेक कछु कबत ?

रबियाती मे पायब धोरौक पबम्पवा समाप्तु भ' गेल  
उना आरै पायब मे माष्टियो नहि नागन बहत डेक  
| आङ्कक डाना एथनो अरौत डेक | पबिछनि स' रौह  
तक पहिन्का आ एथुनका मे फर्क नहि | एकठ्ठा रौत  
नीक देखन | रबियाती आ क' तुबत चलि देनक  
| पहिने हमरा सभक गाम मे बहक जे रौह भेलाक  
रौद रबियाती भोजन करैक आ भोजन क' कनियाँ  
क' सोहाग अर्थात् आशीर्वाद द' रबियाती तुबत रिदा  
भ' जायक | खर्चक हिसारे रबियाती ओही दिन चलि  
जाय से नीक ररैस्था | हमछु सभ ओही दिन भोव मे  
१७ ४ ०५२ क' गाम चलि एलौ | सभ भवि दिन स्वतन्त्र  
बहन | साँम मे चाह पीरि रौध रौन घुमय चलि गेलौ  
| पुवा रौध हबियब नगैत छन | शुद्ध राहा शुद्ध  
रातारवण |

१४. ०४. ०५२ आग जुहीक रौह डेक | जुही हमब  
भगिनी छी | जरेन जेरौक अछि | जरेन रैनीपठौक  
नजदीके डेक | घबक रैचा रैचा जरेन जेतैक | २१  
आदमी जरेन पट्टलौ | मधुरनी स' पकजबी तक नीक  
बास्ता छन झुदा पकजबी स' जरेन रहुत खबार बास्ता  
छन | रिजनी ओछु एबिया मे नहि छलैक | रिकासक





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कोनोठि चिह्न नहि देखायत | रैनीपठि मधुरैनी जिलाक  
एकठि अन्नमंडल छैक | जरेत रैनीपठि स ३-७ कि०  
मी० हेतैक | झुदा रैब पिछवत | रात नीक जका  
संपन्न भ' गेलैक | १९ ०४ २०१२ क' जरेत स पुनः  
गाम चलि अयलौ |

एक दिन २१.०४.२०१२ क' कपिलेश्वर स्थान गेलौ झुदा  
रोड रैब खारै | बहिका प्रथम कार्यालय देखराक  
मोन भेल | ११ रजे तक कियो नहि आयत छल  
| प्रथम कार्यालय मे विकासक नहि गंदीक रयाव रहैत  
छल | पता चलत जेकरा जखन मोन हेतैक आरि  
जायत, रैसी कर्मचारी भागने बहैत छैक | सेरा  
यात्राक रैठिया प्रभार छैक |

गाम पब २३.४.२०१२, २३.०४.०१२ क' हेल कगएक  
रात, द्विवागमन छलैक झुदा हम गामे बहलौ | गमैया  
भोज खेलौ | आ भोरे २७.०४ ०१२ क' मधुरैनी  
पहुंचलौ | आग आयुषक उपनयन मे रिष्टु रैबखाव  
जेरौक छैक | आह्वय हमर ज्योति साव श्री प्रमोद  
जीक नेत छनि अर्थात् अलकाक पुत्र | अलकाक रैब  
गछा जे हम सब उपनयन मे रैबखाव आरि | अपनो  
गछा छल जे रैबखाव जाय | रैबखाव मधुरैनी स ४०  
कि० मी० छैक | समस्त परिवार क' जेरौक बहैक  
| तीन ठा गाडी स हम सब रिदा भेलौ | मधुरैनी



১০৬ স অংক ১৭ মঙ্ ২০১২ (বর্ষ ৭ মস ৭৩ অংক ১০৬,

বর্ষকৃত্যম্ ISSN 2229-547X VIDEHA

মৈথিলী

, বাজনগব , পিপবাঘাঠ , রাঁবুঁবহী হোযত মির্জা পব  
চৌক পহুচলৌ | এতরাঁ দূব নীক সডক ডুলৌক  
| মির্জাপব সঁ রঁকখাব ৪-৩. কি০ মী০ ঠৈক | ৪ - ৩.  
কি০ মী০ এহন রঁকঠ মাছা বঁহক জেকব রঁগন কণএ  
নহি সকেঁত ছী | পেঘ পেঘ খাধি , উভব খাভব বাস্তা  
| রাঁরা খাদম জমানা ক' রাঠ | নাগে নহি জে  
পহুচরাঁ ক্ষদা পহুচলৌ | খলকাক ঘব পুস্তনী ডুলৌক  
| রাঠক দর্দ দবরাজা পব খাৰিঁ রঁসবা গেল | নাগে  
জেনা কোনো পিকনিক স্পাঠ পব খানন্দ ন' বহন ছী  
| গাম মে একঠা রঁক্ষুক স্বন্দব মদিব ঠৈক | ফন  
মিলাক' রঁকখাবক যাত্রা স্বখদ ডন | ওহী দিন ১১রজে  
বাতি মে রাপস মধুঁরনী খাৰিঁ গেলৌ | ২৭ .৪ .২০১২ ক'  
খাবাম কেলৌ খা ২+ .৪.২০১২ ক'পঠনা রাপস ভ'  
গেলৌ |

এ ডাঘবী লিখরাক ক্ষিড্ড উদ্ভাশ্বে খাডি | মিথিলাক  
কণএক গামক ভ্রমণ কযন | কতেক লোক সভ সঁ  
ভেঠে ভেল | মিথিলাক রিকাসক খরলোকন কযন  
| সবকাব এহি রঁবক ঠেঁয়াব মে লোক কে খালী  
পবতাবি বহন খাডি | পাঁচ সান পহিনে জে কাজ  
জাহি স্থিতি মে বঁহক ওহিনা ঠৈক | জে কাজ রোডক  
ভেল ডুলৌক ওহো ঠুংগঠ বহন ঠৈক | গ্রামীণ ক্ষেত্রে  
নহি মিথিলাক কোনো শিহব মে রিজনী নহি | উদ্ভাগ  
পধা রঁদ ঠৈক | রঁচাক ক্ষুন্ন ঠীক সঁ নহি চলেঁত ঠৈক  
| মিথিলাক ছদযস্থলী মধুঁরনী ঠৈক খা মধুঁরনীক



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

द्वंद्वसूत्री पंचकोसी छेक । बाँशी, मंगरौनी, पिनखराव  
पंच कोसीक द्वंद्व छेक, जतय सँ मिथिला, मैथिली  
भाषाक विकास भेलैक । ओ तीनू गाम मधुबनीक सँ  
छेक झुदा ने सडक, ने रिजनी, ने नहर, ने रीठिया  
सुन किछ नहि । झुदा सबकारी तँ छेक छेक  
छेक । हमरा जराँ चाही, हमरा हिसारँ चाही ।

ए कनापव अपन मतर

[ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ ।



अतुलेश्वर

मिथिला बाज्र आन्दोलन आ शहीद बन्धु ना

मिथिलाक जनमानसमे एकठाँ आस जागरन छेक जे यदि  
नेपालमे मिथिला बाज्रक निर्माण होएत छेक तँ एक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुबनी

प्रभार भावतमे सेहो पड़त । एहि विषय पब  
अपन-अपन रिचाव आ प्रभारक रौरे मे ठीका-  
ठिप्पणी भ बहल अछि । त्रातरा अछि जे नेपाल  
मे मिथिला बाज्यक रिक्छ सडयत कयला पब नेपालक  
मैथिल जनता एकव रिक्छ अपन स्वर उठौलन्हि ।  
हूनका लोकनिक पहिर डेग छल शान्तिपूर्ण ठग सँ  
अपन गप्प सबकाव ओ सार्सद लोकनिक समझ बाथरँ  
आ सगहि जनमानसमे एहि प्रति भारना जागकक  
कवरँ । हूनका सबक एहि प्रयासकेँ जनताक  
सकारामेक सहयोग भेटैरँ प्राबन्ध भेलासँ किछु स्मार्थी  
तत्रुकेँ रँहूत जेबसँ पक्का लगलनि आ तकबहि  
प्रतिप्रियामे रिगत जानकी नरमी दिन चलि बहल  
शान्तिपूर्ण धरना कार्यक्रममे एक अतिरादी उग्ररादी  
संगठन द्वारा रँम रिक्छाई कएल गेल, जकब कतरौ  
निन्दा कएल जाए, कमे होएत । हमबा जनैत ३  
कार्य मिथिला बाज्य आन्दोलनकेँ शिथिल कवरौक लेल  
कयल गेल छल । कावण मैथिलक विषय मे लोकक  
३ भारना छनि जे ओ जतेक रँजैत छथि ओतेक  
कए नहि पँरैत छथि, हूनका मिथिला बाज्यक लेल चलि  
बहल आन्दोलनमया आन्दोलनी मैथिलक मानसिकता देखि  
स्मार्थी तत्रुकेँ डब पैसि गेलनि, ओ सब सोचरौक  
हेतु रौंधा भए गेलाह जे आग पबि जे किछु स्मृति  
बहल छलहुँ ओ हमबा लोकनिक भ्रम छल । हूनका  
सबकेँ एतरौ डब पैसि गेलनि जे सघर्षक अन्तिम  
चरणमे पहुँचि मावि-कष्ट पब उतबि गेलाह ।



स्वर्ण खरेड्ड ओ म्फा, जखन हम रम  
रिस्फाष्टक समाचार काबिपुत्र नेपारी दैनिक मे पठनहुं,  
तँ रोगयाँ ठाढ़ भए गेल आ सोचराक हेतु रौप्य  
भए गेलहुं जे कि शान्तिपूर्ण आन्दोलनक ए गति  
उचित ? सङ्घि स्वर्ण भए उठलाह मिथिला राज्य  
संघर्ष समितिक अध्यक्ष प्रा. पबमेश्वर कापडा, जनिका  
फोन कए मात्र ए पुछलियेन्ह जे- ‘ए की ?’ ।  
एहनो रिक्छ पबिष्टितिमे हुनक धैर्य आ साहसपूर्ण शिष्ट,  
स्वनि हमब मोन किछ म्फाक नेन भारुक भए भेल,  
हुदा एकछा योछाकेँ समझ पएराक गौबर रौप  
सेहो भेल । हुनक रज्जरा छल- ‘ए मात्र धवना पब  
रैसन लोक पब कयल आक्रमण नहि छल, ए छल  
सम्पूर्ण मैथिल पब कयल आक्रमण । जेकर जराँ  
हमरा लोकनि अपन अधिकार लहक देखयराक नेन  
संघर्षमे गति खानर ।’ एहिना जखनि काबिपुत्र क  
संवाददाता आ नेपारी मैथिली साहित्यकार प्रा. श्याम  
सुन्दर शिषि सँ, जनिका सङ्घ हमब पाबिराबिक संरक्ष  
अछि आ माँक आदेशे पारि हुनक खोज खरैबि नेन,  
तँ ओ मात्र एतरे कहलनि- ‘जे एहि नेन शिवादत  
दिख पड़ैक रौप्या । एहि तबहक उजि स्वनि हुनका  
लोकनिक प्रति शिष्टा सँ माथ नुक्ति गेल ।

सम्पूर्ण घटना आ घडयत पब रिचार कएलाक  
पश्चात हमब धारणा अएह रैनल जे ए सांस्कृतिक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

अस्थिता समाप्तु कबरौक षडयंत्र छल । जगत जननी  
सीताक ३ भूमि हाग-हागसँ श्रेष्ठ सांस्कृतिक क्षेत्र  
बहन अछि, एएह श्रेष्ठता किछ गोठएकेँ सह नहि  
भए बहन छनि । ओसभ एहि क्षेत्रक रिकछ सामाजिक  
आ सांस्कृतिक रूप सँ किछ नहि क सकलाह, तखन  
सूक्ष्म राजनीतिकेँ अपनएरौक रिचार कए एहि तबहक  
घिनाएन कार्य कएनि । एही क्रममे बृहत् मधेशक  
सपना देखा मिथिलाक नाम मिथैरौक प्रयत्न कयल  
गेल । एहि प्रकारक राजनीतिक षडयंत्रक रीच  
मिथिला अपन अस्तित्वक लेल नद्वि बहन अछि, झुदा  
रौचत कि नहि ओ हम नहि कहि सकैत छी । हमब  
एकएँ मित्र छथि मणिप्रबक डा. लोचनम आनन्द सिंह,  
जखनि हुनका सँ मिथिला राज्य आ मैथिली भाषाक  
विषयमे चर्चा कएल तँ ओ कहनि जे 'अहाँक  
कहनाम आ वर्तमान अध्यायनक अनुसार हम कहि सकैत  
छी जे मिथिला आ मैथिलीक संग ३ दुर्भाग्य भ  
गेलैक जे ओ जाधवि अपन स्वतंत्रता अक्षुण्ण बखन  
बहन तापवि कतेको प्रदेशक भाषा, साहित्य आ  
संस्कृतिकेँ प्रभावित करैत बहन, झुदा जहिया सँ  
ओकर राजनीतिक प्रभाव स्फूर्ति होएत गेलैक, ओ  
एकएँ बृहत् संवचनाक माँगमे बँसैत गेल आ आग  
अपन भाषा आ क्षेत्रक अस्थिता रैचैरौक लेल नद्वि  
देखल जा बहन अछि । एहि दुर्भाग्यकेँ समाप्तु कबरौक  
लेल सर्वप्रथम अपन राज्यक स्थापना दिस सम्पूर्ण मैथिल



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

लोककेँ अग्रसब होएँक चाही । - हुनक आ कथन  
हमबा नेपातमे मिथिला बाज्यक लेल संघर्ष क बहल  
मैथिल जनताक सोच मे समानता देखौलक । कहि  
सकैत छी जे ओ लोकनि पुनः अपन अस्मिता आ  
पुर्नमे मिथिलाक सर्ग कयल गेल रारहाव प्रति सचेष्ट  
भए उठलाह अछि आ सद्यःघटन घटनासभसँ आगुब रैसी  
उर्जा प्राप्त कबताह ।

आग धरि हमबा जनैत बाजा शिरसिह आ  
हुनक मैथिल सिपाही केँ छोड़ा केओ मैथिल मिथिला  
बाज्यक लेल शहीद भेलाह अछि से हमबा बुझल नहि  
अछि । झुदा एहि रैब मैथिल जनता अपन धवती  
पब डष्ट संघर्षक माझ पएलनि आ ओहि यत्न मे अपन  
प्राणक आहुति तक दए देलन्हि । हम प्रत्येक शहीदक  
प्रति नमन राज करैत छी, ओसभ अनचिन्हाव होयतहुँ  
चिन्हाव दुलाह कावण ओ सभ मैथिल दुलाह, झुदा  
ओहि प्राण आहुति देनिहाबि एकठा शहीद, जनिका हम  
मात्र मैथिलक रूपमे नहि, एकठा संघर्षशील कलाकावक  
रूपमे जनैत छलहुँ, दुलीह शहीद बङ्गु न्या ।  
जनकपुर मे बहरौक समय रा कालक्रममे कथनो  
जयरा काल हुनका सँ भेंट निश्चय होगत छल झुदा  
रैसी परिचय नहि, कावण ओ एकठा नाष्ठकर्मि दुलीह आ  
हम छलहुँ एकठा शोधार्थी, जे अपन कम सँ कम  
शोधक समय अपन विषय सँ गतब जएँक प्रयास  
नहि करैत बही, आब जे करैत होथु झुदा हम



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

अएह करैत छुनहूँ । मिनाप मे एकठ्ठा सशङ्क महिला  
कलाकावक नाम छल बेथा कर्ण आ बेथा कर्णक पश्चात  
सभसँ लगनशील आ कर्मशील महिला कलाकाव हमबा  
मिनाप मे देखाएल छलीह बङ्ग । हुनक रिषय मे  
रहूत किछ एहि सँ पहिने पढ़ने छुनहूँ आ सुनेत  
छुनहूँ आ जहिया सँ शरीर भेलीह तँ आव रेशी हुनक  
रिषय मे जानल । झुदा जखनि हम हुनक रिषय  
मे पढ़ैत छुनहूँ तँ हमब मोन मे अनायास एकठ्ठा  
भारना आयल छल जे एहि रैब जनकपुर जायत तँ  
निश्चय हुनका सँ भेटै कबर, आ एकठ्ठा बगकर्मक  
जीवन पब उपन्यास लिखलक प्रयास कबर । काबण  
हमबा लोकनि रहूत किछ एहि दुआरे नहि क पढ़ैत  
छी जे एहि लेल अर्थ चाही , रारस्था चाही, एहन  
परिस्थितिमे कोना हेत, झुदा बङ्ग मिथिला सन  
पबम्परादी सोचक तीर्थ स्थान मे अपन उद्देश्य आ  
लक्ष्य पूरा करैत बहलीह । एहि लेल हुनका कतहूँ  
भेटैत छलनि मान तँ कतहूँ अपमान । झुदा ओ  
एकठ्ठा उपन्यासक कथा नायिका जेकाँ छल  
बहलीह, कतहूँ ओहि मे ब्रेक नहि, सहज-निर्मल पाव  
जेकाँ रहैत । हमबा सभक जीवनमे जखनि  
कठिनता अरैत अछि आ ओहि सँ लड़लामे अपनारै  
सामर्थ्यहीन भएत छी, तखनि एहन एहन मैथिलक  
जीवनसँ दुर्जा भेटैत अछि, ओहि समष्टासभसँ लड़लामे  
लेल सशङ्क मानसिकताक जन्म होएत अछि । जहिना





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

सीताक चरित्र एखनहुँ हमवासलक नेन आदर्शतम  
कपमे उपलब्ध छि, ठीक तहिना बङ्ग सेहो सम्पूर्ण  
मिथिनारसीक हृदयमे रसतीह । बङ्ग भौतिक रूपेँ  
अपन शरीरकेँ लागि देन, झुदा हुनक आमो मिथिनार  
रसात, पानि, ओकर परिवेशे आ लोकक आमो मे  
जरीरैत बहत सदिथन । एतए डा. धीरेन्द्र क ओहि  
पाँतिक, जाहिमे नाबीक आदर्शतम रूपकेँ प्रतिष्ठापित  
कएन गेल छि, सओ शहीद बङ्गक प्रति श्रद्धांजलि  
राज करैत छी-

नाबी थिक आपाव प्रकषकेव , जाहि रूपमे देखी,  
जनना, भगिना, मित्र, पनी रा दहिता नए पेथी ।  
नाबी थिक पर्याय ममत्त्व, सहनशीलता भारी  
जते रतहपन प्रकष करैए, सहए सदसँ नाबी ।  
सरसही धवती थिक नाबी, आव प्रकष आकाशे,  
जे रर्यण कए अपन मोनसँ उपजरीत छि चास ।  
नाबी प्रकषक कागज थिक जग पव लिखगछ ओ  
करिता,  
नाबी शितल चन्द्र-ज्यासेना बहओ ओना नव सरिता । ।



ई कनापब अपन मतिर  
[ggajendravisideha.com](http://ggajendravisideha.com) पब पठाड ।



चंदन कुमार सा

सबबा मदलेग्रेब स्थान

मधुरैनी, रिहाब



## बिहनि-कथा

### सद्वृत्ति

अनहेव भ गेलौ.....कोना के आरै कष्टते ओकव  
पबिरावक दिन..... ? कठ लागत रैष्टी छै घब मे.....  
दू ठा सतान मे रैष्टी जेठ छै.....कोना तेतग  
ओकव रियाह ? किशेन..असेसबक रैष्टी ...चौदहे  
रैबथक छै.....कोना के सम्भावते घब ? कोना  
कबते रैठिनक रियाह..... ? रैशी जथो-पात नहि छै  
जे रैच नेत. पाँचे कष्टा खेत छैक. ओकरो यदि  
रैच नेत तखन थेते कथा ? अनेको प्रश्न..अनेको  
झूठ...सगरो सरेदना...सगरो गाम एकहि ठा  
रात..जुबम भ गेलौ.....भवत जुथानी मवि गेल  
असेसब.....चालीसे रैबथक अरैस्था मे..नहि जानि कोन  
रैमावी धेतके..ओह ....कलारोहठ...नहि देखत जागछ  
किशुनमा मायक कानरै..हे भगरान...आ की भग  
गेलौ..... ?

हाक-डाक छै.....के जेते कठियावी.....एगावह गोष्टे  
हिम्मत क के रिदा भेल. आगा-आगा किशेन हाथ मे  
आगिक कोना नेने रिदाह भेल...झुथानि देतके..धपकि  
उठत अडिया..कक्का .....हरोठकाव भ कानय लागत  
किशुनमा हमबा कान्ह पब मुड़ ी बखने...सतोष



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

रौन्ध....नहि भेल एहि सँ आगाँ किछ कहल हमरो..कँठ  
रौन्ध गेल जेना.

तीन दिन रीतल..रैसाव छै आग..कोना हेते  
काज..गंगे कात मे रँठा या हेते-कहरिये  
हम..नहि-नहि, ३ ठीक नग हेतग- चष्ट द  
कहरथिन्ह पढ़ा कका. छप भ गेल बही  
हम..कनिष्ठा, अहाँ कोना तबहक चिन्ता नहि कक..हमबा  
नेल जेहने हमर अप्पन रैष्ठा-पुत्रोह् अछि तहिना  
अछि छी. हम कबरँग असेसबक श्रिष्ट. ओकर श्रिष्ट  
गामे मे हेतग. अहाँक जतेक खर्च कबरँग हो से  
कक. अहाँक जे केने सतोष भेटै से कक. कोना  
तबहक रिथुति नहि बहतेक.. -असेसबक कनिष्ठा के  
कहरथिन्ह पढ़ा कका. केराबक अछ मे रैसनि  
किशुनमा माय आ दवरँज्जा पव रैसन किशिन, किछ  
नहि रौजल बहय. "हाँ-हाँ, नीक जेकाँ श्रिष्ट त  
हेराँके चाही जाहि सँ मृतक के सद्गति प्राप्त हो"-  
रौजथि पलित कका.

पँचदान श्रिष्ट आ दुनु साँम सौजनिया होयर निश्चित  
भेल.एकादशी.....द्वादशी...रँड..रँड १..पचमेव..रँड नीक  
काज भेलग. जेहने परिव्र असेसबक मोन बँहक  
तेहने परिव्र काज भेलो.सभ सामग्री एक पव एक.....  
जस दैत नोतहावी....सौँसे गाम.



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

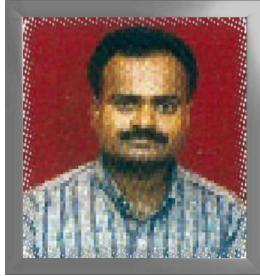
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

माहु-मोसक प्रात, आगा-आगा किशुन आ पाहुँ ओकव  
माघ के चौक दिस सँ अरैत देख मोन मे शिका  
भेन.रग अरितहि प्रह्निये-कत सँ अरैत छह. ?  
"समावपुव सँ"-कहक किशुन.मोनक शिका आओव  
रैदा गेल. तखनहि पाहुँ सँ पठ् आ कका के  
अरैत देख सब शिका दूव भ गेल छह.बजिम्प्री  
आफिस सँ ? ...झूठ सँ रहवा गेल हमबा..मुड़ १ मुका  
नेक किशुन..किशुनक हाथ मे मुलेत बसगला भवर  
पत्नी देख अनायास झूठ सँ रहवा गेल-"सद्गति भेट  
गेल असेसब के".

ए कनापव अपन मतिर

[ggajendr.a@videha.com](mailto:ggajendr.a@videha.com) पब पठाड ।



डा. कैलाश कुमार मिश्र

कथा



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## चन्दा

बाघरकै चन्दाक संगति मोहनगब गङ्गात डुनन्हि ।  
बाघर आ चन्दा समरयस्क बहथि- तगभग पद्म  
रैथक । दु-चाबि मासक दुनूमे कियो छोटै तँ कियो  
पेघ । चन्दा डुनीह सारिबि, सुन्दरि । शीबीसँ प्रसू  
झुदा जोखगब नै । सारिबि चाम झुदा चमकैत ।  
आँखि मध्यम कदक झुदा बसगब । ठोब मोठै झुदा  
चहँगब । नाक पातब आ नोक जेने । शायद बाघर  
केब दृष्टिमे सुन्दरताक नीक रिरबण यएह डुनन्हि ।  
चन्दा डुनीह चँचल, कनीक ठसकसँ भवत आ ई  
गुमानमे तनत जे ओ दरँग पिता एरँ दरँग परिवारसँ  
डुथि । चन्दाकै केरत दु रैहिन आरो डुथिन्ह ।  
एक्का भाग नै । ताहि चन्दा अपने-आपकै रैछै  
रुनैत डुनीह । पन्द्रहम रयसिमे अत्राक उपवान्तो  
चन्दा अपन उन्नत रक्ककै नै मपैत डुनीह । ईमे  
हुनक उदेस अपने-आपकै काहक रैनैरक नै  
डुनन्हि रैकै रैछै जकाँ रैछै डुथि तग रातक  
गुमान । झुदा जूथानीक दवरँज्जा खँखँरैत रक्क,  
नाक, आँखि गुमानसँ की मतनरँ । चन्दाक गुमानमे  
हुनकब शीबीक खँग अपन काहकताक भारकै  
अनेरे प्रदर्शन कबए गङ्गात डुनन्हि । आव-तँ-आव



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

चन्दा बाघर एरै अन्य समरयस्की छौड़ । सभ सँगे  
कथनो करैछी तँ चोवा-बुक्की खेलाए नगैत छलीह ।  
जखन करैछी खेलागत छलीह तँ चेतकहँसँछी.....  
डी...डी...डी... करैत हुनकर रक्ख सेहो शिर्दक नयक  
संग सँगैतक धुनमे मस्त भऽ डुपब-नीचा होमए  
नगैत छलन्हि । जेना चन्दा बगमचक बनो नर्तकी  
होथि ।

कतेको रैब जखन चन्दा करैछी पठौत बाघर दिस  
खरैत छलीह, बाघरकेँ माबरौक हेतु तँ बाघर  
चन्दाकेँ पकड़ौक प्रयास करैत छलाह । प्रयास ए  
जे चन्दाक सँस छूँछि जागन्हि । अन्दा चन्दा ई  
प्रयासमे जे रिन सँस तोड़ने बाघरकेँ छु ली, आ  
रिन बाघरक चँचरमे करैछी पठौत अपना दिसि  
आपस भऽ जाग । एक-आध रैब चन्दा अपन  
वर्णनीतिमे सहजो भेलीह । अन्दा अन्ततः छलीह  
नडकी । केना सकतथि, बाघरक ठोस, रीनीष्ट कद-  
काठीक समझ ? अधिकतम समैमे बाघर चन्दाकेँ  
पकड़ा लैत छलथिन्ह । आरै चन्दा बाघरसँ अपने-  
आपकेँ छोड़रौक हेतु पूरा प्रयास करैत छलीह ।  
बाघर सेहो अपने-आपकेँ ई प्रयासमे लग्न लैत  
छलाह जे रिन सँस छूँछि चन्दा लै छथि । ई  
नोक-मोकमे रिन बनो गतत भारनाकेँ कतेको



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

बैब छीना-सपष्टी करैत बाघर केब हाथ अनायास  
चन्दाक रक्कपव लागि जागत छवन्ति । चन्दा बूनेत  
छनीह जे बाघर कनो दोसब रिचावसँ ए सब नै  
क२ बहनाह थडि । तँए चन्दाक झूहपव कनो तामस,  
वज्जक भार, प्रतिकाव, घृणा आदिक भार नै अरैत  
छवन्ति । रिक्कन स्रभारिक बँहत छनीह । झूदा  
कहि नै किएक बाघरक कठोव हाथक स्पर्शकेँ अनुभर  
करैत छनीह । हुन्का किछ-किछ होमय गणैत  
छवन्ति । आँखि अनेरे आनन्दातिरेकमे झूना जागत  
छवन्ति । की होगत छवन्ति तकवा ओ शायद केरन  
अनुभर क२ सकैत छनीह, ओकब रँखान शिर्दक  
माध्यमसँ संभर नै । एहने हावति बाघरोकेँ होगत  
छवन्ति । नहु-नहु बाघरकेँ एना लाग्य गगवन्ति  
जेना चन्दाक रणैव जीरन अर्थहीन हुअ । चन्दासँ  
जग दिन बाघर भैँठ नै कबथि तग दिन मोन थिल  
भ२ जान्ति । चन्दा सेहो बाघरसँ ओतरे सिनेह  
करैत छनीह । झूदा बाघर आव चन्दाक सिनेह छव  
निशेछन ।

बाघर छनाह आर्थिक कपसँ रिपल झाँझा कुनक  
रौनक । एकब ठीक रिपवीत चन्दा छनीह एक स्रभस्य





ब्रौह्म कन्या । चन्दाक पिताके तेबह रीया ठोस  
खेतीहव जमीन आ खुर नीक लगानी केव कार्य चलैत  
हुनन्हि । चन्दाक पिताक नाँ हुनन्हि ब्रुसेसव ।  
ब्रुसेसव रैदाँ हुनाह । हुन कुँडा मर्द, पहनरान, केरन  
अपन नाँ आ सखाक ज्ञान हुनन्हि । लगानीक  
लगका रैदाँके क२ ४२ क२ लिखैत-पढ़ैत हुनाह ।  
गरीर लोक सबके सुदिपव ठाँका दैत हुनन्हि ।  
रैन्धकमे गहना, रत्न, जमीनक कागत अत्यादि बाधि  
लैत हुनन्हि । सुदिक दबसुदि जखन गरीर लोक  
सभ आसीन-कातिक मासमे भूखे मवय लगैत हुन तँ  
ब्रुसेसव रौं ओतए सरैया-डेओठ पब पान अथवा आन  
अन्न लेमय जागत हुन । ब्रुसेसव रौं अपन हाथे  
अन्न जोखैत हुनाह । एक मोनक रैदना हमेसा 38  
सेव दैत हुनन्हि । ओछमे अनाजमे धूत-माँ  
मिनन । डाँठन पथवा अथवा आन कनो मोँका  
पान । आ लेरैय कान एक मोनक रैदना 41 सेवक  
आसपास लैत हुनाह ।

कतेको लोक पाग दैयो दैत हुनन्हि तैयो अपन  
लगानीक लगका रैदाँ नाँ कटैत हुनन्हि । चाबि-  
पाँच रैथ चूप भ२ जागत हुनाह । केव एकाएक एक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

दिन रैही तऽ कऽ ओग ब्यक्तिक घबपव महाजन रैनि  
पहुँचि जागत दुनाह, तगेदा हेतु । रैचावा  
परेशान । झुदा अपन रैगँगीसँ चुब बूनेसब राबू ओग  
ब्यक्तिकेँ गबदनि अपन गमझासँ जकड़ा जेत  
दुनाह । फेब ओकवा नाचाव कऽ दैत दुनथिन्ह  
पँचेती रैसेरौक जेत । पँच की तँ दुह-सात  
चमचाक दत । सब बूनेसब राबूकेँ हँ-मे-हँ  
मिनरैरैना । सब हुनके सँहक रात कहएरैना ।  
रैचावा असहायक रातकेँ के सुनेत थि ? नाचाव  
कऽ ओग ब्यक्तिसेँ ओकव जमीन आव गहना गत्यादि  
हथिया जेत दुनाह । अही प्रक्रियासँ चाबि रीयासँ  
तेवह रीया जमीन भऽ गेल दुनन्हि बूनेसब राबूकेँ ।

एकरेव तँ बूनेसब राबू एहेन काज केनन्हि जेकवा  
लोक अथनो धवि नै रिसवत थि- नृशंसकावी,  
जघन्य, हत्या समान, रैगँगी साम्प्रत हत्या । एना  
भेलैक जे झुनझुनमा मनाह बूनेसब राबूसेँ अपन  
पनीक गलाजक हेतु तीन सए ठाका सुदिपव  
जेनकन्हि । ३ कहि जे दुह मासमे सुदिक सँग  
आपस कऽ देतन्हि । झुदा किछु कार्षणि एक रैथ  
धवि आपस नै कऽ सकतन्हि । एक दिन प्रचण्ड



जाडसँ कपैत छैनछैनमा बाघरक दवरैज्जापव आरि  
बाघरकेँ पितामह सँगे घुब तापि बहन छन ।  
तमाकुर छना बाघरक पितामहकेँ देनकन्हि आ अपनो  
थेनक । किछ कालक रौद अपन एक नठैतक सँग  
बूजैसब रौबू सेहो बाघर केब दवरैज्जापव घुब  
तापथ आरि गेलाह । छैनछैनमाकेँ देखैत मातब  
हनुका तामस चढा गेलन्हि । रिभत्स गाबि देमय  
नगनथिन्ह ओकबा -

“रौ रैनान ... ।द । तू एखन धबि पाग आपस नै  
केनय ? ”

छैनछैनमा कहए नगनन्हि-

“मानिक । हमब हाथ तंग छडि । रैछा कलकतासँ  
आरैरैना छडि । अरिते मातब दह देर, रिथुत नै  
कवरै । ”

झदा बूजैसब रौबूक तामसे दूरस्मि रैनन छलाह ।  
आरो गाबि पढैत गमछा छैनछैनमाकेँ गबदनिमे हँसा  
उठा नेलथिन्ह । छैनछैनमा नाचाव भह यैघयाए  
नगन । बूजैसब रौबू सोहाग चमेछा ओकबा ओकबा  
कानक जाडि मे माबनथिन्ह । हे भगरान । जाडक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

महर्षि

मस, रूठ शिबीर, भुखाएत पेठ, जीने काया, रैचावा  
हुनहुनमाक कानसँ खुन रहए तगलक । झुदा तखनो  
रुनेसब राँरुकेँ सतौष नै भेलन्हि । गमछासँ  
हुनहुनमाकेँ घिसियारै तगलाह । ३ देखि बाघरकेँ  
पितामहकेँ भेलन्हि जे कही हुनहुनमा हुनके  
दबरँज्जापब नै मवि जान्हि । ओ रीचमे आरि  
गेलन्हि आ कहथिन्ह-

“नै रुनेसब । ३ हमबा दबरँज्जापब आएत अछि ।  
मवि जएतैक । अतए किछ नै कबहक ।”

ई रातपब रुनेसब राँरु कहथिन्ह-

“ठीक छै काबी कक्का, हम ई साब मलहाकेँ धोरिया  
गाछी नऽ जाग छी ।”

३ कहि हुनहुनमाक गबदनिमे हँसाओत गमछा घिचेत  
धोरियो गाछी दिसि नऽ गेलन्हि । मबता क्या नही  
कबता रैचावा हुनहुनमा जेना कसाग तग गाए  
जागत अछि तहिना रुनेसब राँरुक सँग रिदा भेल ।  
आ रुनेसब राँरु जखन धोरिया गाछी गेलन्हि तँ एक  
रात मवि हुनहुनमाकेँ धवतीपब पाछाँ पुनः एक ईब  
मावथिन्ह । फेब अपन ठेगा ओकब निकासमाछा -



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गुदामात्रा-मे घुसा देरथिन्ह । खुनक बूछुका निकति  
पड़लैक । रैचावा ओतहि कनेत रैहेशी भऽ गेल ।  
झुदा बूझसब रौबूक चेहवापव अफसोस नहि  
भेलन्हि आ झूहसँ निकलन्हि-

“ठैगो अपरित्व भऽ गेल ।”

झुनझुनमाकेँ ओतहि ओही हावतिमे झोड़ा अपन घब  
दिसि रिदा भऽ गेलाह ।

नगभग आपा घण्टाक पछाति ई घण्टाक जानकारी  
झुनझुनमाकेँ रैठाकेँ नगलैक । जो ओकवा उठा कऽ  
घब नऽ गेलैक । पैसा नै बँक तँ देसी दर्राग  
प्रावम्भ केरकैक । भवि पैठ खेराक सेहो सामर्थ्य  
नै, तग मनुक्खपव एहेन अत्याचार । रैचावा  
झुनझुनमा 10 दिनक भीतव कवाहि-कवाहि कऽ मवि  
गेल । मवी गेल से नीकेँ भेलैक । अन्धथा दर्द स  
अनेरे परेशान बँहत । मनुक्खपव मनुक्ख द्वावा  
एहेन अत्याचार । हे भगरान किएक नै देखैत छी  
एहेन लोक सभकेँ । किछु अही तबहक रिचाव बाघर  
केव लोक किशोब मनमे अएलन्हि जखन झुनझुनमाकेँ



সম্মুখভাগে পতা নগতনহি। সূদা ব্রহ্মসব বঁৰুক  
ছদৈপব কনো শ্ৰভাৰ নৈ পড়নহি। ও অগন  
বঁৰুগবীবীমে নাগন বহনাহ।

ব্রহ্মসব বঁৰুক দু ব্ৰহ্মকৃতিত্ৰ ভুতনহি। বহনাক  
মামনামে ও বঁৰুগ, ছদৈহীন, কমাগ আ কগুয়া  
ভুনাহ। ঠিক একব বঁৰুবীত পিতাক কপমে স্নেহশীল,  
উদাব আ খনুবাগী। বাঘরকৈ চন্দাক নেনপনক দৃশ্য  
যাদি আৰুএ নগতনহি। জখন চন্দা চাবি-পাট বঁৰুক  
ভুনাহ তঁ ব্রহ্মসব বঁৰু সদিবাক চন্দাকৈ অগনা  
কনুপব চত্ৰনে বঁহিত ভুনাহ। দূবাক খন্ত নৈ।  
চন্দাকৈ সদিবাক চন্দা বঁৰুগ কহি সম্মুখিত কৰৈত  
ভুনাহ। চন্দা অগব কনো কাবশে কসি জাগত  
ভুনাহ কিংবা কনৈত ভুনাহ তঁ ব্রহ্মসব বঁৰু চন্দাকৈ  
কোবামে উঠা গীত গাৰি-গাৰি বঁৰুগক শ্ৰয়াস কৰৈত  
ভুনাহ। গীতক আখবি কিছু ঐ শ্ৰকাবক হোণত  
ভুনাহ-

“চন্দা তোৰে দেবৌ গে

সভ ধন তোৰে দেবৌ গে



तेबह रीया के जोता चन्दा तोरे देरौ गे

गहना तोरे देरौ गे

सोना-कपा तोरे देरौ गे.... । ”

आ ग़मानसँ तनर चन्दा शिने: शिने: कानरँ रँग कए  
अपन पिताक चौबगव छातीसँ टीपकि जागत छलीह ।  
पिता-पुत्रीक अगाध प्रेम । एहेन प्रेम जगमे  
प्रेमापिक्त्य आ सिनेहक धाव सदिखन रहैत बहैत  
छल ।

बाघरक किशोव मनमे बूनेसब राँबूक प्रति धोव घृणा  
उपेन्न होमय लगलन्हि । मन होन्हि जे ‘बूनेसबार्के  
उठा कइ पठकि दी रीच चौरङ्गियापव । नाते-नाते  
खनि दी ।’ छुदा आ हुनका नीक जकाँ ज्ञात छलन्हि  
जे बूनेसब राँबूक समझ हुनकव परिवारक अस्तित्व  
शून्य छन्हि । आव-तँ-आव बाघर केव पिता सेहो  
बूनेसब राँबूसँ भृश लेने छलथिन्ह । हेव बाघरकेँ  
रिचाव अछलन्हि जे किएक नै चन्दासँ रात कएन



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

जाए ? झुदा फेब ओ अपना-आपके चेतनाह ।  
चन्दा तै थीकीह अन्ततः बूझसरेक रैष्टी ने । साँपक  
गर्भसँ बनो हंस जन्म लेबकैक अछि । साँपक नैना  
साँपे जकाँ डसरे कबते । चन्दाके कहने की  
नाभ ? डुपबसँ अगब चन्दा अपन पितसँ शिकागत  
कबतीह तै हमरो घबमे रिपञ्चित भूकम्प आरि  
जाए ।

...आ सोछेत बाघर चूप्पी साधि लेबन्हि । झुदा  
जखन-जखन झुनझुनमा रैष्टीके राँपक कर्म करैत  
देखैत दुनाह तखन-तखन घृणा आ पश्चातापक  
ज्वाबिमे जवए लगैत दुनाह । झुदा दुनाह रैरशि ।  
गचाव । । मवता क्वा नही कवता । । ।

कहि नै किएक चन्दा बाघरके रिना अपने-  
आपके अनेरे रैचैन अन्वभर कबए लगबन्हि ।  
एकरैब बाघर आठ दिनक हेतु मातृक गेनाह ।  
चन्दाके रिना कहने । चन्दा बाघर केब घब लगका  
पोखबिमे नहाए अएलीह । जखन बाघरके नै  
देखबन्हि तै मनमे आ लेबन्हि जे बाघर कतौ  
अम्हब-डम्हब चलि गेल छथि किछु क्षणक हेतु ।





मन तै नै नगनन्हि । छप-चाप जल्दी-जल्दी  
सुगनाही घाँपव जाए पोखविमे दु-चावि डूम  
देगीह । एक नोष्ठा अछिजन नए ओतक पचनूथी  
महादेरपव आपा मनसँ जल ठावनन्हि । बाघरसँ भैँ  
नै भेनन्हि ई रातक कचेष्ट करैत घब चलि  
गेगीह । घब जाए आपा मनसँ आपा-छीपा अल्ल खेगीह  
आ सोने आमक गाछी आम ओगवए जेन चलि  
अएगीह । आमोक गाछीमे चन्दाकेँ मन नै  
नगनन्हि । चन्दा मोने-मन भगरानसँ प्रार्थना कवए  
नगगीह-

“हे भगरान । जल्दी-जल्दी बाति कक । सूति  
बही । जल्दी-जल्दी भोव कक जे बाघर भैँ  
जाए । ”

झुदा बाघर तै आठ दिनक हेतु गामेसँ राहव भ२  
गेन दुगाह । खेव । चन्दा झुनहावि सँमक राँद घब  
अएगीह । माए प्रह्वनखिन्ह-

“चन्दा, अतेक देवीसँ किअए अएनैह ? ”

चन्दा रँजगीह-



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

महर्षिगिरि

“सोचा सभ आम तौबरौक बिबाकमे छल । सोचलौ  
जखन मथना बथरौब आरि जाएत तखने कम  
छोडरौ ।”

चन्दाक ई जरौरसँ प्रसन्न भऽ बुल्लेसब रौरु अपन सीना  
छोड १ करैत पनौकेँ कहलथिन्ह-

“बुल्लेसब, कतेक ज्ञानी आ बुल्लेसब अछि अपन  
चन्दा ? चन्दा सन भगरान अगब रैषी देखि तँ  
रैषीक बन प्रयोजन ?”

तएपब चन्दाक माए कहलथिन्ह-

“अहाँ अनेरे रैजैत छी । गडकीकेँ बनो हावतिमे  
साम भेला उठब घबसँ राहब नै बहरौक चाही ।  
समए-समए खवाप चलि बहल छैक । बनो ऊँच-नीच  
भऽ गेलैक तँ की हेलैक ।”

झन्दा बुल्लेसब रौरु कतए छप ह्वाँवरौना छलाह ।  
कहलथिन्ह-

“की रौजि बहल छी ? केकवा हिम्माति छैक जे हमब  
चन्दा संग कनीकरौ रैदतमीजी कबए । जे सोचरौ  
कबत तकब आँखि निकालि नैरैक ।”



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

झुदा चन्दा अपन माता-पिताक राक्-हाङ्गमे हिस्सा  
नै जेवन्हि । रिना बनो हर्ष-रिषादक छपचाप ठाढ़ा  
बहनीह ।

अमरी: .....

ई कनापब अपन मतिर  
[ggajendr@videha.com](mailto:ggajendr@videha.com) पब पठाड ।



सन्दीप कुमार साहू



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

बिहारी कथा

## अब बिहारी

काकी गोब नगै छियनि, रैसथु ।

-के, उडीसाराणी कनियाँ ।

-है काकी, निके बह छथि ।

-की ठीक बहर कनियाँ, तैयो ठीक छी । बूढ-प्रवान  
भेलौ, हमबा सबकेँ तँ अ प्रवरा हरा जान जेरै  
नगैए । सौँसे डाँव छैहूँ रातबस कनकनाए ।  
कोनो दराग नै काज करैए ।

-आरथि, रैसथु । एक तँ कतेक दिन पब भैँछ  
भेलथियह ।

-नै कनियाँ । आँगनमे रैछ काज छै । आँगँ ये  
कनियाँ, बुखनो रैछा आँख अछि ?

-है काकी, मबनीक राँवुओ एलथिन ।

-कनियाँ रैछा सब सेहो एल्लिह ।



-नै काकी । अथैन रँचा सभक गवर्मीक परीक्षा चले  
छै, तहि दूधारे ओकरा सभकेँ नै खननिई । आरँ  
गर्मी छुट्टीमे सभ आम निछी खाग नए अरँ छन्हि ।

-आँग यै कनियाँ, मबनी तँ आरँ रियाहराती भऽ गेल  
हएत ।

-हँ काकी, ओकरे कतौ नडका तारै गेल छथिन ।  
काकी माँथ केहेन नागौ छनि । आरँथू कनी तेन दऽ  
दै छियनि ।

-नै कनियाँ । आग जाए दिख, आउव दोसरो दिन  
आएरँ ।

-माँथ फहवाग छनि तेन रँन ।

-से तँ ठीके कह छी कनियाँ । हमब कसना डिल्लीसँ  
हमबा नए एगो नरबतन तेन ठँ १ रँना, पाँचठा  
सारून नहाग रँना, दू किनो सर्फ पठा देनक, जे माय  
नगा आ जे किछु घँठेतो तँ होन कबिन्हि ।

नै अथैन कनियाँ बरि बायकेँ समय छै, भूसा गर्दा  
सभ माथमे भवि जागत छै ।

-रँडु गपशिप केहो कनियाँ, आरँ कनी जाए दिख  
कनियाँ ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

-ठीक छै काकी जाथू । हमरूँ भानस कबह जाग छी  
काकी । काकी हिनका भनसा भह गेलनि ।

-नै कनियाँ । हमरूँ जाग छी । कनीक पढ्खावमे सँ  
भोरे खबिकौछ तौडनिई, तकरे चक्का रँना कह  
मोरेरै, कनीक खातिर दह कह । तेहन हमर पुरोह  
भेन कनियाँ जे अखेन तक दानि तबकारी नून, से  
नून-जाडव रँना दैए, कहियो अखेन । कहियो अख  
तीमन नीक नै रँनरैए । कनियाँ अहाँकेँ नीक गेलैए  
खबिकौछ ।

-हँ काकी, हमरा सरँकेँ ग कतह पारी ।

-ठीक छै तह हम अपना छोट्टा नातिन दिया पठा  
देरँ राँठीमे । जाग छी कनियाँ ।

...

-रँडकी दीदी, रँडु गप्प सबक्का चलै छलै बसना  
माएसँ । की रात छै, अहाँकेँ गप्प जादु सिखराक अछि  
की ?

-नै छोट्टकी । तौवा सबकेँ यएह पपियाहा मन सब  
दिन मन खराप बाथे छै ।



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

-ने ये दीदी । एको महिना ने भेले, सुगौनारानीके  
देहपव पाँचै देरी पठौने छले । कतेक उमा ग्वा  
एले, तखन जा क२ कनीक खल-पानि थाए लगले ।  
सब कह छै हकर डागन छै । छेठका रैठके माबि  
क२ सिखलके ।

-छोड जा सब रात । तू सब गामघबमे बहि क२  
खिना सरके डागन खाँव जोगिन कह छिहिन । जा  
सब खरिग्रीस छिई । समाजमे एह सब रातसँ  
नगड़ । होगत बैह खाँव एक दोसरके डागन  
कह ।

ई कनापव अपन मंतर

[ggajendr a@vi deha.com](mailto:ggajendr a@vi deha.com) पव पठाड ।



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली



किशन कारीगब

आरं हम ज़रान भ गेनहूँ

(हाम्य कथा)

समाचार पटि के स्टूडियो सँ निकलने बही कि  
मोरांगनक घण्टी राजन हम धबधबा के फोन उठैतहूँ  
की ओम्ब सँ खराज आयन हो कारीगब आरं हम  
ज़रान भ गेनहूँ। अ सुनि त हमबा किछ ने खुबा  
बहन छन झुदा तगयो हम सहस कए के रैजतहूँ  
अहाँ के रैजि बहन छी। ओम्ब सँ फेब खराज  
आयन हो कारीगब एना किअक रैताह जेका रैजेत  
छह खराजो ने चिन्हित छहक। कहथ त गहे गप  
ज कोनो रैचिया तोरो फोन कए के कहने बहिन  
त तोरो मोन धनकटिया मशिन जेका धक-धक  
कबितह। झुदा हम कहैत छियह त तो रैहला  
रैतियाथत छह।





हम रँजनहूँ से गप त ठीके  
झुदा अहाँ के राजि बहन छी से कहूँ ने तखने  
चिन्है ने कि ओम्बर सँ खेब अराज आधन हो रँचा  
हम रौरा भोलेनाथ राजि बहन छी तोरे स भेँठे  
करैए लेन आधन दुनहूँ । ए सुनि हम रौरा के  
प्रणाम कए प्रदुनियेन यो रौरा अहाँ कतेए छी । ओ  
थिसियाअत रँजनाह हो रँचा हम युनिरार्ता नक ठाठ  
भेन छी तोहब आकाशिराणीरना सब कहनक जे रँसना  
रँवद नए के भीतब नहि जाए देरै । तहि दुआरे  
हम युनिरार्ता चलि अएनहूँ अहि ठाम कोनो बोक ठेक  
नहि रँसना रँवद मगन स घास खा बहन अछि आ  
हमहुँ रौद मे रँसना छी । तू जल्दी आरह देखैत  
हुनक सम्मान मरक चाह उषिया-उषिया कहि बहन अछि  
जे आर हम जरान भ गेनहूँ । दुनु गोष्ठे चाहो  
पीअर आ गपो नाद कवरै । हम रँजनहूँ ठीक डै  
रौरा अहाँ ओतए बहू हम 5 मिनट मे आरि बहन  
छी ।

रौरा सँ भेँठे कवरैक लेन हम आकाशिराणी के गेष्ठे  
न0-2 स रौरा निकैलि रोड ठपि के पीछीआग  
रिनिडग नक आधन बहि कि खेब फोनक घण्टी  
राजत । कान मे हेडफोन लगने बहैए रिना नहूँ  
देखनहिसे हम फोन उठैनहूँ कि ओम्बर सँ अराज  
आधन यो किशेन रौरा अहाँ कहिया गाम आरि बहन  
छी आर हम जरान भ गेनहूँ । हम धबधबागत



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

उपलब्ध, ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धारी

रैजनेहूँ ग ग गोव नगेत छि काकी । ओम्ब सँ फेब  
कोनो महिनाक खराज आयन अग्न यो रौखा अहाँ  
सभ दिन रैकनेने बहरैह भोजी के लोक कछ  
काकी कहनेके ओ थिथिया के हँसैत रैजनीह अप्पन  
सम्पत कहैत छी यो रौखा अहाँ हम ज़रान भ  
गेनहूँ । अहाँ त साफे हमरा रिसैव गेनहूँ कहियो  
मोनो ने पडैत छी । अ सुनि त एक रैव फेब  
हमरा किछ ने बूबा बहन छन दूदा तगओ हम  
रैजनेहूँ अहाँ कतए स राजि बहन छि यै काकी ।  
महिनाक खराज आयन यो रौखा हम भवाम रानी  
भाउजी राजि बहन छी । एक्का बति मोन पडन  
। हम अपसियाँत भेन हकमेत रैजनेहूँ ह ह भाउजी  
मोन पडन अछा त अहाँ छि भवाम रानी । भाउजीक  
गप सुनि त हँसि स हमरा बहन नहि गेन हा हा क  
हँसैत हम रैजनेहूँ अग्न यै भाउजी अहाँक टिक्का रैचा  
नमहव भ गेन आ तगयो अहाँ कहैत छी जे अहाँ  
हम ज़रान भ गेनहूँ ठीके मे की मज़ाक कए बहन  
छी ।

भाउजी थिथिया क हँसैत रैजनीह अप्पन सम्पत  
कहैत छि यो रौखा अहाँ एक रैव गाम अहाँ देखु  
हमरा देखि त बूढरौ सँहक धोति निचा माथे सँस  
जायत छैक । आ तछ स रैसी हान त मैष्टिक रना  
रिद्यार्थी सँहक हान त ओव रैहान छैक । छैनि  
पटे जायत कान हमरे घुबि घुबि क देखैत बहैत



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

टुक आ सरैठा स्रप रूष रिसव के धवहड़ । के  
सागकिनो पव स थसि पडैत टुक । सरैठा गप कि  
कछ यो रौआ गाम-गमागत जेनिहाव अनठिया लोक  
सभ त मोठवसागकिन पव सँ उंघवा पौघवा के थसि  
पडैत टुक आ झूहो कान टिकन भए जायत  
टुक । हम रँजलहँ थग यो भाउजी भैया नहि किछ  
कहत छथि हुनका ने किछ होगत छैन्हि । भाउजी  
रँजलीह धु जी महाराज की कछ खानहरो लोक अहाँ  
भैया स रैसी देखेत हेते । पामव रना चम्पा मे  
एक्का बति कि अहाँ भैया के देखाए । सरैठा गप  
कि कछ अहाँ भैया के हकैम-हकैम के कहत कहत  
हम थकि गेलहँ जे आरँ हम जरान भ गेलहँ ।  
झुदा तगयो अहाँ भैया के रैहए गडलहे गीत  
अस्कुर पव सँ गाम आ गाम पव सँ अस्कुर सेहो  
आथि झनने जाड आ आड । बस्ता पेवा कि सभ  
भेलो सेहो ने रूमरौक काज । ए गप सुनि त  
हँसि स हमवा बहर नहि गेल हा हा क हँसत हम  
रँजलहँ आहि रे रौ एहेन जूब्रम त देखल नहि ।

हमव गप सुनि भाउजी खुरँ जोव स थिथिया क  
हँसत रँजलीह जूब्रम की महाजूब्रम कहियोथ । ओना  
थछँ कि अपना भैया स एक्का बति कम छी । अहाँ त  
हवदम समाचाव रँनरै-सुनरै मे रैलल बहत छी हमव  
हाल के पडैए । आग कान्हि त खानहरो लोक  
अशिवा स गप रूमि जायत टुक झुदा अहँक हाल त



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

मानवीय

निष्ठे आनहव रता थि ने गरैए जोकव ने सुने  
जोकव । अहाँ स नीक त कोनो अनठिया के कहने  
रैहतिथे जे आरै हम जरान भ गेनहुँ त निष्ठे  
पराएन ओ गाम चलि आएन बहतेह झुदा अहाँ त  
गाम अरैक नामे नहि लेत छी । हम रैजनु  
भाउजी अहाँ जुनि थिसियाउ अहि रैव नहि त अगिला  
रैव हम जकव आएरै आ दुनु दिखव भाउज उता ता  
उ ता ता मदमस्त होबी खेलाएरै । एखन हम होन  
बाथि बहन छी केकरो होन आरि बहन छैक ।  
भाउजी रैजनीह मारे झूठ ध के अछि के मोरौगन  
हवदम ठनठनाएते बहै भवि मोन गप कवरै सेहो  
आहद । जहिना जरान लोक फेनाएते बहै तहिना  
अहाक होन ठनठनाएते बहै रहु रैठिया त बाथु ।

भाउजीक होन डिसकनेक

करैते मातव फेव कोनो अनठिया नहव सँ फेव  
होनक घँपी राजन अराज सुनि हमव मोन धकधकाएन  
जे आरै फेव के अछि । हम हेल्लो रैजनु कि  
ओम्ब स अराज आएन एकठि गप बुझहतिथे अहाँ ।  
हम रैजनु रिना कहनहि अपनेमने अनुबयामी केना  
बुझि जेरैए ओना कोन एहेन जुनम भए गेलैए से  
जन्दी कछ । कोनो महिलाक अराज आयन यौ  
पाहुन हम कोना क कछ हमरा त राज होए ।  
हम रैजनु अहाँ के राजो होए आ उल्ले हमरा  
पाहुनो कहत छी । ओम्ब स फेव अराज आयन छुप



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ने अनठिया अनठा-अनठा के रैजेत छी जेना अहाँ  
के बुझलने ने हूँथ । हम रैजलहुँ सहुँ कहत छी  
हमबा त एक्का मिसीया ने बुझलन अछि जल्दी कछु ।  
एतरीक मे खेब अराज आयन अहा कहत छी त  
हयैथ नित्य सुनु आरि हम जरान भ गेलहुँ ।  
एतरीक राजि ओ हा हा के खुर जेब स हँसै  
नगलीह । हुनकर गप सुनि त हँसि स हमबा बहन  
नहि गेल झुदा तगयो हम रैजलहुँ जरान भ गेलहुँ  
त अपना माए राप के कहियौथ अहि मे हम कि  
कक । ओ रैजलीह अग्न यौ बुढरा पाहुन अछि रवि  
खान्ह बुझलत छियैक । कछु त गहो गप केकरो  
कहै पडतैह लोक अपने मने नहि बुझलतैह जे  
घोबि घोबि के कहै पडतैह जे आरि हम जरान  
भ गेलहुँ । एतरीक राजि ओ खुर जेब स हाँ हाँ  
के हँसै नगलीह । ओ मलिनक हँसि सुनि त बुझलहुँ  
हमब मोन धनकुरिया मशिन जेका धक-धक करै  
लागल । ठकमेत ठकमेत अपसियात भेल हम  
रैजलहुँ अग्न यै मेडम अहाँ जरान नहि भेलहुँ कि  
बुढ वि मे हमबा जहन ठा कबाएँ । ओ रैजलीह  
अग्न यौ पाहुन अहाँ के डब किअक होगए एतेक  
कार त कोनो अनठिया गाम चलि आएल बहलैथ आ  
अहाँ के त होबी मे गाम अरैत रहुँ माशुर्ज नगैथ  
अहाँ होबी खेलाए लेल गाम आएँ कि नहि । हम  
रैजलहुँ अहाँक पाहुन से कहिया स त ओ रैजलीह



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अर्ध यौ पातून हम ज़रान भेनहूँ आ हमबा अहा  
साफे रिसैव गेनहूँ । हम नीनु रौजि बहन छी एक्का  
बति मोन पडन कि नहि ।

हम रौजतहूँ अछा त अहाँ छी रौहु जन्दी ज़रान भ  
गेनहूँ । ओ महिना रौजनीह त अहाँ मने कि अगिला  
कोजगवा तक अहाँक रौठ तकिताहूँ कि अपन ज़रान  
भ गेनहूँ । आरौ रौठ लोकक ज़माना गेलैए आग  
कान्हि त ज़रान लोकक ज़माना एलैए रौठ ाबी मे अहाँ  
भसिया गेनहूँ की । हमरे छेष्टकी साबि नीनु छनीह ।  
हूनकब एहेन सनब रौचन सनि त हम अपना देह  
मे अपने मने रौठ काँटेए नगनहूँ खुशि सँ मोन मयुब  
जैका नाचए नागन । भेन जे सासुरे मे तिनकोबक  
तकथा आ बहन छी झुदा होन दिसि देखि ए झुम  
छेष्ट जे हम त सँसद मात्रा दिल्ली मे छी आ होन  
पब गप कए बहन छी । हम रौजतहूँ यै नीनु ठीक  
छेक ए रौमहूँ जे अगिला होबी मे हम एहँ ठी कबर  
एतरीक कहि हम होन बाथि देनियै ।

होन पब गप करैते करैते हम चाह दोकान  
नक चलि आएन बहि सेहो नहि रौमहनियै । हमबा  
देखैत मातब रौरी रौजनाह अर्ध हो कारीगर  
तोहब गप सधनहे नहि देखैत छहक तोबा फेबी  
मे चाहो ठँह । गेन तहि दुखारे चाहो रना हमरे  
पब झूह हुनेने अछि । रौरीक गप सनि हूनका हम



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

प्रणाम कए प्रहृतिथेन से किअक यौ रौरा । त ओ  
रैजनाह चाहरना के कहरै छैक जे अहि दावही रना  
रौरा दुआरे कएक ठा नु कपअ माने जरान छौड़ १-  
छौड़ी रीना चाह पीने आपिस चलि गेलैह । आर  
तौही कहथ त कारीगर छौड़ १-छौड़ी त अपना  
फेरी मे गेल चाह नहि रिकेलै त एहि मे हमब  
कोन दोष । चाहरना अपने मिथिला के बहए ओकरा  
हम कहनिथे हो भए दु कप चाह रनारह रौरा  
सेहो पिथहिन । हम रौरा के कहनिथेन रहु दिन  
रौद अपने दिनी अएनहु त गाम घबक हार समाचार  
कह । रौरा रैजनाह हो रैचा जुनि प्रहृत गाम घबक  
हार बुमरक छौड़ १ छौड़ी अगिया रैतार । हम  
रैजनहु से किअक यौ रौरा त ओ रैजनाह हो रैचा  
गामो घब बहरा जोग नहि बहि गेल । आग  
कालिक छौड़ १ छौड़ी एकदम निबनज भए गेल एका  
बति नाज पाक नहि बहि गेलैह आर त मदिरो मे  
बहरै पबले कार भए गेल ।

हम रैजनहु से किअक यौ रौरा त ओ रैजनाह हो  
रैचा सरैठा गप तोबा कि कहियथ आर त छौड़ १  
मारब सब पूजा करैत कार उना ना उना ना  
गरैत अछि एतरक सुनेते मातब छौड़ियो सब  
कदि-कदि के कहतह डरु ने डरु हमबा आर हम  
जरान भ गेलहु । कह त के जरान के रूठ पवान



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

से त पुवा गौंथा बूनेत डैक एहि मे हला कबरौक  
कोन काज जे आरि हम ज़रौन भ गेनहूँ । देखेत  
डहक अ गप सुनि त बूठरौ सरहक धोति निचा  
माथे ससैव ज़ात डैक । अ भागैसब पंडा हमबा  
सुखचैन स नहि बैहै देत । एतौक मे चाह रना  
२ गिनास चाह देनक दुनु गोष्टे चाह पिरैथ नगनहूँ  
एक घोष्टे चाह पिनैहै बहि कि हम प्रदुनियेन  
भागैसब कि केनक यौ रौरा । ओ रैजनाह हौ  
काबीगव की कहियथ भागैसब पंडा त आरि निबनज  
भ गेन । एतेक दिन ओम नमः शिराय के ज़ाप  
करैत डह आरि उता ना उता ना गरै मे मगन बैहै  
हम जे किड कहैत डियेक हौ भागैसब एना किएक  
अगिया रैतार भेन डह । त ओ हमबा कहैत अडि  
यौ रौरा किड कछ ने हमबा आरि हम ज़रौन भ  
गेनहूँ ।

अ कनापब अपन मतर

[ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाड ।





मानवीमिह

### ३. पद्य



३.१.१.

सन्दीप कुमार साहू २.



शिरकमार ना 'ष्टिन्' ३.  
जगदीश प्रसाद मण्डल

श्यामल सुमन ४.



३.२.१.

डा. शशिधर कुमार



“बिदेह” २.

बामबिनास साहू



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



३.३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिर



२. जरातबनान कथेप३. डमेशे  
पासरान



३.४.१. अयोध्यानाथ चौधरी २.  
उमप्रकाश ना



३.५. बरि भूषण पाठक



३.७. चंदन कृषाव सा



३.१. जगदानन्द सा मन्त्र



३.४.१. अमित मिश्र- गजल २. मन्नाजी-  
करीग





१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धी



१. सन्दीप कुमार साहू २.



शिरकुमार ना 'ष्टिन्' ३.  
जगदीश प्रसाद मण्डल



श्यामल स्वप्न ४.



१



सन्दीप कुमार साहू



अप्पन गौर

अप्पन गौर अडि साह

नग-नगमे कनम गाढ

झुठ हराक सुगह सुगहात

राष्ट रैठैहक मन रैठैहक

हँष्टि-हँष्टि क२ पोखरि अनाव

मान करै छी ओग किनाव

महावपव सुन्दर पाखैर गाढ

कौआ मएना कबए किलोर

भोरे देखै छी कौल चले

बस-गुडक सुगह आरै



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

महर्षिगिरि

रुबियर-रुबियर गह्म२ खेत

कानसँ रैहए कमला रेत

गाँसँ रैनर शेरु रजाव

थुरै रैनए पापड अचाव

गामक छी आ बीति-बिराज

सभक कबए आदब सकाव



शिररुमाव ना 'ष्टिन्'

करिता-

एकठा छवी आवती

एकठा छवी आवती

भदेसक भावती

आगाँ 'बाय' की नागर

ओ सभ बूमि गेवथि

किछ आव



बिदूष रा होशियाव

छतनि थड ाम देरौक आशि

भदेसक काता

महा भदेसमे छथि-

हनुका पड ागन लागि गेल छन्हि

आन किअक जाएत

केना पड ाएत

किन्ना नै होमए देतक

अकृतक कार्याक आशि पूव

केओ नै गेल भागतप्रव

आवती कसि गेली

अपि नै

अन्तर्आत्मासँ हसि गेली





झूठजोड़ भाषामे

जे बाखत आत्मासँ

बिदेह-तनुजामँ सिनेह

आत्मासँ गेह

सरैहक रुएत रएह दशा

भागेए पड़तनि

उत्तराधिकारीकेँ कुलेशे

सभ दिनक लेल रीना देतनि

जहानसँ भगा देतनि

मात्र हमही ठाँ नाचरै

हमही देखरै

के सूतन के जागन

के नै रूमय



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

महर्षि

जे कबत प्रयास

उ भइ जाएत अभागन

ई माईसँ उपठन रैदेहीकेँ

आन भूमिक लोक

माईमे मिना देननि

झुदा अपन आवतीकेँ

अपने साँठु खसा देनकनि..... ।

३



श्यामल स्वप्न

१



## मैथिल मिथिला नाज हमब

भेद भार रिन सरकय जोड़ू, रौंचत तखन समाज  
हमब

सरकियो मिलकय राजू सगरे, चाही मिथिला बाज  
हमब

बाज रहत पहिने सँ मिथिला, छिना गेल अछि साजिनी  
मे

जोरत ओ सम्मान भेष्टत नहि, रौंचत कोना नाज हमब

रिबिष रिषय के ज्ञानी मैथिल, दुनिया मे भेष्टत  
सगरे

झूठ रूढ़ बाखर कहिया तक, के सनतय आराज हमब

आजादी के बादो सर दिन, भेल उपेक्षा सबकाबी  
रहन विकासक गंगा प्रायः, रौंचत खानी काज हमब

सज्जनता श्रृंगार समन छी, दिल्ली बुनकर कमजोरी  
जागू मिथिलारासी आरौ, मैथिल मिथिला नाज हमब



## हँसी झूठ पब साँठय छी

पीया-प्रता दूथ नहि बुँमय, हँसी झूठ पब साँठय छी  
खबचा एक प्रवारय खातिब, दोसब खबचा काँठय छी

आजूक हाग मे कम्प्यूटर रिन्न, नरतुबिया सरँ की  
पठतय  
झुदा माँग पब, ठाका नहि तै, रँचा सरँ कैँ डौँठय छी

रँनन रँसुता सन्नखी-जन, रँजय मीठगब रौली यौ  
दूथ मे बहितहुँ पब रिरैक सँ, सन्नक हिम्मा रँठय  
छी

अपन छदय मे भार जेहेन छन, बुँमनहुँ छै तेहेन  
दूनिया  
चीन्हा गेल अछि अप्पन-अदना, हुनके सरँकेँ डौँठय छी

अमन सगिनी जीरन भैँठन, कप मनोहब काया सँग  
दूथ बीजन तह टोकब आमक, कप देखिकय हाँठय  
छी



## अ थठहा अंगुव छी

किछु करैव के चक्रवर्त मे, कानूनन मजदूर छी  
बही छमक आ थेत छिनाओन, तहिये सँ मजदूर छी

छनय घब मे जमघष्ट हबदम, हित नाता सल्लखी के  
कतह अरैय छथि आरै एथन ओ, प्रायः सरै सँ दूर  
छी

काज कबय छी बाति दिना हम, तैयो मोन उदास  
हमब  
साहस दैत बुझाओन कनिया, अहाँ हमब सिन्दूर छी

एहेन रारस्था हो परिवर्तित, लोकक सँग आराज  
दियौ  
एथनहुँ आगि रँचन अछि भीतब, माँपन तोपन घुब छी

रँदिदानी संकल्प स्मन के, कहना दुनिया रौंछि सकय  
नहि रौंजरै नटा या केव भाषा, अ थठहा अंगुव छी

४

## संस्कार सन्तान मे



सृजन मूल पब कानेत राजेत, गेल छवहुँ शिमान मे  
आनत जायरे एहिना हमहुँ, आयत आचानक धान मे

राजती सर कियो बाम नाम संग, सभरक गाति एहने  
होगछे  
रातव आरिते खुसि बरुकर, केवहुँ शुक दान मे

रात सदबिखन की न२ एवहुँ, की न२ जायरे दुनिया सँ  
झुदा सहोदर सँ नगड १ नित, होग छे नहि अन्जान  
मे

भाग्य निखत जे हेरे कवतय, काज कवय के काज  
की  
टिकवि टिकवि केँ राजू एतरे, दास मनुक सम्मान मे

स्मन मनुक्खक जीरन भैर, घटना छी अनमोल यो  
सफल तथन पन पन जीरन के, संस्कार सन्तान मे

३

कियो हमर संगी रैन



चवू तकय छी मिनि भगरान, कियो हमब सर्गी रँनु ।  
कत२ भेठेना छी खुसिये हवान, कियो हमब सर्गी  
रँनु । ।

कियो कहय कण-कण मे, कियो कहय मन मे ।  
कियो कहय गर्गा मे, कियो परन मे ।  
नहि भेठेन क्व पतचान, कियो हमब सर्गी रँनु । ।

सुमवय छी दुख मे, रिसवय छी सुख मे ।  
पूजा के भार कतय, नामे ठाँ छुथ मे ।  
छुथि भजा रँहुत अनजान, कियो हमब सर्गी रँनु । ।

कक लोक सेरा, तखन भेठेत मेरा ।  
लोक-हित काज कक, लोक छी देरा ।  
सुमन कस्तक रँनरँ नादान, कियो हमब सर्गी रँनु । ।

७

### बहरँय कोहरँब कस्तक दिन

बहरँय कोहरँब कस्तक दिन  
रँनिकय खजगब कस्तक दिन



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

उपलब्ध, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

शोदी तऽ एक संस्कार छी  
जीरैय अमगव कहुक दिन

रिना काज के मान घटैत नित  
हुसिये दीदगव कहुक दिन

रैसन देहक काज कोन छै  
एहने मोठगव कहुक दिन

आरैहू जागू समन आतसी  
थेरैय नोनगव कहुक दिन

४



जगदीश प्रसाद मण्डल





गीत-

हान-रैहान देखि बाग-बागनिक

रुशेन फुल सजरेत बह छै ।

बग चढ़ि कबिया कारी

झमव बस पान करैत बह छै ।

झमव..... ।

हान-रैहान देखि बाग-बागनिक

रुशेन फुल सजरेत बह छै ।

डगडगाधन हान पारि उम्सबक

फुल उम्सब सिबजेत बह छै ।

घुबि तकि नै भवम भौवा



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

दिरा बसबाज कहरैत बह छै ।

दिरा बस..... ।

हान-रैहान देखि बाग-बागनिक

रुशेर खुन सजरैत बह छै ।

आसनसँ सिंघासन रनि-रनि

चष्टाग नाँउ धड़रैत बह छै

पूजा आसन रनि सदए

लोक सब सजरैत बह छै ।

लोक सब..... ।

हान-रैहान देखि बाग-बागनिक

रुशेर खुन सजरैत बह छै ।



१०६ स अंक १५ मङ्ग २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसुषि

उठि अजनि चढ़ि मजनि

मगन गीत गरैत बह डै ।

मगन गीत..... ।

हान-रैहान देखि बाग-बागनिक

रुशिन हून सजरैत बह डै ।

.



## गीत-

शीला शील देखि-देखि

हंस कानि कहैत एलैए ।

एक शील श्रृंग चढ़ा-चढ़ा

दोसब श्रृंगार रैनेत एलैए ।

दोसब..... ।

शीला शील देखि-देखि

हंस कानि कहैत एलैए ।

चढ़ा श्रृंग गढ़ा धनुषी

अकास िसब रैनेत एलैए ।



हंसराज राजहंस बमरि

सिब श्री गाव सजेत एलेए ।

सिब..... ।

शीला शील देखि-देखि

हंस कानि कहैत एलेए ।

शील अशील अब रँदनि

तिबडित-मिबडित देखैत एलेए ।

चिड़चिड़ गत चिड़ बुनि अनि

अशील-रुशील रँनेत एलेए ।

अशील..... ।

शीला शील देखि-देखि

हंस कानि कहैत एलेए ।



## पगवथना

पागत ई सभावमे

पगतपनी खेत चलेत बह छै ।

पगला पागत पकड़ा

पगतथाना रैनरैत बह छै ।

लठखेना दोकान जहिना

मिबचाग-मिसबी संग बह छै ।

सभावक नखुवाएत रन तहिना

पगतपाना गाढ पनपेत बह छै ।

पागत ई सभावमे

पगतपनी खेत चलेत बह छै ।

कियो पगलाएत खेत कानैले



तँ कियो पगनाएन छुमै थेतने ।

कियो पगनाएन डाक-डाकनि

तँ कियो पगनागत अगरास ने ।

बहिनो सरहक एक मश्री

राष्ट-घाष्ट रौवागत चलै छै ।

सभकेँ सभ पागन कहि

नाच पगनपनी नछेत बह छै ।

पागन ई संभावमे

पगनपनी खेत चलैत बह छै ।

कियो पगनाएन सुख-शान्ति ने

कियो मधुश्रीना रौवाएन बह छै ।

तेज सराबी पकड़ा चढ़ा

रौलेस जिनगी मिररैत चलै छै ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

पागत ई सभावमे

पगतपनी खेत चलेत बह छै ।

नपकि-नपकि मासूम मौसममे

माखुब रन रनरैत चले छै ।

पागत ई सभावमे

पगतपनी खेत चलेत बह छै ।

एक-भग्गु बुबि-बुधि संग

एकरहुँ राँष्ट रना चले छै ।

स्वाधन हाड स्रान जहिना

थपने बस पीरैत जीरै छै ।

जहिये जनमन मानर धवती

संग स्रान अरैत बहन छै ।

कठने-चठने सेब रोरौरवि





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

सर्ग मिन सर्ग नछैत बह छै ।

पागल ई संसारमे

पगलपनी खेन चलैत बह ।

~

ई कनापब अपन मतिर

ggaj endr a@vi deha.com पब पठाड ।



१. डा. शशिधर कुमार "बिदेह" २.

बामनवास साहू

१





१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानवीय



डा. शशिधर कुमार

~ बिदेह ~

एम.डी.(आय.) -  
कायचिकित्सा

कानून अरु आचार्य एन्ड रिसर्च सेण्टर, निगडी -  
प्राधिकार, पूना (महाराष्ट्र) - ४११०४४

१

बिदेह गीत

किए भेलिये,

पिया । अहाँ



एहेन कठोब ।

झरु सनिर केब रँदना मे, देन किए नोब । ।

आयरँ शिखरि, पिया जागत कहनहुँ अहाँ ।

झदा जानि ने, कतह जाय रँसलहुँ अहाँ ।

चान एकसबि

खडि रँसन

अहाँ रँन चकोब ।

झरु सनिर केब रँदना मे, देन किए नोब । ।

दिन रीतन अनेक, मास रीतन कतेक ।

रीतन सबस रँसलु, आयर साउन केब मेघ ।



मेघ बहिरु

ने पिया आग

नचगुड मन मोव ।

झरु सनिर केव रँदना मे, देन किए नोव । ।

किए अनाह ने पिया, मोन कर्ना प्रदुय ।

रँन पिङ्गवा सनि, जेना ३ अर्ना वगय ।

भेन केहेन

३ बाति जकर

अरँगुड ने भोव ।

झरु सनिर केव रँदना मे, देन किए नोव । ।



भेन आनव आ नैन, रैष्ट्र अहँ केव तकेत ।

उडि गेन मोव टैन, याद अहाँ केँ करैत ।

भेन पाथव

जेना, पिया ।

रिहँसय ने ठाव ।

झरु सगिन केव रैदना मे, देन किए नोव । ।

की गेलिये रिसवि, अहाँ कोहरव केव बाति ।

की यादहू ने अरैगछ, ओ पारनि रैबिसाति ।

कोना रैनरहुँ

पिया अहाँ

एहेन निशोख

।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मन सनित केव रँदना मे, देन किए नोब । ।

२

## मिवनोमुका गीत

सथी ।

रुचबन अडि रायस,

किए अरुन भोव ।

आङ्ग नगगत अडि अउथिन्ह हमर टितटोव  
। ।



आग अउथिन्ह जू पिया, हम कसि बहरै ।

घोघ तानि, मुँह हेबि, हम रैसि बहरै ।

मदा,

बोकरै कोना सथा ।

मोनक हिनोब ।

आग वगगत अछि अउथिन्ह हमब चितटोब  
। ।

कतुखन एहि चाब पब, कतुखन ओहि चाब पब ।

कथनहु दूआबि पब, कथनहु ज्ञानाब पब ।

किए

रुचरै अछि कौआ,

एना जेब - जेब ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

आज्ञा नगगत अछि अओखिन्ह हमब चितछोब  
। ।

पिया कतरैह मनओखिन्ह, ने हम रैजरे ।

हाम कतरैह हँसओखिन्ह, ने हम हँसरै ।

हाम

हमब कहत सखी ।

नयनक आ नोब ।

आज्ञा नगगत अछि अओखिन्ह हमब चितछोब  
। ।

घोघ उठरैत सखी, नग अओताह पिया ।

झरु हाथे पकड़ि, नगा नोताह हिया ।





नोब

नयनक पोछैत,

छमि जेतार ओ छोर  
।

आज नगगत अछि अओथिन्ह हमर चितछोर  
। ।

हम नजहि ओतहि, गढ़ा जयरे सथा ।

हम नजहि तँ मवि - मवि जयरे सथा ।

कोना पढ़रै,

किए जेतार,

एहेन करोर ।

आज नगगत अछि अओथिन्ह हमर चितछोर  
। ।



३

## मिशन गीत

सथी ।

की हम कछ,

हुजय बाजै ने ठोब ।

हम बुनारिये ने आग, कोना भइ गेलै भोव  
। ।

सथी धक् - धक् करैत छल हमब जिया ।

ता रँजनाह, सनु हे ई प्राण - प्रिया ।



आउ ।

पहिलायर हम् आग,

अहाँ के पठेव

।

हम बुझनिये ने आग, कौना भइ गेलै भोव

। ।

हाथ धयनहि पिआ, गेनहुँ हम तँ नजाय ।

पुनः लेनहि मोवा, अपन छाती सँधाय ।

छूमि लेनहि,

ओ चष्ट दह,

हमर दह ठोव

।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

हम बुझनिये ने आग, कोना भे गेलै भोव  
। ।

मेक पब सँ देरहि पिया अखँव हठाय ।

पुनः लेरहि सखी, निज अंक रैसाय ।

सखी ।

बाजै सिहरि उठल,

हमब पौब - पौब

।

हम बुझनिये ने आग, कोना भे गेलै भोव  
। ।

आँखि झनने छलहुँ, जेना छग - झग ।



पिया अचकहि मे सथी, होति देवहि नीरी ।

आ कि,

एतरीहि मे सथी,

मिना गेलै अजोत ।

हम बुझनिषे ने आग, कोना भ२ गेलै भोव  
। ।

२



बामनवास साहू

करिता-

बारा रने फेदावा

की केलो की पेलो



जेहेन कबर तेहेन पएँ

रौराक थैली भरोषे

ने चरत कोनो काज

अपना भरोषे होग डे काज

जौं रौरा भरोषे

होजदारी नडरै

तखन पराजय रहत

जे काज जहिना हेतग

ओहिना ने कबए पड़त

अनका भरोषे ने होग डे काज

अपन काज जौं अपने कबरै

तखन प्रगति दिन-राति रहत

सुरारदारी जाधवि ने रैनरै



तापवि पवजरी रैनन बहरै

का कवरै सोचि कवरै

समए संग काज कवरै

तखन जिनगीक महत बहत

रतमानमे कवरै तँ भरिष्य रैनत

भूत तँ रीत गेल रतमानपव

भरिष्य उज्जरन बहत

संसार काजसँ चलैए

जापवि अपन काज

अपनासँ नै कवरै

तापवि आत्म निर्भर नै रैनरै

आत्मनिर्भर भेनाग

सरलक कर्तव्य रैनैए



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

नै तै एक-दोसबाक संगे

जिनगीक पिसागत बहैए

अपन जिनगीक भावसँ

लोक सूर्य दरै बहैए

दोसबाक भाव केना सहैत बहैए

दरि-दरि जिनगी मरैत बहैए

की कहै कहै नै जागैए

से हार प्रमात्मा जनै छथि

अपन विकास जेँ सभ कबत

केकरोपब नै निर्भर बहैत

सभ स्थिति, दूखी नै कोष बहैत ।





ई कनापव अपन यंत्र

[ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाड ।



१. जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिर २.



जराहबनान कथपत्र डमेश पासवान



१



जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिर

गजन

गांधी ब्रह्मराम आम सादु

चवु चलो छी गाम सादु ।



हम नहि जायँ रबियातीमे

मोने अछि ओ जाम साहु ।

लोक रहुत छेष्ट-सन लागल

जकब रहुँठा नाम साहु ।

एकेठा अछि घ ब बारणक

भवि गाँ अछि रैदनाम साहु ।

हमबा खातिर गाम स्रज्ज थिक

आ घब चाक-धाम साहु ।



जराहबनान कशुप

हम नहि बिथेत छी करिता

सरै स पहिले छुटैत छी हम

थमे होगत अछि हमब गगो

नछ होगत अछि हमब राजिह

तखन रनेत अछि करिता महान

हम नहि बिथेत छी करिता

करिता करैत अछि हमब निर्मणि

३



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

गद्यविधि



डमेशे पासवानक दृष्टी करिता

जगदीश राबू

हम छी सेरक

मैथिल

जगदीश राबूक

चेना

ने हमबा नडू थियौननि

ने देनथि मिश्रीक ठेना

तेया



हम छी मैथिल

जगदीश राबूक

चेला

श्रुजि छथिन हमब

रैछ महान्

साहित्यक छथि पगघ

बिद्वान

मधेश मिथिलामे

हिनक अलग पहिचान

जएह रैजे छथि

रहए करै छथि

रएह निथरौ करै छथि

तमोबिया नग रैबमा अछि



हिनक गाम

दर्शन कबरौक

मोन होगए हमबा रँदुत

झुदा छी हम थकेला

तेयो

हम छी मैथिल

जगदीश रौक

चेला

गामक जिनगी

मौलागल गाढक हुन

मिथिलाक रैछी

जीवन-सघर्ष, जीवन-मरण

उत्थान-पतन



पठार्थि क२ हयव उत्साहसँ

रैठन योन

उठैलौं हयछूँ कनय

निथै छी करिता

तँ

हय छी सेरक

मैथिन..... ।



## उजबल घब

उजबल घब

तराणीक मंजब

देखि क२ हम

बेदनामे डूमल बह छी

खुना आसमानक निछा

जानबसँ रँभव

रौद-रँसातमे

कष्ट सहि क२ बह छी

गबजेत मेघ

घनघोब रौदल





पानि-रैथकि सर्ग रौटि मे

दहागत नहाशि

उजबन घब

लोकक चितकाव

देथे-सुनै छी

गवरीरक जिनगी

निहत्था योछा

बेतपब रैनन घब जकाँ

अथन बुनै छी

कष्टक माबन

रिपत्रिक आगाँ हाबन छी

जिई छी नै

मरै छी रीचमे

बि दे ह बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ३ बिदेह*



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पवि क२ हृदय-हृदय करै छी

उजबन घब

तरौलीक मंजब ।

ई कनापब अपन मतिर

[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाड ।



१. अयोध्यानाथ चौधरी २.



उमप्रकाश

ना

१.



अध्यापनाथ चौधरी

## कोनो किम्मत पब मिथिला महान चाही

अपन धवती, अपन आसमान चाही  
कोनो किम्मत पब मिथिला महान चाही

आरै जागि गेल छी, नहि सुतर छी हम  
अन्धाय रहुत सहनहुँ, नहि रूझुम हमरा कम  
अहाँक रहुत आ गौरी के नहि पबराहि  
हमरा पीठ पब सहाय छथि बाय आ नखन  
जिनका संगे मे तीर आ कमान सदियन  
तँ ...कोनो किम्मत पब मिथिला महान चाही

रहुत शोषण कएलहुँ, रिचाव कर आरै  
भागचावा क नाम पब, अहाँ कयलहुँ हनार  
हम स्रय छी सम्मन, नहि आन चाही  
शोषक नहि अहाँसन रैगमान चाही  
सब मैथिलक झूठपब झूझान चाही  
कोनो किम्मत पब मिथिला महान चाही



हमरे खन-धन सँ पावित छी अहाँ  
हमरे आम-माँछ खा अहनादित छी अहाँ  
पतङ्गता सँ रठिकऽकोनो धर्म नहि होगछ  
पतङ्गता सँ रठिकऽकोनो कलश नहि दैछ  
हम की कहै, अपने रिचार चाही  
कोनो किम्मत पब मिथिला महान चाही

रैक सोनाक लँका होरऽअहीके नसीरै  
हमरा कुम्भ मे अपन पहिचान चाही  
अहाँक भाग मे बारण छथिहे ओतऽ  
हमरा त' एतऽ अपन बाम चाही  
कछ अहाँ सँ कथी मे छी हम कम  
कोनो किम्मत पब मिथिला नराम चाही

प्राणि योगा डरैव भूमि पसवत हमर  
हवीतिमाक अनूपम पसाव छै एतऽ  
स्वभित समीव रैत अछि सदैव  
कन-कन, छन-छन गीत गनगनागत सदिखन  
हमरा रागमती, कोशी आ रँगान चाही  
कोनो किम्मत पब मिथिलापाम चाही

छठि पारनि मे सजल जन - किछेव केहन दिरा  
दीपारनी मे दीपक कताव केहन भरा  
हमरा सूर्य - वशि बजित भोव चाही



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

बाति के नौतेत गोधुति चाली  
कोजागवा क पान आ मथान सन दिरा  
कोनो किम्वत पब मिथिलापाम चाली

बाजधानी त रैनले छै अदौ सँ एतए  
एहि मे मीन-मेष कबरौक रात छै कतए  
रिदेहक नगरी सँ उतम स्थान कोन छै  
बाम - जानकी क प्रणय कथा ककवा नहि मोन  
केओ की रनाओत, ए त रनले छैक  
कोनो किम्वत पब जनकप्रवधाम चाली

ज्ञान - प्रज्ञक प्रसाव एहीठाम सँ भेल  
शिकव-मन्दन आ यात्रारैलक पाम थिक ए  
थरु गुड आ चेला टिनी बुमि थमान कबते छी  
ज्ञान क श्रोत रिसवि अनजान रैनल छी  
नैतिकताक कनिषेण त ध्यान चाली  
कोनो किम्वत पब मिथिला महान चाली

सीता, मैत्रेयी आ गार्गीक पाम छी ए  
उर्मिला-सन पतिव्रताक ठाम छी ए  
हमरे सँ अहाँक पहिचान रैनल अग  
एहि रात के सभ् अहाँके ध्यान चाली  
नहि त कहू कतेक आओव रतिदान चाली  
कोनो किम्वत पब मिथिला महान चाली.....



२



उमप्रकाश ना

गजल

कहू की, कियो बुझि नै सकल हमबा  
हमी सबक नागर रहुत ठबर हमबा

कियो पुढलक नै हमर हार एतय  
कपारे तँ भेंटैत छलै जबर हमबा

करेजा सँ शोषित रहारैत बहलौ  
रिबह-नोब कथनो कहाँ खसर हमबा

तमाशा रैनर छी, अपन हूँकि हम घर  
जबै मे मजा आरिजे बहर हमबा

बहर "ओम" सदिखन सिनेहक प्रजाबी



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६),

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ए दुनियाँ तँ काहिल मूदा कहल हमरा  
रहल-मृतकाविर  
बुद्धन )द्वय-दीर्घ-दीर्घ - (प्रत्येक पाँति मे चाबि  
रैब

ई कनापब अपन मतिर  
[ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाड ।



बि भूषण पाठक

रामे गाम दहिले गाम

1

रागमती आ करेहक रीच ठाढ़



३ कोन चीजक पहाड़

हयौ करिबनथक

३ अहक धर्मदण्ड नग

जे धवती के म्मशेम्मण नापेत हो

३ थिक हममव गाम

ताकैत चाकदिस

गतिहासक अथण्ड आरागमनक साम्झी रँनि

तौलैत झँझाडक पानि

कथनो मुकि जागत रागमती दिस

कथनो करेह दिस

ले ...ले...तू ले

जेकवा काज हो जलक

३ पानि केरन हाङ्गाड्राजन आ ऑक्सीजनक यौगिके  
नग





मोनक पानि

आत्माक पानि सेहो

केरन झूठक पानि नग कारिदास

आत्माक पानि मरै नग

रैस एतरे जेन ठाढ़ अ कबियन गाम

अ गाम जानै छैक

पानिक मोर

तीन-चाबि सौ कौं नैचा

कथन अनाव

गाम जेकब रुबसी रैनन

रौशन, रुबमी, पानुक

गुआव दूसाधक हड्डि सँ

सुबखी चूना रैन

माष्ट मे मिलैत गेलै



आ पहाड़ रैबैत गेलौ

एतते ऊँच....

एतते ऊँच....

कि नेपाल ,तिर्रैत ,चीन मिनिओ के

नग डुराँ पारैछ कबियन गाम

2

धनि जिवत धनि जिवत

के नापे तोहब डुरैबता

के जाँटे तोहब जोस

रैस एक रैब सम्हबि के उपजि जो



थुआ देरै पूरा दुनिया के

एक साँस सोहारी

तीमन तबकारी

आ रँता देरै

मिन्नूँ क मोन

आ रँस एके रँव

समूह के हवि जाग

थुँठैबी रँरूँक गाछी

कलकतिया मानदह होजनी

आ रँज्जू क असंख्य रँर्वस

आ गँ गँ हँलैत चलि जाग

दुब थुँ दुब

पुँ दिस ...पुँ दिस

सहसा ,पुँरिया ,कल्लिहार

आ ओहियो सँ आगु



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जत सँ राँरा आने छथिन

नान-नान नमुका

.....

ओ गीत

ओ सपना ...आ ओ जिनगी

झुड़ ागत बँह ...झुड़ ागत बँह

3

उदयनाचार्य तह नहिये छथिन

झुड़ आचार्य लोकनि सँ जक-थक गाम

असकून मे पबैत पबहारैत आचार्य

हथब नेने कनहा पब

आडि तोड़ैत राँनि नोछैत आचार्य

जजाति काँछैत गाबियो दैत

रँछैया रना अफहा सँ चोथाँ रनरैत आचार्य

220



श्रीह मे रियाहक ,रियाह मे श्रीहक

उल्लेख-प्रलेख मंत्र पवैत

भोव प्रलेख सामं भारीह के

छुष्टी काँटेत मोहवारैत आचार्य

कष्ट काँटेत जोगारैत रैनरैत

रैल के पवहारैत पठना दिनी

नोकरी कवत रियाह कवर

तिजौरी के साह करैत आचार्य

हम हमरी रस हमरे ली अछि

देखरैत स्मरैत आजुक आचार्य

केओ एक-दू श्लोक

कितारक नाम एक-दू

प्रसंग सही गनत

दोहवारैत तेहवारैत आचार्य ।



4

चन्दा चूँकी क रौंडन सीमेँ

चूना सुबखी जेपेत

एकठा गेव दक्क संगमबमबिया मूर्ति खानि

जग जीत जेनकै हमब गौंथा  
मुबती क झूँ, खाँ रौंद करैत  
रैसर झूँदा मे

मुबती के शुभ क्षण मे स्थापित करैत

एकदम सकुत सीमेँ सँ

‘ हे आचार्य उठरै रैसर नग’

आ दु कण्ठन लोहा क त्रिन रौंहि

‘ हे आचार्य निकरै नग’



आ मुवती क हाथ मे एकठा कितारै बाथि

‘ हे आचार्य दोसब पोथी नग मांगरै ’

आ मुर्तिस्थापना क रैबखी मनरैत

‘ हे आचार्य आन दिन यादि नग कबरै ’

एक लाख गुंठा सँ राउंडबी राहि

‘ हे आचार्य एमहब ओमहब रौएनए रँद कक ’

5

हे महाकरि यात्री

एक दिन हमरो गाम आरुँ

रैसुँ एक पहिब

ककु कनेक कार

रतियाड बाति भवि

रैह रैनीपुव ,रहेड १ छपैत



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

बिदेह घाट पाव करैत

दू कोसक चौबिस हबियबी मे डूँरन

मिथिलाक ई भूखंड के खेत

पहुँच हब गाम

जत सूतन हजार बबिख सँ एकठा महारुख ।

आरिते रात सुनिते खनके

बूँदबूँद हजार बबिस पवान हड्डी मे

फुट्टि उठैते नरपन्नर

मिथिलाक भूगोल मे फैलन

ओकर डाँव

साहित्य भ धनधान्य सँ भवि जेते

गामक आम मोह गार नागते मधुव संगीत

मज्जब ईकना ईँठते कोयली क कान





ওহুনা বিদ্যাপতিনগৰ ,চৌমথা ,সমোষ্ঠিযা ক যাত্রী

এক কোস পশ্চিমে সঁ বঁদলৌত বঁষ্ট

বঁষ্টেত কবিয়েনক মিলকুণী সঁ

বঁনাবঁত স্বগম স্বৰিধাসপনন্ যাত্রী

সুদা দেখিতে অহাকৈ বঁঠরী  
যাদি কব রাগতে ও মহাযাত্রী

আ সমাজ ,গতিহাসক ও ক্ষণ

ধর্মদর্শন মে বপষ্টন ও কানখাড

যতুপি অহাকৈ বিচাব অলগ

আ বঁঠরী একদম অলগ

তৈযো গা ভেঁষ্ট

সধাবণ নগ হেতে

সধাবণ নগ.....



6

भगवान जगन्नाथक ईश्वर्य के ललकारैत आ गाम

दुरि बहन अपन छोटपन मे

संस्तुत भूमरा भूमरा

राजरा रतियेराक अहंकार

आ अहंकार क कतेको बृत्त

छोप चंदने तक ककर ठमकर

किछ बृत्त एक-दोसब मे घुमियागत

नोकरी, कर, जमीन, पैसा आ बृहिक बृत्त

आ सरी घब मे एकठा मास्टब हेराक

दस स पाँच तक पढ़ेरा



मानवसिंह

आ नग पठरौक ओतरे प्रवस्काव

महीने महीने दबमाता उठैरौ

आ एकठा त्रिमिष्टेड दुनिया मे बहरौक खतबनाक  
संस्काव

तहिना पूजापाठ , गपशीप , दैनदिनी

नर-नर अहंकाव गाम के घेबि बहन

के कत्त कमाए डैक



सबकाबी आ रिन सबकाबी

एक नम्रव आ दु नम्रव

राउग कम काष्ठ क रेशी छनव

रैक मे अस्पताल मे

ठाकेदाबी सँ

टोबि दिनवपन सँ.....

गामक अर्ककाव त रैह डैक



रस ओकव हूँ बिये रदनलौ  
आ रौखा जत बह छै

जे करै छै

रस कमागत बह

आ अहंकारे संग रठरैत बह

थोपड़ १ सँ थपड़ १ एकचबिया

पक्का दूमहना

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका* बिदेह



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तीनमहता ,चविमहता.....

ई कनापव अपन यंत्र

[ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाड ।



चंदन कयाव सा

सबबा, मदलेश्वर स्थान

मधुरैनी, बिहार



## गजव-१

नैनक रौण चलाके हमब अपठै खेत मे प्राण नेलौं

मूठहि छत्र जे प्रेम-पिहानी से सभठै हम जानि  
गेलौं

सम्पत खयने बही अहाँ जे आयर हमब सपना मे

सपना देखर सपने बहर निम्ना अहाँ दहानि नेलौं

बैह मोन जे प्रेम-बस सँ भोजा गठर नूतन जिनगी

हम एहि मे सौबल मिनबेलौं अहाँ नोब सँ सानि  
देलौं

मोन छत्र जे मुँज गगन मे उडर अहाँ आ हम सँगे

उडि गेलौं कतह अहाँ ने जानि हमबा एहिठाँ छानि  
गेलौं

हमबा रिन जँ जीरि सकी तह जीरू अहाँ सुखक  
जिनगी

राष्ट्र तकिते अहाँ के "चंदन" काष्टर जिनगी ठानि  
नेलौं



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

-----रर्षि-२१-----

## गजव-२

उजवन गाढी जँका नगौंछे गाम हमब  
छुप्पी सधने किएक कनेछे गाम हमब  
नरकी कनिष्ठा जँका छुल्लेजे गाम हमब  
रिधरा नाबी रैनन कनेछे गाम हमब  
भवने-प्रबने हँसि छुल्लेजे गाम हमब  
दुखव ठापव जँका फिरैछे गाम हमब  
प्रीतक पाँती गरय छुल्लेजे गाम हमब  
उकछा-पौंछी किएक करैछे गाम हमब  
निर्मल-निष्ठुर रास छुल्लेजे गाम हमब  
"चंदन" किए डेरौन नगौंछे गाम हमब

-----रर्षि-१७-----

## गजव-३





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गङ्गापत्रिका

करेजके पाखर रैना दिख

पिबीतके आखर मिष्ट दिख

सपन जनम भविकेव देखन

कहत की नोबहि भसा दिख

जड़त छै जे आगि रिवरक

कहत छी तकवा मिमा दिख

जनमक संगी रैनकि रैदना

कहत छी नाता कष्ट दिख

बकष्टन "चंदन" मोन रैकन

कियोत प्रीतम के बुना दिख

12-1222-122

गजब-४

मिथिला बाजक खातिर मैथिल नदरे कबते



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

खुनसँ भिजने धवती मिथिला रैनरे कबते

निज मातृभूमि उथोनक हेतु नङ्ग ते बहते

मायक राजक खातिर सति मबरै कबते

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक स्वाभिमानक बक्षार्थ

निज प्राणहु के उसेखा मैथिल कबरै कबते

कमला-गंगा-कौशी-गंडकक सम्पत खा मैथिल

अनगहि राजक सपना पूरा कबरै कबते

जेते ने रार्थ रैनदान आरै कोनो रैनदानी के

"चंदन" ठोस प्रतिकाव मैथिल कबरै कबते

-----रर्ण-:†-----

मिथिला-मैथिल-मैथिली अस्मितक बक्षक हेतु

नङ्गनिहाव, समस्त रैनदानी के समर्पित.

गजव-३



कहिये सँ कतिथायन कने छथि जानकी  
कहिये सँ बिबिथायन फिरै छथि जानकी  
मिथिला सँ रिधुथायन नगौ छथि जानकी  
मैथिल सँ थिसिथायन नगौ छथि जानकी  
घब-घब सँ रौंथायन फिरै छथि जानकी  
घब-घब त२ छिछिथायन फिरै छथि जानकी  
बामहि सँ डेवायन नगौ छथि जानकी  
जिनगी सँ अकछायन नगौ छथि जानकी  
अपबाध की कयतनि प्रुँछै छथि जानकी  
छप्पहि जनक "चंदन" कने छथि जानकी  
2212 + 2212 + 2212 - रँहरे-बजज.



किछ रौत एहन जे कना गेल हमरा  
जिनगीक नर माने सिखा गेल हमरा  
सपनाक दुनिया डनहूँ मूलेत मूला  
तखनहि ठूठल रिडि १ जगा गेल हमरा  
पावन अपन पेष्टक करैए रूकुरो  
आनोक हित जीरूँ रूमा गेल हमरा  
अपन हवथ हवथित बहैछे सब का  
अनके दुखहि कानरै रैता गेल हमरा  
“चंदन”मनुज जीरन रिंते नहि अकावथ  
जिनगीक सब मकसदि गना गेल हमरा  
2212-2212-2122

## गजब-१



नैनक नीब भीजन चीब जहना तीब मे

करेजा स्त्रीब सीचन रीब जहना तीब मे

रैसन नीड़ कुक अशीब जहना तीब मे

नागर भीड़ मुक रैगीब जहना तीब मे

आसक सीब सुथे नै नीब जहना तीब मे

चासक सीब गरै छै सीब जहना तीब मे

देशीक रीब भेन फकीब जहना तीब मे

नेताक भीड़ गिरैछै थीब जहना तीब मे

सनने खुन दीपदी चीब जहना तीब मे

नागर घुन काया प्ररीब जहना तीब मे

-----रर्ण-१७-----

गजब-+



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

महर्षि

मन रीणा ताव नकाव भवन

मैथिन जन के हुकाव प्ररन

रहुत आंखि केव नोव रहन

रहुत जगक दूकोव सहन

आरं उचित उपचाव कवरं

शेदूक प्रहाव जे खून रहन

निज अधिकारक हेतु नडरं

सौभाग्य जै प्राण तियागै पवन

मिथिना-बाजक तह माँग अछन

"चंदन" मैथिन नडा ते डठन

-----रर्ण-१२-----

हजव

कनिया हमर रड ग्वारन्ती बुमा गेन हमबा



किएक क्रमावति लोक मरेए जना गेल हमबा

शांती जहिँ घब मे पैसरी तहिँ सँ छी अशांत

आति घबमे मचल तेहन जे मिष्टा गेल हमबा

साम्ब नगै छहिँ सौतिन सम्ब नगैन्ह चबराह

गावि अलौकिक हुनका झूठक वजा गेल हमबा

सर्ग गौतमी के नडिथि भैस्वर के नहि पवराह

आरत२ देखु दुनु भागयो रिच रैना गेल हमबा

बौ दैरा नहि जननौ किछु हँसनौ राहक काँस

“चंदन” कपक माया हँसबी नष्टका गेल हमबा

### बराँग-1

रैक रिन दराँग चलि गेलौ ओकब जान

आइ त२ झुदा कबजा न२ भेलौ गौदान



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानसिंह

थाय अंधहे पेष्ट कष्टक जिनगी सकत

मबर तः सौजनी मारैत छै सबकान ।

### करौण-2

नोबसँ सिऊ आँचब आरँ नोटोड़ा दिणु

ऊँ आँगुव कियो देखरै कब तोड़ा दिणु

बागुं भय सीता मैया के सपथ धक

मिथिला बाजक शत्रु मुलु मटोड़ा दिणु ।

### करौण-3

छूँटन रान्ह रँहलौ गामक गाम हेल

गेन दहा जिनगी कतेको ठाम हेल

कागतक नार, सबकारो तपेव छलौ

झुदा, रौंठि भासन कतेको जान हेल ।

### करौण-4





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानसुषि

दू टुक कहलौ दू हाँक भेल सँध  
छप्पटि जँ बहलौ होँका गेल सँध  
पस भवन ठौसत पसीसैत घार सन  
सलक शून गाढ़ि रँहा देल सँध ।

### करीब-5

संध्या-रदन, काँठ सिबिखल घसि छी  
भोव-साँन आवती घबिघण्ट पिछै छी  
भाँग पीरि मस्तक तिवखल नेपे छी  
कचि-कचि रोहू मुड़ १ झबिघण्ट चले छी ।

### कता-1

मन रीणा सँ डठि बहव छैक करुण बाग  
माँछि मिथिलाक किष्क क२ बहलौ रिवाप



## सनव किअक शोषित सँ मैथिल भू-भाग

सुन२ ये नहि किअ अरैछ कोकिल-अवाप ?

आकाशिराजिक दबलंगा केन्द्र सँ दिनकि १०-०३-२००८  
के तबला-कसुम कार्यक्रम मे असाबित एकठा  
करिता:-

(1) रैली रैलीह पविषय डोव । ।

झूठ पब मुस्करी आँखि मे नोव

कन्यागत के लागत रैकोव

थेलौत दुलीह जे रौराक कोव

से रैलीह आग पविषय डोव ।

दुलीह चान से भेलीह चकोव



घब ससुबक हेतेहि ञजोव

माय करेजा केरनि कठोव

रौरू आँखि सँ सब-सब नोव, रैठौ रैठनीह पविषाय  
डोव । ।

## 2. मायक सपथ छी दह बहन

मैथिली के खुन सँ देखु जनक नगरी बंगल  
जानकी अँगना मे देखु बारणो घुमिब बहन ।  
देखु सियाके बज सँ जनक-खेतक बज सनल  
घायल मिथिला मैथिली रौठ रिचे छथि पड़ल ।  
माय अप्पन पत्र सँ आद्वान छथि कअब बहन  
ऊँरू जागु रीब मैथिल किअ छी अहाँ छुप पड़ल ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

देखु मिथिला बाजक सपना शोणितक धारे रँहन

आउ मिनि एकवा रँचाउ छी मायक सपथ दहबहन ।

### 3. घुमि अयनहु कशेग्विब-स्थान

पग-पग खन्ना पोथवि धाव

चव-चाँचव मे नार सराव

छानि बहन खडि माहु-मथान

घुमि अयनहु कशेग्विब-स्थान ।

छैतहु मास मन-मन पानि

उरँडुरँ पोथवि भवने मोनि

छोपेछु प्रमक गवमा धान

घुमि अयनहु कशेग्विब-स्थान ।



धप-धप रौंडल प्रनिमक चान  
प्रवरौक सिहकी स्रधा समान  
बूढरौ मठकय जेना जुथान  
घुमि अघतहू कशेस्रिब-स्थान ।

थस्त मे जन्न सड़क नुकायन  
ठूठन प्रतिया रौन्हा भासन  
थेत रैनन अडि सिङ्गु समान  
घुमि अघतहू कशेस्रिब-स्थान ।

हव-हव-हव सगरौ अनघोत  
स्रनन नचाबी रैजिते दोन



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

महर्षिगिरि

रैमभोला छथि रैड १ महान

घुमि अयनह कशेन्रिब-स्थान

ताअर

गदह रैव

गिबगिष्ट रैजय

पहिले सॉम ।

घुबक पुआँ

पुआयन अकास

मानक येवि ।

रैबन सॉम

गोसाडनिक गीत



गमके धूप ।

गोगठा आँच

नहनन नहके

बाति अन्हाव ।

मकखा बोष्टी

गमकेत होबन

माडुक मोब ।

अँगना पिठ १

रैसन खेनहाव

नेना भुष्टका ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

निः शिष्ट, बाति

प्रियतम सगमे

हँसी-ठिठोनी ।

प्रेमहि लीन

गमकेत कामिनी

भोवरा बाति ।

ई कनापब अपन मतिर

[ggajendr a@videha.com](mailto:ggajendr a@videha.com) पब पठाड ।



जगदानन्द या मन्त्र

ग्राम पोस्ट- हविप्रब डीहठेन, मधुबनी





गजल- १

छपि-छपि कः सदिखन कने छी हम

घुष्टि-घुष्टि कः दिन बाति मरे छी हम

नगन एहन ह छै छन नै बूमन

रिबह के आगि मे आरै जरे छी हम

छन भवि के दूरी सहरो नै जागए

छन-छन घुष्टि-घुष्टि कः कने छी हम

सरै त रैतार कहैत अछि हमबा

हूनक धान मे बमन बहै छी हम

जाहि रौष्ट पब चनि प्रियतम गेना



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मन ओ रौठ के निहावि तके छी हम

(सबन रागिक रँहब, रण-१४)

-----  
-----

गजन-२

ज नाराज छी मानि जाऊ

पिया प्रेम रिपि जानि जाऊ

महिस भेल पावी तरे अछि

घबक थीवसा सानि जाऊ

मबन माछ पौवन दही अछि

हिया हमर सब गानि जाऊ



करीया रँडद झगत पवसू

किछो नै कनी कानि जाडु

छिछैत रोपनी हेत कोना

घरो घुबि अहाँ जानि जाडु

(रँहरे-झतकाबिरँ, 122 -122-122)

-----  
-----

गजल-३

हम जन्म केँ दुँगव छी प्रेमक लेन तबसैत बहनौ

भैठैत किवण एक आसक तकरो त मिसरैत बहनौ



दूध एहि के केथनो नै की प्रेम किछ नै पएनो

अफसोस की एहि दुनिया मे हमहुँ जीरैत बहनो

चमकैत सभ रंजु के हम अनजान मे सोन बुननो

सोना जखन हम पएनो नै बुन क हबैरैत बहनो

किछ नै बहन आरै अपने के रिसवि मे लागि गेलो

लोठा भवत भाँगे मे सर किछ अपन गमरैत बहनो

आँखि रिसवि गेल आसा, अनुबाग सरैठा रिसबनो

गेलो हवाएँ दूध तन-मन अपन रिसरैत बहनो

( रहरे अजसम रा अजस

2212-2122, दू-दू रैव सभ पाति मे )



गजल-४

खुन सँ भिजलौ धवती मिथना रैनरै कबते

आरै जोड लगारै कियो नडा फहरै कबते

सुन रनिदानी सुन शिनानी आरै दिन दुब नै

रिशिक नक्का मे मिथनाक नाम देखै कबते

कतरौ चरते रम निकलौ चाहे हमर दम

आति रठन आग आरै जुनि ग बकरै कबते

रहुत दिनक सभ नै सहै आरै करौ

गर्म सोनित त आरै हिनकोब माबरै कबते



एक थुनक रूँद सँ सय-सय बँज् जन्म लेते  
आताताग सँ रँदना ओ चुनि-चुनि लेखे कबते

(सबन रणिक रँहव, रण-१५)

जगदानन्द ना मन्

-----  
-----

गजव-३

हमर जीरन भवि करेजा तुष्टि ते बहन  
सरँ कियो हमरा सँ आग ह्नुष्टि ते बहन

जेकवा हम अपन तन मन सरँ सोपलौ



मोन केँ ओ हमर सदिखन ब्रष्टते बहन

हमर भागक कनिक निखनाहा देखियौ

किहु जे निखलौं छने मेँ मिष्टते बहन

पीठ पाँछा आरँ रते गबदैन थछि

प्रेम एक दोसब सँ सरतवि छुष्टते बहन

आरँ रैसन मन नमामन हावन कने

जोडलौं कतरौं झुदा मन छुष्टते बहन

रहर जदीद -2122-2122-2212

-----



ई कनापब अपन यंत्र

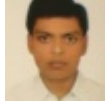
[ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाड ।



१. अमित मिश्र- गजन २. मन्नाजी-करौं



१



अमित मिश्र

गजन

भूख जाडन लोक कोना हँसि सकैए  
नोब कानन लोक कोना हँसि सकैए

देखने जे होग अर्थी अपन लोकक  
दर्द जागन लोक कोना हँसि सकैए

लोल जागन मोह मोहन लोक हँसते  
सँस काँठन लोक कोना हँसि सकैए





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जहव रैनरै जे कहाँ ओ नोव रैनरै  
जहव चाँद लोको कोना हँसि सकैए

दर्द दै जे छी कने अपने न देखु  
छोछ नागर लोको कोना हँसि सकैए

बाथि हमरो नोव अपना आँखि सोछु  
“अमित” “मावत” लोको कोना हँसि सकैए

हागनातुन  
2122 तीन रैव सर पाँति मे  
रैनरे-बमत

=====

गजल

थिडकी सँ सीधे देखै छुनौं हम चान  
घन तिमिर मोनक छुनौं छुनौं हम चान

हेते अपन फेरौ भैँष्टे ओते जा क  
ते जागि आशा नगरै छुनौं हम चान

दिन भवि समाजक पहवा कतेको नयन  
छुरि सर्ग तोहव भैँष्टे छुनौं हम चान



नागौ तरेगण नोचन पतक सपकैत  
रनि मेघ घोघष्ट नागौ छनौ हम चान

शुभ बाति फेरौ भैष्टरै अमिय नेहक न  
सरै दिन अमित नर आरै छनौ हम चान

मस्तुफगबान-महभुनात-महभुनात  
{दीर्घ-दीर्घ-द्वय-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-द्वय-दीर्घ-दीर्घ-  
दीर्घ-द्वय}  
रहरै-सनीम

२



मन्नाजी

करौग

1

258



जड़रै अहाँ जक दिया राती जकाँ  
गाएँ तँ गाँउ जेना पवती जकाँ  
ताकि कनथिये मोन ने बिनाउ  
अहाँ कक जूनि उकपाती जकाँ

2

दिखए सिनेह अपन नैना जानि कए  
हमछँ दुँगब निमहरै अपना मानि कए  
जौ छोड़रै अनेकथा सन हमबा  
तँ हककि मवरै एकसब कानि कए

3

दुँष्टन छन नेह आरै तँ जोड़ भए गेलै  
दुँष्टन दूधन रुदा चितछेव भए गेलै



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जखने निखनके पाँतीमे मोनक राँत

दुनूक नेहक तँ भंडाहोड़ भए गेलौ

4

हिना देनक गगनकेँ माबि तीव

रँचा नेनक जे अर्धनग्न चीव

द्वीपदीकेँ रँठ १ रम्य केनक बस्सा

संसार भवि रैष्ठन छन रहन रीव

5

उमरे रम्यक संग रँठा जूथाग छै

नजबि सोनिया-सोनी भए क नजाग छै

प्रेमक भार जे नै पठा पारै अछि

तखन रूम जे ओ छदैसँ कसाग अछि

6



मोन भए उठन दुखित होहकारीसँ  
उठि दर्शक भागन मारामारीसँ  
आयोजक तँ पथने बहर कान अपन  
कर्ता देखाव भेला जतियारीसँ

7

जखन सब केओ देखु नेहार भेलै  
तखन रूम जे गोष्ठी तँ तार भेलै  
दर्शक जखने नूमि उठन मनसँ  
तखने तँ संयोजक मानोमार भेलै

8

ई शत्रुकेँ तँ तोड़ि लेन दम चाली  
मात्र चित्रगुप्त नै ई लेन यम चाली



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

महर्षिगिरि

अहसँ किछु नै रिगड़ते एकब

एकबा शोधै जेन तँ खानी हम चानी

9

जतेक चानी जी त्रिख सपनामे

बाखु यथार्थ सँजोगि अपनामे

उषियाउ नै एकपेड़ा या रौंठपव

नै तँ जाएत नापन जिनगी नपनामे

10

ताकि कनडेड़ा ए कतए नुकेनहुँ

कछु हेब किए नजबि हेबि जेनहुँ

रिहूसत रैसन छी सोनिया अहाँ

आरँ कछु अही कोना हेब एनहुँ



11

दै छिई आशीरदि तगा क हानी  
छी जोगावमे ईखनो जे कते तानी  
राह की जमाना देखागए हमबा  
सर छे गएह मानी की नै मानी

ई कनापब अपन मतिर  
[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाड ।

बिदेह नूतन अंक मिथिला कला संगीत



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानसिक



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्वागत शो

चित्रमय मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.



उमेश मण्डल

मिथिलाक रनस्पति स्वागत शो

264





मिथिलाक जीर-जल्लु म्हागड शौ

मिथिलाक जिनगी म्हागड शौ

मिथिलाक रनस्पति/ मिथिलाक जीर जल्लु/ मिथिलाक  
जिनगी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/> )

ई कनापब अपन मतिर

[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाड ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय प्रकाश (मूल  
हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद रिनित उपेत)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासंस्कृत)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला  
मा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुराद  
श्रीमती कपा धीर आ श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देरी-भ्रम

8



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह



अम्बिता सार्वगीक ओडिया  
करिता- ओडियासँ अङ्ग्लि अम्बिता सार्वगी द्वारा स्रय,



अङ्ग्लिसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

हिवकैव

कियो नै सिखैक कहियो

एक ठोप माहिर देनाथ

रौसनमे



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

निर्देशित सबतक ।

हम पूर्ण करे हवि गेलौं ।

बुसिक मरेत पानि

सुचा सबमे-

रा दोसब, जीरन नै अछि जीरन, किंशगत ।

हम हेबा गेलौं ।

कौन माह्व बिस्वासकेँ सङ्गमित केनक, जे

नागर सदिखन



मात्र द्वैकडी-द्वैकडी हेरौ नैन ।

अकाशिक द्वैकडी

चिह्नक दहागत पाँचिमे;

नहिये अकाशि नहिये डाह

छन एकव चांग्रबमे ।

रिश्मास, जेना

पुर्णिमाक वातिक समुद्र

जे घुबरेँए सभठा नैन रौस्त

जखन ओ घुबरेँए हिनकोब ।

की हिनकोब घुबरेँए

रिश्मासक आवि



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

छोटे हाथसँ रौनपव रैनन ?

की हिनकोव घुवा सकैए

एकान्त जिनगीमे निबाड रैखा ?

पनिसोखाक द्वीपसँ

स्नान

आरेशिसँ छोटे कागचक नाहमे ?

आ, जीराक स्थितप्रज्ञ अभिनाया

समयसँ ध्यान हठै क२ ?

की हिनकोव घुवा सकैए-

पराजय ?

आ, हेवा गेनाओ ?

(अभिज्ञाना सार्वगीक ओडिया करिता "धेऊ कान")

रौनानां धते



१. जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनित' २. डा.  
शशिधर कमर 'बिदेह'

१



जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनित'

रौन गीत

रुमरहि खातिर स्रुज उगज छथि



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हमबहि खातिब चान

हमबहि खातिब कोष्टि तरेगन

हमबहि ले आसमान ।

हमबहि खातिब साँन पडगए

बाति स होगए प्रात

हमबहि खातिब रौद अरैए

हमबहि लेन रसात

हमबहि खातिब गाढ फडगए

जामन, आम, नताम ।

पानि तपैए, भाक रैनैए

भाक उडगए, मेघ रैनैए





सेहो हमरे ले उपवस

धवती पव बिमबिम रबसैए

हमबहि खातिव धवती मैया

देथि गह्रम आ पान ।

हमबहि खातिव बून बूनागछ

उज्जव- पीयव- तान

कतह् असमित सागर अछि त

परित कतह् रिशोर

सभठा हमबहि नेन रैनार

बुका गेला भगरान ।



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानसिंह



डा. शशिधर कुमार

~ बिदेह ~

एम.डी.(आय.) -  
कायचिकित्सा

कानूज अंक आचार्य एन्ड रिसर्च सेटव, निगडी -  
शानिकवा, पूणा (महाराष्ट्र) - ४११०४४

हमहुँ आझ सँ अक्खु जयरेँ

(बौवगीत)

हमहुँ आझ सँ अक्खु जयरेँ



सीथरै रूते रौत ।

आरै ले बहरै मुकथ रनि क२

कवरै ले कोनो वाथ । ।

धनरोपनी - कमठनी वष ले

कवरै पठ १३ के कात ।

आरै ले पेठ - दबद बुसिये

ले आरै दूखेते माथ । ।

हमरै पठरै भवि संसार आ

मिथिवा केव अतिहास ।

पठरै कोना मेते भावत, आ

मिथिवा केव विकास । ।



की रिद्धापति, प्रेमचन्द,

गोर्की, होमर विखवाह ।

कत२ ठाठ छी की करैत छी

नीक छी की अश्ववाह ? ?

हमरूँ पढ़ै छान - सुकज आ

ग्रह - उपग्रहक खगोल ।

मिथिला - भावत केव चौहद्दी,

दूनिषा केव भूगोल । ।

हमरूँ सीखै नपूर - जोखरूँ,

गणितक गुना पथार ।



नहिं हिसारि सँ हम घरैछरै

कतरौ हो ओ भारी । ।

हमरै बुझरै जीर - जखु केव

रैनव कोना छै देह ।

कोना यन्त्र सब काज करै छै,

अशु - पवमाशुक भेद । ।

धियापुता मिथिवाक नाहि ठा,

पव रैझका अतिवासा ।

साम्भव भावत, साम्भव मिथिवा,

शिक्षित मिथिवाभाषा । ।



३ कनापव अपन यंत्र

[ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पठाड ।

### रैछा लोकनि द्वारा स्वीकृत श्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्महर्ष (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने)  
सर्वप्रथम अपन दुनु हाथ देखबैक चाही, आ आ श्लोक  
रैबैक चाही ।

कवांथे रसते नक्षत्रः कवमन्त्र सबस्यती ।

कवमन्त्रे स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षत्र रैसत छथि, कवक मध्यमे  
सबस्यती, कवक मन्त्रमे ब्रह्मा स्थित छथि । भोवमे  
ताहि द्वारा कवक दर्शन कवबैक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसबैक काल-

दीपमन्त्रे स्थितो ब्रह्मा दीपमन्त्र जनार्दनः ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

दीपाग्रे शिखरः प्राकटः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ज्वाला, दीपक मध्याभागमे जनार्दन  
(रिपु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि ।  
हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्वतराँक कार-

वामं स्कन्दं हनुमन्तुं रैनतेर्यं वृकोदवम् ।

शियने यः स्वरैर्निर्ण दूःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सभ दिन स्वतराँस पहिने  
वाम, क्रमावस्त्रामी, हनुमान्, गकड आऽ भीमक स्पर्श  
करैत छथि, हुनकर दूःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहराँक समय-

गङ्गा च यद्गने टैर गोदारवि सबस्त्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गंगा, यद्गना, गोदारवी, सबस्त्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ  
कारेवी धार । एहि जलमे अपन सान्निध्य दिख ।

३. उडुवर्ष यस्मैन्द्रस्तु हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

वर्षं तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

समूहक उतवमे खाइ हिमानयक दक्षिणमे भावत अछि  
खाइ ओतुका सन्तति भावती कहैत छथि ।

३. अहना द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पशुक ना अरेल्लि महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तारा खाइ  
मन्दोदरी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक अवण करैत  
छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भइ जागत छन्हि ।

१. अग्निथोमा रत्निरासो हनुमान्च रिभीषणः ।

धृपः पशुवामश्च संतुते चिबङ्गीरिनः ॥

अग्निथोमा, रत्नि, रास, हनुमान्, रिभीषण, धृपाचार्य खाइ  
पशुवाम- ३ सात ठाँ चिबङ्गीरी कहैत छथि ।

४. साते भरतु अर्पिता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा वृद्धा यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष्य सतामस्तु प्रसादान्तुष्ट धूर्जष्टैः

जाल्हरिफेननेथेर यन्त्रुषि शिषिनः कना ॥

६. रौनोहँ जगदानन्द न मे रौना सबसती ।





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अपूर्णे पचमे रर्षे रर्षियामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुरास्मित मर्षशून्य यजुर्देद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्निष्ठा प्रजापतिवृद्धिः । निर्भोकता  
देवताः । स्वादुकृतिशुद्धः । षड्जः स्वः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरक्षी जायतामा वायुष्टे वाजुन्यः  
श्वरेऽध्वराऽतिराधी महावथो जायतां दोग्ध्री  
धेनुर्दोतान्द्रानाशुः सन्तिः पर्वहिर्योरा जिह्नु वथेष्ठाः  
सन्नेयो हाराम्य यजमानस्य रीरो जायतां निकामे-  
निकामे नः पृज्या रर्षतु फनरत्ता नऽध्वयः पचान्ता  
योगेष्कमो नः' कप्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः ।  
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयानुरागः ।

ॐ दीर्घायुर्भवेत् । ॐ सौभाग्यरती भवेत् ।

हे भगवान् । अपन देशीमे सुयोगा आ सरीत्र  
रिद्धार्थी उपेन्न होथि, आ शत्रुके नशि कएनिहाव सैनिक  
उपेन्न होथि । अपन देशीक गाय थुरै दुध दय रानी,  
रैवद भाव रहन कवएमे सम्म होथि आ घोडा ।  
ह्वित कपे दौगय रैना होए । म्नीगण नगवक  
नेत्र कवरामे सम्म होथि आ हारक सभामे



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

ओजपूर्ण भाषा देरैयरीना आ नेत्र देरौमे सम्म  
होथि । अपन देशेमे जखन आरथक होय रषा होए  
आ ओषधिक-रूँठी सरदा परिपक्व होगत बहए । एर  
क्रमे सब तबहै हमरा सबक कर्णा होए । शत्रुक  
रूँझिक नाश होए आ मित्रक उदय होए ॥

मनुष्यके कोन रसुक गछा कबरौक चाली तकव रर्षि  
एहि मंत्रमे कएत गेल अछि ।

एहिमे राचकब्रह्मापमान्ड्रकाव अछि ।

अन्नय-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि ग्रन्थ पविर्ण ब्रह्म

बाष्प्रे - देशेमे

ब्रह्मरर्षि-ब्रह्म रिद्याक तेजस हकठ

आ जायता- उपेन होए

बाज्जः - बाजा

श्वरे- रिना डव रीना

अम्बरा- रीण चनेरौमे निष्पण



१०६ स अंक १५ मङ्ग २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हतिरानी-शत्रुके तावण दय रीना

महाबोधो-पेघ बथ रीना रीव

दोष्ट्री-कामना(दुध पूर्ण कवण रीनी)

धेनुरीठान्द्रान्धः धेनुर-गौ रा राणी रीठान्द्रा-

पेघ रीवद न्धः -आन्धः -बुबित

सन्धिः -घोड़ १

प्रवर्द्धिरीना- प्रवर्द्धि- रारहावके धावण कवण रीनी

रीना-म्री

जिह्वा-शत्रुके जीतए रीना

बथेष्ठाः -बथ पव स्थि

सुतेयो-उत्तम सभामे

हराम्-हरा जेहन

यजमानम्-बाजाक बाजामे

रीना-शत्रुके पवाजित कवणरीना

निकामे-निकामे-निश्चयहाकत कार्यमे



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नः-हमब सभक

प्रज्ञा-मेघ

रश्मि-रश्मि हेत

हमरब-उत्तम हम रत्ना

उषधः-उषधिः

पद्या-पाक

योगेश्वर-अनन्त नन्त करैक हेतु कएन गेल  
योगक बन्ध

नः-हमबा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेत

त्रिभुक्त अन्न-हे त्रैलोक्य, हमब बाज्यमे त्रैलोक्य  
नीक पार्थिव रिद्धा रत्ना, बाज्य-रीवतीरदाज, दुष दए  
रानी गाय, दौगय रत्ना जलु, उद्यमी नारी होथि ।  
पार्थिव आरथकता पडना पब रश्मि देथि, हम देय  
रत्ना गाढ पाक, हम सभ संपत्ति अर्जित/संरक्षित  
करी ।



## 8.VI DEHA FOR NON RESI DENTS

### 8.1 to 8.3 MAI TH LI LI TERATURE I N ENGLI SH

8.1.1.The Comet –GAJENDRA THAKUR  
transl ated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The\_Sci ence\_of \_Wor ds- GAJENDRA  
THAKUR transl ated by the author  
hi msel f

8.1.3.On \_t he \_di ce-  
boar d\_of \_t he \_mi l lenni um- GAJENDRA  
THAKUR transl ated by Jyoti Jha  
chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)-  
SHEFALI KA VERMA transl ated by Dr.  
Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya  
Verma



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचना-लेखन

Input : (कोष्ठिकमे देरनागरी, मिथिलासुब किंरा  
होनेष्टिक-रोमनमे ठागप करु । Input in  
Devanagari, Mthilakshara or  
Phonetic-Roman.) Output :  
(परिणाम देरनागरी, मिथिलासुब आ होनेष्टिक-रोमन/  
रोमनमे । Result in Devanagari,  
Mthilakshara and Phonetic-Roman/  
Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

अंग्रेजी-मैथिली-कोष / मैथिली-अंग्रेजी-कोष  
प्राजेक्टके आगु रूढ़, अपन सुमार आ योगदान  
आ-मेरु द्वारा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर  
पठाउ ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष  
(अंष्ट्रबनेष्टपव पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

एस.क्यू.एन. सर्वर आधारित -Based on ms-sql  
server Maithili-English and  
English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि  
द्वारा रैनाउत मानक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा  
सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाल आ भावतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि  
द्वारा रैनाउत मानक शैली

१.१. नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा  
रैनाउत मानक उच्चारण आ लेखन शैली  
(भाषाशास्त्री डा. बामराताव यादवक धारणाके पूर्ण  
कपर्स सङ्ग त्रि निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमार्गव आ अनुसूचक पञ्चमार्गवबन्तुगत ७, ८, ९, १०,  
न एर म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अनुसूचक शिष्टक  
अनुसूचक जाहि रङ्गक अक्षर बहैत अछि ओही रङ्गक  
पञ्चमार्गव अरैत अछि । जेना-  
अरु (क रङ्गक बहैरक कारणे अनुसूचक ७ आएत  
अछि । )  
पञ्च (च रङ्गक बहैरक कारणे अनुसूचक ८ आएत  
अछि । )



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

खल (१) रत्नाक बहरीक कावणे खलमे न् आएन  
खल । )

सखि (त रत्नाक बहरीक कावणे खलमे न् आएन  
खल । )

खल (प रत्नाक बहरीक कावणे खलमे म् आएन  
खल । )

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत खल ।  
पञ्चमाङ्कक रीदनामे अपिकाणि जगहपव खलमे  
प्रयोग देखन जागल । जेना- अंक, पंच, खल,  
सखि, खल आदि । रत्नाकबहरीक पत्रिका गोरिनद नाक  
कहरी छनि जे करत्ना, चरत्ना आ १२रत्नासँ पूर्ण खलमे  
लिखन जाए तथा तरत्ना आ परत्नासँ पूर्ण पञ्चमाङ्कमे  
लिखन जाए । जेना- अंक, चरत्ना, खल, खल तथा  
कम्पन । अदा हिन्दीक निकट बहरी आधुनिक लेखक  
एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि खल आ  
कम्पनक जगहपव सेहो अंत आ कम्पन लिखैत देखन  
जागत छथि ।

नरीन पत्रिका किछ सुविधाजनक अरथ छैक । किएक  
तँ एहिमे समय आ स्थानक रीत होगत छैक ।

अदा कतोक रीत हस्तलेखन रा अदामे खलमे  
छोट सन रीन्द् स्पष्ट, नहि बेनासँ अर्थक अर्थ होगत  
सेहो देखन जागत खल । खलमे प्रयोगमे  
उच्चारण-दोषक समझारना सेहो ततरी देखन जागत  
खल । एतदर्थ कसँ न२ क२ परत्ना पवि पञ्चमाङ्कमे  
प्रयोग करी उचित खल । यसँ न२ क२ छ पवि





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अस्मिन् सन्ध्या अनुसन्ध्या प्रयोग कबरीमे कतह कोनो  
बिराद नहि देखन जागहु ।

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण “व् ह”जकाँ होगत  
अछि । अतः जतह “व् ह”क उच्चारण हो ओतह  
मात्र ठ लिखन जाए । आन ठाम आनी ठ लिखन  
जएरौक चाली । जेना-  
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि,  
ठाठ आदि ।  
ठ = पढ़ा, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, साँठ, गाठ,  
बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।  
उपराज शिष्ट, सभकेँ देखनासँ ए स्पष्ट होगत अछि  
जे साधारणतया शिष्टक श्रुतिमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे  
ठ अरैत अछि । एएह नियम ड आ डक सम्बन्ध  
सेहो लागू होगत अछि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रँ कएन  
जागत अछि, झुदा ओकरा रँ रूपमे नहि लिखन  
जएरौक चाली । जेना- उच्चारण : रँदनाथ, रिद्धा,  
नरँ, देरँता, रिष्ट, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक  
स्थानपर क्रमशः रँदनाथ, रिद्धा, नर, देरता, रिष्ट,  
रँशि, रँदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक  
नेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन,  
ओजह आदि ।



४. य आ ज : कतह-कतह “य”क उच्चारण “ज”जका  
करैत देखत जागत अछि, झुदा ओकरा ज नहि  
निखरौक चाही । उच्चारणमे यङ्ग, जदि, जझना, जुग,  
जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहत जाएरना शिछ,  
सभकेँ एमशः यङ्ग, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी,  
यदु, यम निखरौक चाही ।

३. ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनू निखत  
जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए  
आदि ।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय  
आदि ।

सामान्यतया शिछक शुरुमे ए मात्र अरैत अछि । जेना  
एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिछ सभक  
स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि  
कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थक सहित किछ  
जातिमे शिछक आवस्थामे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएन  
जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक  
अनुसर्षण कवरै उपहाज मानि एहि पुस्तकमे ओकरे  
प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनूक लेखनमे  
कोनो सहजता आ दूकहतक रीत नहि अछि । आ  
मैथिलीक सरसभाषणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एस



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

उपलब्ध, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

रैसी निकट छैक । खास क२ कएन, हएँ आदि  
कतिपय शिष्टकै केन, हँ आदि कपमे कतह-कतह  
निखन जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकै रैसी समीचीन  
प्रमाणित करैत छि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन  
लेखन-पवम्पवामे कोनो रीतपव रँन दैत कान शिष्टक  
पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि,  
अपनहू, ओकबहू, तकोरहि, टोष्टहि, आनहू आदि ।  
रूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एँ हूक  
स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत छि ।  
जेना- हुनके, अपनो, तकोर, टोष्ट, आनो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अपिकारितः षक  
उच्चारण थ होगत छि । जेना- षडान्न (थडयन्न),  
बोडनी (थोडनी), षष्टकोष (थष्टकोष), बृषेनी  
(बृथेनी), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

+.प्रनि-रूप : निम्नलिखित अरुस्थामे शिष्टसँ प्रनि-रूप  
भ२ जागत छि:  
(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य रा ए वृष्टु भ२ जागत  
छि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भ२  
जागत छि । ओकब आगाँ रूप-सूचक चिह्न रा  
रिकारी (° / २) नगाउन जागछ । जेना-



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन,  
उठए (उठय) पडतौक ।  
अपूर्ण कप : पठ' गेनाह, क' जेन, उठ' पडतौक ।  
पठ२ गेनाह, क२ जेन, उठ२ पडतौक ।  
(थ) पूर्णकालिक छत आय (थाए) प्रत्यये य (ए) ब्रु  
भ२ जागद्ध, झुदा जोप-सूचक रिकारी नहि नगाउन  
जागद्ध । जेना-  
पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरै, नहाए  
(य) अएनाह ।  
अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।  
(ग) स्त्री प्रत्य एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ  
रिशेषण तीनुमे ब्रु भ२ जागत अछि । जेना-  
पूर्ण कप : दोसबि मानिनि चलि गेलि ।  
अपूर्ण कप : दोसब मानिन चलि गेल ।  
(घ) वर्तमान छदबुक्त अन्तिम त ब्रु भ२ जागत  
अछि । जेना-  
पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।  
अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।  
(ङ) क्रियापदक अरमान एक, डक, ँक तथा हीकमे  
ब्रु भ२ जागत अछि । जेना-  
पूर्ण कप: डियोक, डियेक, डहीक, डोक, डैक,  
अरितेक, होगक ।  
अपूर्ण कप : डियौ, डिये, डही, डौ, डै, अरिते,  
होग ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, ह् तथा ह्कावक रूप भ२  
जागद्ध । जेना-

पूर्ण कप : डह्नि, कहरह्नि, कहरह्नु, गेवह, नहि ।

अपूर्ण कप : डनि, कहरनि, कहरनौ, गेवह, नग, नहि,  
ने ।

९. प्रनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो सब-प्रनि अपना  
जगहसँ हटि क२ दोसब ठाम चलि जागत अछि ।  
थाम क२ द्रस्य ग आ उक सँस्त्रमे ग रात लागू  
होगत अछि । मैथिलीकषा भ२ गेल शिछक मध्य रा  
अन्तमे जँ द्रस्य ग रा उ आरँ तँ ओकब प्रनि  
स्थानान्तरित भ२ एक अस्कर आगाँ आरि जागत  
अछि । जेना- शनि (शेगन), पानि (पागन), दानि (दागत),  
माष्टि (मागष्ट), काद्ध (काडद्ध), मास्र (माडस)  
आदि । झुदा तसेम शिछ, सभमे ग निथम लागू नहि  
होगत अछि । जेना- बश्मिके बगश्म आ स्रपाश्मके  
स्रपाडस नहि कहल जा सकैत अछि ।

१०. हलन्त(्)क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया  
हलन्त (्)क आरंभिकता नहि होगत अछि । काषा  
जे शिछक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत अछि ।  
झुदा संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आएन  
(तसेम) शिछ, सभमे हलन्त प्रयोग कएन जागत  
अछि । एहि पौथामे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकेँ मैथिली  
भाषा सँस्त्रा निथम अनुसार हलन्तरिहीन बाखन गेल



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अछि । झुदा र्याकवण सङ्ग्रही प्रयोजनक लेल  
अवारणक स्थानपब कतह-कतह हल्लु देल गेल  
अछि । प्रसुत पोथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ  
नरीन दुनु शैलीक सबल आ समीचीन पक्ष सबकेँ समेटि  
क२ रर्षि-रिग्यास कएल गेल अछि । स्थान आ समयमे  
रँचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो  
सबल होरँरँना हिसारँरँ रर्षि-रिग्यास मिनाओल गेल  
अछि । रतमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ  
आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँरँ पडि बहल  
परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापब पान  
देल गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल  
रिशेषता सब कृषिंत नहि होएक, ताहू दिस  
लेखक-मन्दर सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा.  
बामरताब यादरक कहँरँ छनि जे सबलतक  
अनुसन्धानमे एहन अरस्ता किल्लहू ने आरँरँ देरँरँक चाली  
जे भाषाक रिशेषता छँहमे पडि जाए ।  
-(भाषाशास्त्री डा. बामरताब यादरक धारणाकेँ पूर्ण  
कपसँ सङ्गि न२ निधरिबित)

## १.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निधरिबित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिष्ट मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि  
जाहि रतनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि  
रतनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-



## ग्राह

एथन

ठाग

जकब, तकब

तनिकब

अडि

## अग्राह

अथन, अथनि, एथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठिमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकम्पिक कर्पे ग्राह)

ईड्ड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकम्पिकतया

अपनाउत जाय: भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन ।

जा बहन अडि, जाय बहन अडि, जा३ बहन अडि ।

कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कब३ गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्रुनिक स्थानमे 'न' लिखत

जाय सकैत अडि यथा कहननि रा कहनहि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखत जाय जत' स्पर्शतः



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

‘अग’ तथा ‘अउ’ सदृश उच्चारण अश्रु हो । यथा-  
देखैत, छलैक, रौंखा, छोक अलादि ।

३. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट, एहि कपे प्रयुक्त  
होयत: जैह, सैह, अएह, ओह, लैह तथा दैह ।

३. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे ‘अ’ के वृद्ध कवर  
सामान्यत: अग्रह थिक । यथा- ग्रह देखि आरैह,  
मारिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

१. स्वतंत्र द्वय ‘अ’ रा ‘य’ प्राचीन मैथिलीक उच्चारण  
आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक  
प्रयोगमे रैकम्पिक कपे ‘अ’ रा ‘य’ लिखन जाय ।  
यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा  
जाए अलादि ।

४. उच्चारणमे दु स्ववक रीच जे ‘य’ पुनि स्वत: आरि  
जागत अछि तकवा लेखमे स्थान रैकम्पिक कपे देन  
जाय । यथा- पीखा, अटैखा, रिखाह, रा पीया,  
अटैया, रियाह ।

६. सान्नासिक स्वतंत्र स्ववक स्थान यथासंभर ‘अ’ लिखन  
जाय रा सान्नासिक स्वव । यथा:- मैअण, कनिअण,  
किबतनिअण रा मैआँ, कनिआँ, किबतनिआँ ।





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित कप त्राघः-  
हाथकै, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे  
अनुस्वार सर्रथा लज्ज थिक । 'क' क रैकल्पिक कप  
'केव' बाखन जा सकैत छि ।

११. पुर्रकालिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरथ  
रैकल्पिक कपेँ नगाउन जा सकैत छि । यथा:-  
देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ अलादि  
लिखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रौदना अनुस्वार नहि  
लिखन जाय, किन्तु छापक सुविधार्थ अर्द्ध 'उ' , 'ए',  
तथा 'ण' क रौदना अनुस्वारो लिखन जा सकैत छि ।  
यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अखन रा अचन, कण्ठ रा  
कठ ।

१४. हनत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किन्तु  
रिभक्ति सर्रग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:-  
श्रीमान्, किन्तु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छि शिष्टमे सँ क' लिखन  
जाय, सँ क' नहि, सँ अरिभक्ति हेतु हवाक  
लिखन जाय, यथा घब पबक ।





## २. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठक्रम

### २.१. उच्चारण निर्देशः (रौलेड कएन कप ग्राह):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँ- जेना रौजू नाम, रुदा ण क उच्चारणमे जीह मुँधमे सँ- (ने सँ- तँ उच्चारण दोष छि)- जेना रौजू गणेश। तानरा नेमे जीह ताँस, षमे मुँधसँ आ दन्त सँ दाँतसँ सँ-। निश, सँ आ शेष रौजि क देख। मैथिलीमे सँ केँ रौदिक सँ- जकाँ सँ- सेहो उचित कएन जाँत छि, जेना रसा, दोष। य अनेको सँ- जकाँ उचित होत छि आ ण उ जकाँ (यथा संयोग आ गणेश सँ- आ

गँ- उचित होत छि)। मैथिलीमे र क उच्चारण रँ, ने क उच्चारण सँ आ य क उच्चारण ज सेहो होत छि।

ओहिना क्रम अ रौशिकान मैथिलीमे पहिने रौजन जाँत छि काँ- देरनागरीमे आ मिथिलासँ- क्रम अ सँ- पहिने निखनो जाँत आ रौजनो जँ- चाँ। काँ- जे हिन्दीमे एक दोषपूर्ण उच्चारण होत छि (निखन तँ पहिने जाँत छि रुदा रौजन रौदमे जाँत छि), से शिक्षा पत्रिक दोषक काँ- हम सँ- ओक उच्चारण दोषपूर्ण सँ- क बहन छी।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अदि- अ अ द अद (उचावण)

दुथि- द अ थ - दुथ (उचावण)

पहुँचि- प हुँ अ च (उचावण)

आरौ अ आ अ अ ए अ ओ अ अः अ अ सभ  
नेन मात्रा सेहो अदि, ऊदा अमे अ अ ओ अ  
अः अ केँ सहाजक कपमे गत कपमे प्रहाज आ  
उचवित कएन जागत अदि । जेना अ केँ बी  
कपमे उचवित कवरौ । आ देखियौ- अ नेन  
देथिओ क प्रयोग अरुचित । ऊदा देखिँ नेन  
देथियौ अरुचित । क सँ ह धवि अ समितित बेनास  
क सँ ह रँनेत अदि, ऊदा उचावण कान हननु हाज  
शेहक अरुत उचावणक प्रवृत्ति रँनेत अदि, ऊदा हम  
जखन मनोजमे ज् अरुमे रँजेत छी, तखनो  
प्रबनका लोककेँ रँजेत मनरँहि- मनोज, रासुरमे  
ओ अ हाज ज् = ज रँजे दुथि ।

हेव उ अदि ज् आ ए क सहाज ऊदा गत  
उचावण होगत अदि- गा । ओहिना अ अदि क् आ  
ष क सहाज ऊदा उचावण होगत अदि द् । हेव श्  
आ व क सहाज अदि त्रि ( जेना त्रिमिक) आ स् आ  
व क सहाज अदि स्र (जेना मिस्र) । ए नेन त+व  
।

उचावणक आँडियो हागत बिदेह आकारिग

<http://www.videha.co.in/> पव उपनद्ध अदि ।

हेव केँ / सँ / पव पूर अरुवसँ सहा क२ लिख



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

झुदा ठै / क२ लुठै क२ । एमे सँ मे पहिल सल्लै  
क२ निथु खा रौदरौना लुठै क२ । अंकक रौद ठै निथु  
सल्लै क२ झुदा अगु ठाम ठै निथु लुठै क२- जेना  
हुल्लै झुदा सल्लै ठै । हेव उथ म सातम निथु-  
हुठम सातम नै । घबरौनामे रौवा झुदा घबरौनीमे  
रावौ प्रहाऊ कक ।

बल्ल-  
बल्ल

बल्ल झुदा सकैए (उचावण सकै-ए) ।

झुदा कथनो कान बल्ल खा बल्ल मे अर्थ भिल्लता  
सेहो, जेना से कम्मा जगहमे पार्किंग कवरौक  
अग्रिम बल्ल ओकवा । प्रह्लापव पता नागल जे हुनहुन  
नाम्मा अ ड्रागवर कनाष्ट झुसक पार्किंगमे काज करैत  
बल्ल ।

हुल्लै, हुनए मे सेहो ए तबल्लक भेल । हुनए क  
उचावण हुन-ए सेहो ।

संयोगले- (उचावण संजोगले)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे नै कक , पद्यमे क२ सकै  
छी । )

क (जेना बायक)

- बायक खा संगे (उचावण बाय के / बाय क२  
सेहो)

सँ- स२ (उचावण)



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

चन्द्रबिन्दु आ खनस्राव- खनस्रावमे कंठ धविक प्रयोग  
होगत थिदि कदा चन्द्रबिन्दुमे ने। चन्द्रबिन्दुमे  
कनेक एकावक सेहो उचावण होगत थिदि- जेना  
वामसँ- (उचावण वाम स२) वामकेँ- (उचावण वाम  
क२/ वाम के सेहो)।

केँ जेना वामकेँ भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम  
को= वामकेँ

क जेना वामक भेल हिन्दीक का ( वाम का) वाम  
का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव ( जा कव) जा  
कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ  
स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) ए चक शिद्ध  
सर्वेक प्रयोग थिदि।

के दोसव थिदि प्रयाज भ२ सकैए- जेना, के  
कठक ? रिभजि “क”क रँदना एकव प्रयोग  
थिदि।

नहि, नहि, ने, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उचावण  
आ लेखन - ने

अरु क रँदनामे अरु जेना मरुपूर्ण (मरुपूर्ण ने)  
जतए अर्थ रँदनि जतए ओतहि मात्र तीन अक्षरक  
सहाजाक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उचावण स स



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

ग त (सम्पत्ति नै- कावण सही उचावण आसानीसँ  
सम्भर नै) । क्रुदा सरोतिम (सरोतिम नै) ।

बासिष्टय (बासिष्टय नै)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोछेने/ पोछे नेन/ पोछेए नेन

पोछेए/ पोछेए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछेए/ पोछे

उ लोकनि ( लो क२, उ मे रिकारी नै)

उअ/ उहि

उहिने/

उहि नेन/ उही व२

जखरेँ/ रैसरेँ

पँचभय्या

देखियोक/ (देखिउक नै- तहिना अ मे ज्ञास आ  
दीर्घक मात्राक प्रयोग अन्वित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तेँ

होएत / लएत

नहि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौँसे/ सौँसे

रँड /

रँडी (मोवाओन)

गाए (गाए नहि), क्रुदा गाएक दुध (गाएक दुध नै । )

बहलौ/ पहिबलौ

ठमही/ अही

सबै - सब



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

**सर्वेच्छक - सत्तक**

**धवि - तक**

**गप- रौत**

**रूसरै - समसरै**

**रूसलौ/ समसलौ/ रूसनहूँ - समसनहूँ**

**हमवा आव - हम सत्त**

**आकि- आ कि**

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

**होअन/ होनि**

**जाअन** (जानि नै जेना देत जाअन) कदा **जानि-**

रूमि (अर्थ परिवर्तन)

**पअर/ जाअर**

**आड/ जाड/ आड/ जाड**

मे, के, स, पव (गिहस सठि क२) तँ क२ प२ द२

(गिहस सठि क२) कदा दुठि रा रैसी रिभञ्जि सग

बहनापव पहिन रिभञ्जि ठाके सठि। जेना **अमे स**

**।**

**एकठि, दुठि (कदा कए ठा)**

रिकावीक प्रयोग गिहक अन्तमे, रीचमे अनारथक

कपे नै। आकावातु आ अन्तमे अ क रौद रिकावीक

प्रयोग नै (जेना **दिअ**

, **आ/ दिअ**, **आ**, **आ नै**)

अपेक्षारथक प्रयोग रिकावीक रैदनामे कवर अन्वित

आ मात्र क्रांष्टिक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- **उना**





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

बिंकाबीक संस्कृत कप २ खरखर कहन जागत छटि  
आ रतिनी आ उचावण दू ठाम एकव लोप बहैत  
छटि/ बहि सकैत छटि (उचावणमे लोप बहैत  
छटि)। नूदा अपोस्ट्रॉफी सेहो अंग्रेजीमे पसेमि  
केसमे होगत छटि आ फ्रेंचमे शिष्टमे जतए एकव  
प्रयोग होगत छटि जेना *raison d'être* एतए  
सेहो एकव उचावण बैजौन डेष्टेव होगत छटि, माने  
अपोस्ट्रॉफी खरकाशे नै दैत छटि रवन जोडे  
छटि, से एकव प्रयोग बिंकाबीक रँदता देनाग  
तकनीकी कपे सेहो अन्नचित)।

अगमे, एहिमे/ **अमे**

**जगमे, जाहिमे**

अथन/ **अथन**/ अगथन

**कै** (कै नहि) **मे** (अन्नस्त्राव बहैत)

**भ२**

**मे**

**द२**

**तँ** (त२, त नै)

**सँ** (स२, स नै)

**गाछ तब**

**गाछ वग**

**साँस थन**

**जो** (जो *go*, करै जो *do*)



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगने  
जे/जथ जेना- जे कावण/ जगस/ जगने  
अ/अथ जेना- अ कावण/ अम/ अगने/ अदा एकव  
एकठा थस प्रयोग- नावति कतेक दिनस कहत  
बैत अथ  
ले/लथ जेना लेस/ लगने/ ले दुखारे  
नह/ लो

गेनो/ लेनो/ लेवह/ गेवह/ लेवह/ लेव  
जथ/ जाहि/ जे  
जहिगाम/ जाहिगाम/ जथगाम/ जेगाम  
अहि/ अहि/  
अथ (राकक अतमे आह) / अ  
अथह/ अहि/ अह  
तथ/ तहि/ ते/ तहि  
ओहि/ ओथ  
सीथ/ सीथ  
जीरि/ जीरी/ जीर  
भनेही/ भवहि  
ते/ तथ/ तथ  
जाथर/ जाथर  
नग/ ने  
हुग/ हे  
नहि/ ने/ नथ  
गग/ गे



हुनि/ हुन्हि ...

समय गेर्दक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै  
तखन समे जना समेपव गत्यादि। असगवमे छदय  
आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे  
गत्यादि।

जअ/ जाहि/

जै

जाहिगाम/ जाहिगाम/ जअगाम/ जैगाम

अहि/ अहि/ अग/ अ

अगछ/ अछि/ अँछ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओअ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भले/ भलेही/

भवहि

तेँ/ तँग/ तँअ

जाअरै/ जाअरै

नग/ नै

छग/ छै

नहि/ नै/ नग

गग/

गै

हुनि/ हुन्हि



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

चूकन थुडि/ गेव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिकम्पमेसँ लेखएज एडीटव द्वारा

कोन कप चूनन जेराँक चाही:

रौन्डे कएन कप ग्राह:

१. होयराँना/ होरयराँना/ होमयराँना/ हेरै राँना, हेम राँना/

होयराँक/होरयराँक /होयराँक

२. आ/आ२

आ

३. क लेन/क२ लेन/क३ लेन/क४ लेन/क५

लेन/न/न२/न३/न४

४. भ गेन/भ२ गेन/भ३ गेन/भ४ गेन/भ५

गेन

५. कव गेनाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेनाह

६.

विथ/दिथ निथ, दिथ, निथ, दिथ /

१. कव राँना/कव२ राँना/ कवय राँना कवेराँना/क व राँना

/

कवेराँना

७. राँना राना (प्रकष), रानी (सूत्री) ८

आठव आग्र

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुःख १



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

२. चलि गेल चव गेल/चैन गेल

३. देवखिन्ह देवकिन्ह, देवखिन

४.

देखवहि देखवनि/ देखलैन्ह

५. छुखिन्ह/ छुवन्हि छुखिन/ छुलैन/ छुवनि

६. चलैत/दैत चलति/दैति

७. एखनो

अखनो

८.

रैठनि रैठगन रैठहि

९. ७/७२(सरनाम) ७

१०

७ (संयोजक) ७/७२

११. हांगि/हाग्नि हांगि/हांगु

१२.

जे जे/जे२ १३. ना-बुब ना-बुब

१४. केवन्हि/केवनि/कयन्हि

१५. तखनतै/ तखन तै

१६. जा

बहव/जाय बहन/जाए बहव

१७. निकनय/निकवए

वागव/ वगव रैहवाय/ रैहवाए वागव/ वगव

निकन/रैहवै वागन

१८. ओतय/ जतय जत/ ओत/ जतए/ ओतए



१०६ स अंक १५ मइ २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

२९.

की कुवव जे कि कुवव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(योन पावर) कुअद/याअद/कुद/याद/  
यादि (योन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंस/ हंसय हंस

३४. नौ आकि दस/नौ किंरा दस/ नौ रा दस

३५. सास-ससुव सास-ससुव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकाबानुमे २ रजित)

३८. जरारै जरारै

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दान दिशि दान दिशि/दान दिस

४१.

. गेवाह गेवाह/गयवाह

४२. किछ आव/ किछ ओव/ किछ आव

४३. जाअ छव/ जाअत छव जाति छव/जैत छव

४४. पट्टि/ भेट जाअत छव/ भेट जाअ छव

पट्टि/ भेट जाअत छव

४५.

जरान (हरा)/ जरान(होजी)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

310



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

४१. त/व२ कय/

कए

४१. एथन / एथने / अथन / अथने

४२.

अथिके अथिके

४३. गहीव गहीव

४४.

धाव पाव केनाए धाव पाव केनाय/केनाए

४५. जेकाँ जेकाँ

जेकाँ

४६. तहिना तेहिना

४७. एकव अकव

४८. रहिनउ रहिनोए

४९. रहिन रहिनि

५०. रहिन-रहिनोए

रहिन-रहिनउ

५१. नहि/ ने

५२. कवरौ / कवरौय/ कवरौए

५३. त/ त २ तय/तए

५४. भैयाबी मे छेष्ट-भाए/भे, जेष्ट-भाय/भाए

५५. गिनतीमे दू भाग/भाए/भाँ

५६. ए पोथी दू भाँक/ भाँग/ भाए/ नेन । यारत

जारत

५७. माय मे / माए रुदा माँक ममता

५८. देहि/ दणन दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ दैहि



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

७७. द / द२ / द३

७१. उ (संयोजक) ७२ (सरनाम)

७४. तका कए तकाय तकाए

७६. पैरे (on foot) पएरे कएक/ कैक

१०.

ताहमे/ ताहमे

१९.

प्रतीक

१२.

रैजा कय/ कए / क२

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. कोवा

१३.

दिनका दिनका

१७.

ततहिसे

११. गवरैउतहि/ गवरैवनि/

गवरैवहि/ गवरैवनि

१४. रौव रौव

१६.

चेह चिह(अशुह)

४०. जे जे

४९

. से/ के से/के

४२. एखुनका अखनुका





मानसिंह

१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

+३. भूमिनाव भूमिनाव

+४. सुगव

/ सुगवक/ सुगव

+५. सठठाक सठठाक +७.

छुरि

+१. कवगयो/७ कलेयो ले देवक /कवियो-कवगयो

++ प्रवावि

प्रवाध

+२. सगड् १-साष्टी

सगड् १-साष्टी

२०. पथरे-पथरे पेरै-पेरै

२१. खेवरौक

२२. खेजेरौक

२३. वगा

२४. होए- हो - होखए

२५. बूमव बूमव

२७.

बूमव (संरौधन अर्थमे)

२१. यैह यएह / अएह/ सैह/ सएह

२४. तातिव

२२. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ एनाग

१००. निन्न- निन्द

१०१.

रिन्न रिन्न



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

१०२. जाध जाध

१०३.

जाध (in different sense) – last word  
of sentence

१०४. छत पव आरि जाध

१०५.

ले

१०६. खेवाध (play) – खेवाध

१०७. शिकाधत- शिकायत

१०८.

ठप- ठप

१०९

. पठ- पठ

११०. कनिध/ कनिये कनिधे

१११. बाकस- बाकसे

११२. होध/ होय होध

११३. खडबदा-

खडबदा

११४. बुमेवहि (different meaning- got  
understand)

११५. बुमएवहि/बुमेवनि/ बुमयवहि (understood  
himself)

११६. चनि- चव/ चवि गेव

११७. खधाध- खधाय



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

११४.

मोन पाड़वथिन्ह/ मोन पाड़वथिन/ मोन पाववथिन्ह

११५. कैक- कएक- कअएक

११७.

वग ल ग

११८. जवनाथ

११९. जवनाथ जवनाथ- जवनाथ/

जवनाथ

१२०. होथत

१२१.

गवरैवहि/ गवरैवनि गवरैवहि/ गवरैवनि

१२२.

टिथैत- (to test) टिथैत

१२३. कबअयो (willing to do) करैयो

१२४. जेकवा- जकवा

१२५. तकवा- तेकवा

१२६.

रिदेसब स्थानमे/ रिदेसब स्थानमे

१२७. कवरैयतहू/ कवरैयतहू/ कवरैयतहू कवरैयतहू

१२८.

हाकि (उठावण हाकि)

१२९. ओजन रजन अफसोच/ अफसोस कागत/

कागच/ कागज

१३०. आधे भाग/ आध-भागे



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

१३४. पिछा / पिछाय/पिछाए

१३५. नए/ ने

१३६. रैछा नए

(ने) पिछा जाय

१३७. तखन ने (नए) कहेत अछि । कहे/ सुने/ देखे  
हुव झुदा कहेत-कहेत/ सुनेत-सुनेत/ देखेत-  
देखेत

१३८.

कतेक गोठे/ कताक गोठे

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

. वग लग

१४१. खेवाअ (for playing)

१४२.

हुबिन्ह/ हुबिन

१४३.

होअत होअ

१४४. का कियो / केउ

१४५.

केशे (hair)

१४६.

केस (court-case)

१४७

. रैननाअ/ रैननाय/ रैननाए

१४८. जरेनाअ

316



मानसिंह

१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४६. कबसी कसौ

१४७. चबचा चर्चा

१४८. कर्म कबम

१४९. डूराँरै/ डूराँरै/ डूमाँरै डूमाँरै/ डूमाँरै

१५०. एखुनका/

खुनका

१५१. वध/ विध (राकाक अंतिम गेह)- व२

१५२. कएवक/

केवक

१५३. गवसी गमौ

१५४.

रवदी रदी

१५५. सुना गेवाठ सुना/ सुना२

१५६. एनाथ-गेनाथ

१५७.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१५८. नथि / ले

१५९.

डरो डरो

१६०. कतहु/ कतौ कतौ

१६१. डुमबिगब-डुमेबगब डुमबगब

१६२. भकिगब

१६३. धोत/धोखत धोत

१६४. गप/गप्प

१६५.



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

के के

९७. दवरैज्जा/ दवरैजा

९१०. ठाय

९१९.

धवि तक

९१२.

घुवि लौटि

९१३. थोवरैक

९१४. रूहु

९१५. रौ/ रू

९१६. रौहि (पद्यमे ग्राह)

९१७. रौही / रौहि

९१८.

कवरौअ कवरौअये

९१९. एकेठा

९२०. कविताथि / कवताथि

९२१.

पहुँचि/ पहुँच

९२२. बाखनहि बखनहि/ बखनि

९२३.

वगनहि/ वगनि नागनहि

९२४.

सुनि (उचावण सुगन)

९२५. अछि (उचावण अगछ)

९२६. एवथि गेवथि



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

१+१. रिंतोने/ रिंतोने/

रिंतोने

१++ कवरौंनहि/ कवरौंनहि/

करेवथिह/ करेवथिह

१+२. कवरौंनहि/ करेवनि

१२०.

आकि/ कि

१२१. पड़ुटि/

पड़ुटि

१२२. रौंती जवाय/ जवाय जवा (आंगि नगा)

१२३.

से से

१२४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिंतोनेमे हाँ कए)

१२५. फेव फेव

१२६. फाव(spacious) फेव

१२७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/ होयतनि/ होयतहि

१२८. हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ

१२९. फेका फेका

२००. देखा देखा

२०१. देखाँ

२०२. सतवि सतवि

२०३.

साहेर साहेर

२०४. गेलोह/ गेलोह/ गेलोह



१०६ स अंक १५ मइ २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

२०३. ठेरोक/ ठेधरोक

२०७. केनो/ कएनहुँ/ केनो/ केवू

२०९. किछ न किछ/

किछ ले किछ

२०४. घुमेनहुँ/ घुमउनहुँ/ घुमेनो

२०६. एवाक/ अएनाक

२१०. अः/ अठ

२११. नय/

नय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक/ कनेक

२१३. सरलक/ सलक

२१४. मिनाइ/ मिना

२१५. कइ/ क

२१७. जाइ/

जा

२१९. आइ/ आ

२१४. भइ / भ ( फॉन्टिक कमीक द्वातक)

२१६. निश्चय/ नियम

२२०

लेकटखव/ लेकटयव

२२१. पहिव अम्ब ठा/ रौदक/ रौचक ठा

२२२. तहि/ तहि/ तहि/ ते

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

ते / तँ





मानवीय

१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२२३. नैग/ नग/ नगि/ नहि/ले

२२७. ठै/ ठै / एवीठै/

२२१. छवि/ छै/ छैक / छग

२२४. दृष्टि/ दृष्टियै

२२६. आ (come)/ आ२(conjunct i on)

२३०.

आ (conjunct i on)/ आ२(come)

२३१. कनो/ कनो कनो/केना

२३२. गेलोह- गेलोह- गेलोह

२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केनो- कएनो-कएनह/केनो

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. आ२ (come)-आ (conjunct i on-

and)/ आ । आरै-आरै /आरैह-आरैह

२३८. एत-तै

२३९. घुमेनह-घुमेनह- घुमेनह

२४०. एवक- एवक

२४१. होनि- होनि/ होनि/

२४२. ओ-वाम ओ श्यामक रीच(conjunct i on), ओ२

कहनक (he said)/ ओ

२४३. की ए/ कोसी ए/ की है । की हग

२४४. दृष्टि/ दृष्टियै

२४५.

. गोमि/ सामेन



१०६ स अंक १५ मइ २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

२४७. तै / तै / तै / तै

२४९. जौ

/ जौ / जौ

२४९. सभ / सर

२४९. सभक / सरहक

२४९. कहि / कही

२४९. कनो / कनो / कनहुँ /

२४९. कबकती भय गेव / भय गेव / भय गेव

२४९. कनो / कनो / कनो / कनो

२४९. अः / अह

२४९. जने / जनए

२४९. गेवनि /

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२४९. केवहि / केवहि / केवनि /

२४९. नय / नय / नय (अर्थ परिवर्तन)

२४९. कनीक / कनेक / कनी-मनी

२४९. पठवहि पठवनि / पठवनि / पपठवहि /

पठवौनि /

२४९. निश्चय / नियम

२४९. हेकटैव / हेकटैव

२४९. पहिब अक्कव बहने ठ / रीचमे बहने ठ

२४९. आकावाबुमे रिकारीक प्रयोग उचित नै /

अपेक्षाधिक प्रयोग फार्मक तकनीकी नूनताक

पविचायक ओकव रैदना अग्रह (रिकारी) क प्रयोग

उचित



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

२७३. केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२७७. डैहि- डहि

२७१. वणैथ/ वणैथे

२७४. होधत/ रुधत

२७६. जाधत/ जधत/

२१०. आधत/ अधत/ आउत

२१९

. आधत/ अधत/ थैत

२१२. पिअरौक/ पियरौक/पियरौक

२१३. गुरु/ गुरुह

२१४. गुरुह/ गुरुध

२१३. अधतह/अउतह/ एतह/ उतह

२१७. जाहि/ जाध/ जध/ जै/

२११. जाधत/ जैतध/ जधतध

२१४. आधव/ अधव

२१६. कैक/ कधक

२४०. आयन/ अधन/ आधव

२४९. जाध/ जधध/ जध (नानति जाध नगनीह । )

२४२. गुरुधन/ गुरुधव

२४३. कर्धुआधव/ कर्धुअधन

२४४. ताहि/ तै/ तध

२४३. गायरौ/ गाधरौ/ गधरौ

२४७. सकै/ सकध/ सकय

२४१. सेवा/सवा/ सवाध (भात सवा गेन)



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

२४४. कठैत बरी/देबैत बरी/ कठैत छलौ/ कठै छलौ-  
अहिना छलैत/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कवनो काव परिवर्तित) - आव  
बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी क्रुदा बुमैत-बुमैत)/  
सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/  
डै। रैचलै/ रैचलैक। बखरौ/ बखरौक। रिनु/  
रिन। बातिक/ बाहुक बुमै आ बुमैत केव अपन-  
अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत  
आरै बुमविष। हमर बुमै छी।

२४५. दुआरे/ द्वारे

२५०. भैष्ट/ भैष्ट/ भैष्ट

२५५.

खन/ खीन/ खुना (भोव खन/ भोव खीन)

२५२. तक/ धवि

२५३. ग२/ गै (meaning different - जनरै ग२)

२५४. स२/ सँ (क्रुदा द२, न२)

२५५. त्र (तीन अक्षरक मेत रैदना पुनर्कृतिक एक  
आ एकठा दोसबक उपयोग) आदिक रैदना त्र आदि।  
महत्र/ महत्र/ कर्ता/ कर्ता आदिमे त्र सहायक कोनो  
आवश्यकता मैथिलीमे नै अछि। रङ्गर

२५७. रैसी/ रैशी

२५९. रौना/ राना रैवा/ रना (बैरैना)

२६४

. रावी/ (रैदनेरानी)

२६६. रात/ रात



मानसिंह

१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३००. अन्तर्वास्तिव्य/ अन्तर्वास्तिव्य

३०१. लेमए/ लेमए

३०२. वमडुक्का नमडुक्का

३०२. वगौ/ वगौ (   
 भेटैत/ भेटैत)

३०३. वागव/ वगव

३०४. ठरौ/ ठरौ

३०५. बाखवक/ बखवक

३०६. आ (come)/ आ (and)

३०७. पश्चाताप/ पश्चाताप

३०८. २ केव रारहाव शिष्टक अन्तमे मात्र, यथासंभर  
रीचमे नै।

३०९. कठैत/ कठै

३१०.

बह्य (हव)/ बह्य (हव) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खवाप/ खवारै

३१३. रौअन/ रौनि/ रौअनि

३१४. जार्ति/ जाअर्ति

३१५. कागज/ कागच/ कागज

३१६. गिलै (meaning different - swallow)/

गिलै (असए)

३१७. वास्तिव्य/ वास्तिव्य



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## Festivals of Mthila

### DATE-LIST (year – 2011-12)

(१४९९ आव)

#### *Marriage Days:*

Nov.2011 – 20,21,23,25,27,30

Dec.2011 – 1,5,9

*January 2012 – 18,19,20,23,25,27,29*

*Feb.2012 – 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29*

*March 2012 – 1,8,9,12*

*April 2012 – 15,16,18,25,26*

*June 2012 – 8,13,24,25,28,29*

#### *Upanayana Days:*

February 2012 – 2,3,24,26

March 2012 – 4



April 2012– 1,2,26

June 2012– 22

***Dviragaman Din:***

November 2011– 27,30

December 2011– 1,2,5,7,9,12

February 2012– 22,23,24,26,27,29

March 2012– 1,2,4,5,9,11,12

April 2012– 23,25,26,29

May 2012– 2,3,4,6,7

***Mundan Din:***

December 2011– 1,5

January 2012– 25,26,30

March 2012– 12

April 2012– 26



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

May 2012 – 23,25,31

June 2012 – 8,21,22,29

## FESTIVALS OF MTHILA

Mauna Panchami –20 July

Madhushravani – 2 August

Nag Panchami – 4 August

Paksha Bandhan – 13 Aug

Krishnastami – 21 August

Kushi Amavasya / Somvati Vrat – 29  
August

Hartalika Teej – 31 August

Chauth Chandra –1 September

Karma Dharma Ekadashi –8 September





Indra Pooja Aarambh – 9 September

Anant Caturchashi – 11 Sep

Agastyar ghadaan – 12 Sep

Pitri Paksha begins – 13 Sep

Mahalaya Aarambh – 13 September

Vishwakarma Pooja – 17 September

Jimootavahan Vrat a/ Jitika – 20  
September

Matr Navami – 21 September

Kalashsthan – 28 September

Belnauti – 2 October

Patrika Pravesh – 3 October

Mahastami – 4 October

Mah Navami – 5 October



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Vi j aya Dashami – 6 Oct ober

Koj agar a– 11 Oct

Dhant er as– 24 Oct ober

Di yabat i , shyama pooj a–26 Oct ober

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a–27  
Oct ober

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi t r agupt a Pooj a–  
28 Oct ober

Chhat hi –khar na –31 Oct ober

Chhat hi – sayankal i k ar ghya – 1  
November

Devot t han Ekadashi – 17 November

Sama pooj ar ambh– 2 November

Kart i k Poorni ma/ Sama Bi sar j an– 10  
Nov



r avi vr at ar ambh – 27 November

Navanna par van – 29 November

Vi vaha Panch mi – 29 November

Makar a/ Teel a Sankr ant i –15 Jan

Nar akni var an chat ur dashi – 21  
January

Basant Panch mi / Sar aswat i Pooj a –  
28 January

Achl a Sapt mi – 30 January

Mahashi var at r i –20 February

Hol i kadahan –Fagua –7 Mar ch

Hol i –9 Mar

Var uni Yoga –20 Mar ch

Chai t i navar at r ar ambh – 23 Mar ch

Chai t i Chhat hi vr at a –29 Mar ch



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Ram Navami – 1 April

Mesha Sankranti – Saturday – 13 April

Jurishital – 14 April

Akshaya Tritiya – 24 April

Ravi Brat Ant – 29 April

Janaki Navami – 30 April

Vat Savitri – Barasait – 20 May

Ganga Dashhar – 30 May

Somavati Amavasya Vrat – 18 June

Jagannath Rath Yatra – 21 June

Hari Sayan Ekadashi – 30 June

Aashadhi Guru Purnima – 3 Jul

VI DEHA ARCHIVE

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा पुरान अंक ब्रैल  
तिबह्ता आ देरनागरी कपमे Videha e



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

बिदेह **ISSN 2229-547X VIDEHA**

बिदेह

journal's all old issues in Braille  
Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ३-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ३-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड *Maithili Books*  
*Download*

३.मैथिली ऑडियो संकलन *Maithili Audio*  
*Downloads*

४.मैथिली वीडियो संकलन *Maithili Videos*

५.मैथिली चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र  
*Maithila Painting/ Modern Art and*  
*Photos*

बिदेहक एहि सब सहयोगी विक्रय सेहो एक बेर  
जाई ।



३. बिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर-कप "भाबसबिक गाढ" :

<http://gajendratyakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह अडैक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह बागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिलाक्षर)  
जानबूत (बैनाँ)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>



१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल रैब बिदेह  
द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY  
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका मैथिली  
पौथीक आर्काइव

<http://videha-pot hi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका ऑडियो  
आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका वीडियो  
आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१+. बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक अ पत्रिका मिथिला  
चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

[http://videha-paintings-  
photos.blogspot.com/](http://videha-paintings-photos.blogspot.com/)

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय  
ज्ञानरत्न)

<http://maithilaurmithila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशिन

<http://www.shrutipublication.com>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

Google समूह

VI DEHA केब सदस्यता निथ

अमेन :

??????





एहि समूहपब जाडू

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

**Subscribe to VIDEHA**

Powered by [us.groups.yahoo.com](http://us.groups.yahoo.com)

२३. गजेन्द्र ठाकुर अडेक

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>

२४. मेना भुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com>

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ३ बिदेह*



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,


संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

२३. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल  
पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२३.  [Videha Radio](#)

२१.  [Join official Videha facebook group.](#)

२४. बिदेह मैथिली नाट्य डोमेन

<http://maithili-dramalogspot.com/>

२६. समदिया

<http://esamadlogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilmslogspot.com/>

३१. अनचिन्हाव आखर

<http://anchinharakharakolkatalogspot.com/>



३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai ku.bl ogspot .com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili .bl ogspot .com/>

३४. बिहनि कथा

<http://vihani kat ha.bl ogspot .in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavi ta.bl ogspot .in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili -kat ha.bl ogspot .in/>

३७. मैथिली समालोचना

[http://maithili -  
samar ochna.bl ogspot .in/](http://maithili -samar ochna.bl ogspot .in/)



महत्त्वपूर्ण सूचना: (१) बिदेह द्वारा धारारिक रूपे  
अ-प्रकाशित कएव गेव गजेन्द्र ठाकुरक निरंकर-  
प्रबंध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्ररौठनि), पद्य-संग्रह  
(सहस्राक्षीक चौपडपव), कथा-गल्प (गल्प-ग्रन्थ),  
नाटक(संस्करण), महाकाव्य (ब्रह्मावत आ अमरज्वाति मन)  
आ रीत-किसीव साहित्य बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशक  
रीत छिट्टि कर्यमे । ककम्पेवम्-अनुमनक खन्ड-१ स  
१ Combi ned I SBN Nb.978-81-907729-7-  
6 रिवरषा एहि पृष्ठपव नीचाँमे आ प्रकाशकक साइट  
[ht t p://www.shr ut i -publ i cat i on.com](http://www.shrut i -publ i cat i on.com) पव  
।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी  
आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्टवन्टैपव पहिल रैव  
सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एव. सर्वव आधारित -  
Based on ms-sql server Maithili -  
Engl i sh and Engl i sh-Mai th i l i  
Di ct i onary. बिदेहक भाषापक- बचानेखन  
सुंभमे ।

ककम्पेवम् अनुमनक- गजेन्द्र ठाकुर



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



गजेन्द्र ठाकुरक निरंकर-प्रबंध-समीक्षा, उपन्यास  
(सहस्ररौटनि), पद्य-संग्रह (सहस्राक्षिक चोपडपर),  
कथा-गल्प (गल्प गुरु), नाटक(संस्कार), महाकाव्य  
(ब्रह्मावत आ अमरुताति मन) आ रौवमंडली-  
किशोवजगत बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशित रौद छि  
काम्ये। कुरुक्षेत्रम्-अनुमनक, खंड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra  
Thakur's KuruKshetr am-Ant ar man ak (Vol .  
I to VI)- essay-paper-criticism  
novel, poems, story, play, epics and  
Children-grown-ups literature in  
single binding:

Language:Maithili

७९२ पृष्ठा : मूल्य भा. क. 100/- (for  
individual buyers inside india)  
(add courier charges Rs.50/-per copy  
for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy  
for outside Delhi )

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह अथय मेथिली पत्रिका बिदेह



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

**For Libraries and overseas buyers  
\$40 US (including postage)**

**The book is AVAILABLE FOR PDF  
DOWNLOAD AT**

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

**Details for purchase available at  
print-version publishers's site  
website: <http://www.shrutipublication.com/>**

**or you may write to**

**e-mail: [shrutipublication@shrutipublication.com](mailto:shrutipublication@shrutipublication.com)**

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देरनागरी  
-बिदेह- क, श्रुति संस्कृत : बिदेह-पत्रिका  
(<http://www.videha.co.in/>) क छनव बचना  
सम्भविता ।

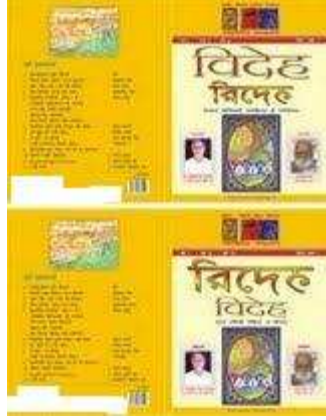
बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह



१०६ म अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धीनिर



बिदेह:सदेह:९: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at  
print-version publisher's site  
<http://www.shrutipublication.com> or  
**you may write to**  
[shruti\\_publication@shruti -  
publication.com](mailto:shruti_publication@shrutipublication.com)

२. संदेश-



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

[ बिदेह ३-पत्रिका, बिदेहसदेह मिथिलासकब आ देरनागरी  
आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खंडक- निरंकर-प्रंकर-  
समीक्षा, उपन्यास (सहस्रराठनि), पद्य-संग्रह (सहस्रद्वीक  
चौपडपरा), कथा-गल्प (गल्प ग्रन्थ), नाटक  
(संकरषण), महाकाव्य (ब्रह्मचर्य आ अस्मृति मन) आ रीति-  
मंडली-किशोर जगत- संग्रह ककश्लेष  
अतिरिक्त मादे । ]

१. श्री गोरिन्द न्या- बिदेहकेँ तबगजातपब उतावि  
रिश्तबिमे मातृभाषा मैथिलीक बहबि जगाउन, थेद  
जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि  
दए सकवहुँ । सुनैत छी अपनेकेँ सुनाओ आ  
बचानामेक आलोचना प्रिय बगैत अछि तै किछु लिखक  
मोन भेल । हमब सहायता आ सहयोग अपनेकेँ  
सदा उपनहूँ बहत ।

२. श्री बमानन्द रेणु- मैथिलीमे ३-पत्रिका पक्षिक  
कपेँ चला कइ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कइ बहन  
छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक  
कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दइ बहन छी ।

३. श्री रिद्वानाथ न्या "बिदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक  
एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल हागमे अपन महिमामय  
"बिदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता  
आ संतोष भेल, तकरा कोनो उपनहूँ "मिठब"सँ नहि





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नापन जा सकैछ ? ..एकर ईतिहासिक मूल्यांकन आ  
सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक  
नजबिमे आश्चर्यजनक कपस प्रकटै छैत ।

४. प्रा. उदय नावायण सिंह "नचिकेत" – जे काज  
अहाँ कए बहर छी तकर चर्चा एक दिन मैथिली  
भाषाक अतिहासमे होएत । आनन्द भए बहर अछि,  
आ जानि कए जे एतेक गोष्ट मैथिल "रिदेह" आ  
जर्नलकेँ पठि बहर छथि । ...रिदेहक चालीसम अंक  
प्रबलक लेल अभिनन्दन ।

५. डा. गंगेशी गुंजन – एहि रिदेह-कर्ममे लागि बहर  
अहाँक सम्वदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित  
मेहनतिक अमृत रंग, अतिहास मे एक ठो रिश्ता  
रुबाक अध्याय आरंभ करैत, हमरा रिश्तास अछि ।  
अशेष शुभकामना आ रक्षाक सम्व, सम्वह...अहाँक  
पौथी कुरुक्षेत्रम् अतर्मिक प्रथम दृष्ट्या रहैत भरा  
तथा उपयोगी बुझाओछ । मैथिलीमे तँ अपना  
स्वरूपक प्रायः आ पहिले एहन भरा अरताक पौथी  
थिक । हर्षपूर्ण हमर हार्दिक रक्षा आ स्वीकार करी ।

६. श्री वामश्रीय ना "वामरंग"(आरंभ सुगीय) – "अपना"  
मिथिलासँ संरक्षित...विषय रसुस अरगत लेनहुँ । ...शेष  
सब कुरा अछि ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१. श्री ज्ञेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- गैरबनेष्ट  
पत्र प्रथम मैथिली पक्षिक पत्रिका "बिदेह" केव त्रेन  
रैपाङ्ग आ शुभकामना स्वीकार कर ।

+. श्री प्रहल्लादसिंह "मौन"- प्रथम मैथिली  
पक्षिक पत्रिका "बिदेह" क प्रकाशक समाचार जानि  
कनेक चकित झुदा रैसी आलादित भेलहुँ ।  
कानचक्रै पकडि जाहि दुबदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि  
त्रेन हमर मंगलकामना ।

६.डा. शिरप्रसाद यादव- ग्रा जानि अपाव हर्ष भए  
बहन अछि, जे नर सूचना-आन्तिक क्षेत्रमे मैथिली  
पत्रकावितारै प्रवेश दिखएँक साहसिक कदम उठाएन  
अछि । पत्रकावितामे एहि प्रकारक नर प्रयोगक हम  
स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क सफलताक  
शुभकामना ।

१०. श्री आद्याचरण ना- कोनो पत्र-पत्रिकाक  
प्रकाशक- ताद्वमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे के  
कतेक सहयोग कबतह- ग्रा तह भरिष्य कहत । ग्रा  
हमर ++ वर्षमे १३. वर्षक अनुभव बहन । एतेक  
पैघ महान यज्ञमे हमर श्रेष्ठापूर्ण आहुति प्राप्त  
होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

११. श्री रिजय ठाकुर- मिश्रिगन रिश्वरिद्यालय- "रिदेह"  
पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण शीम रँधाएक पात्र  
अछि । पत्रिकाक मँगन भरिषा हेतु हमब शुभकामना  
स्वीकार कएन जाओ ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ए-पत्रिका "रिदेह" क  
रारमे जानि प्रसन्नता भेल । 'रिदेह' निबन्ध  
पन्नरित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारव  
से कामना अछि ।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ए-पत्रिका "रिदेह" केव  
सहनताक भगरतीस कामना । हमब पूर्ण सहयोग  
बहत ।

१४. डा. श्री भीमनाथ यादव- "रिदेह" अन्तर्बनेष्ट पत्र  
अछि तेँ "रिदेह" नाम उचित आब कतेक कपेँ एकब  
रिबरण भए सकैत अछि । आ-कान्ति मोनमे उद्भव  
बहत अछि, हुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब । कुरुक्षेत्रम्  
अन्तर्मुख देखि अति प्रसन्नता भेल । मैथिलीक लेल  
ए घटना छी ।

१५. श्री वामनरास कापडि "भ्रमर"- जनकप्रबन्ध-  
"रिदेह" आनरागन देखि बहत छी । मैथिलीकेँ  
अन्तर्बन्धीय जगतमे पहुँचलहुँ तकवा लेल हार्दिक



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

रैपाङ्ग । मिथिला बने सभक संकलन अपूर् ।  
नेपालक सहयोग भेटैत, से विश्वास कबी ।

१७. श्री बाजनन्दन तारदास- “बिदेह” ई-पत्रिकाक  
माध्यमसँ रैड नीक काज कए बहन छी, नातिक अहिठाम  
देखनहुँ । एकब बार्षिक अंक जखन प्रिन्ट निकारै तँ  
हमरा पठाथर । करकब्रामे रैड गोटैकेँ हम  
सागठक पता लिखाए देने छियन्हि । मोन तँ होगत  
अछि जे दिल्ली आरि कए आशीर्वाद दैतहुँ, झुदा डमर  
आरि रैशी भए गेल । शुभकामना देशी-बिदेशीक  
मैथिलकेँ जोडबैक लेल । .. उक्ते प्रकाशिन  
ककल्लेवम् अंतर्मनक लेल रैपाङ्ग । अछुत काज कएन  
अछि, नीक प्रश्रुति अछि सात खलमे । झुदा अहाँक  
सेरा आ से निःस्वार्थ तखन बुझल जागत जँ अहाँ  
द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि  
बहिकैक । ओहिना सभकेँ बिलहि देल जगतिकै ।  
(स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहाँक सूचनार्थ बिदेह द्वारा ई-  
प्रकाशित कएल सभ्ठा सामग्री आर्कगिरमे  
<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/> पर बिना मुनक डाउनलोड लेल  
उपरहुँ छै आ भरिषामे सेहो बहिकैक । एहि  
आर्कगिरकेँ जे कियो प्रकाशक अनुमति न२ क२ प्रिन्ट  
कपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम बखने  
छथि ताहिपर हमर कोनो नियंत्रण नहि अछि । -



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक  
संग ।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे अष्टबनेष्टपव  
पहिल पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत  
मातृभाषानुवाकक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ  
मातृभाषानुवाकसँ प्रेरित छी, एकव निमित्त जे हमर  
सेराक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी । अष्टबनेष्टपव  
आद्यापात पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भऽ गेल ।

१२. श्रीमती शैलानिका रमा- बिदेह अ-पत्रिका देखि  
मोन उल्लाससँ भवि गेल । रिज्ञान कतेक प्रगति कऽ  
बहल अछि... अहाँ सब अनन्त आकाशकेँ भेदि दियौ,  
समस्त रिज्ञावक बहसकेँ ताब-ताब कऽ दियौक... ।  
अपनेक अद्भुत पुस्तक कृष्णार्द्रम् अंतर्मनक  
रिषयस्तुक दृष्टिसँ गागबमे सागब अछि । रंभाअ ।

१३. श्री हेतुकव मा, पठना-जाहि समर्पण भारसँ अपने  
मिथिला-मैथिलीक सेरामे तपेब छी से सुब अछि ।  
देशीक राजधानीसँ भय बहल मैथिलीक शिखनाद  
मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अरथ  
कबत ।

२०. श्री योगानन्द मा, करिअप्रब, नहेबियासबाय-  
कृष्णार्द्रम् अंतर्मनक पोथीकेँ निकटसँ देखबक अरसब



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

माधुरीमिह

भैरव अष्टि आ मैथिली जगतक एकठा उद्घाटन  
समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्तशुद्धक कवचमरन्द पविचयस  
आह्लादित छी । "बिदेह"क देरनागरी सँस्कार पठनामे  
ब. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकत जे विभिन्न लेखक  
लोकनिक छायाचित्र, पविचय पत्रक ओ वचनारलीक  
समयक प्रकाशिनसँ ऐतिहासिक कहन जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोतकाता- जय मैथिली,  
बिदेहमे रहूत बास करिता, कथा, विपोर्ष आदिक  
सचित सङ्ग्रह देखि आ आव अधिक प्रसन्नता मिथिलास्वर  
देखि- रँधाङ्ग स्वीकार कएन जाओ ।

२२. श्री जीरकान्त- बिदेहक झुदित अंक पठन- अद्भुत  
मेहनति । चारँस-चारँस । किछु समालोचना  
मवखान-झुदा सल ।

२३. श्री भद्रचन्द्र मा- अपनक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक  
देखि बुझाएन जेना हम अपने छपल अष्टि । एकव  
रिशोकाय आप्ति अपनक सरसमारेणितक पविचायक  
अष्टि । अपनक वचना सामर्थ्यमे उन्नतबुद्धि हो,  
एहि शुभकामनाक संग हार्दिक रँधाङ्ग ।

२४. श्रीमती डा नीता मा- अहाँक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक  
पठलहुँ । ज्ञातिवैश्वी शिष्टारनी, धर्म मत्त शिष्टारनी  
आ सीत रँसल आ सब कथा, करिता, उपन्यास, रँग-



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवविज्ञान

किशोब साहित्य सभ उन्नत छल । मैथिलीक उन्नतता  
विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होएत अछि ।

२३. श्री मायानन्द मिश्र- *रुक्मिणी* अंतर्गत मे हमर  
उपन्यास *मृगशंकर* जे विरोध कएल गेल अछि तक  
हम विरोध करैत छी । ... *रुक्मिणी* अंतर्गत  
पौखीक लेल शुभकामना । (श्रीमान् समालोचनाकें  
विरोधक रूपमे नहि लेल जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२३. श्री महेंद्र हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला-  
*रुक्मिणी* अंतर्गत पठि मोन हर्षित भेल एखन  
पूरा पठयमे रहैत समय लागत, झुदा जेतक पठन  
से आनंदित कएलक ।

२१. श्री केदावनाथ चौधरी- *रुक्मिणी* अंतर्गत अद्भुत  
लागल, मैथिली साहित्य लेल ए पौखी एकठा प्रतिमान  
रैनत ।

२४. श्री सदानन्द पाठक- बिदेहक हम नियमित पाठक  
छी । ओकर स्वरूपक प्रशंसक छलहुँ । एकर अर्ध  
विषय - *रुक्मिणी* अंतर्गत देखलहुँ । मोन  
आनंदित भेल उठल । कोनो वचना तब-उपरी ।

२६. श्रीमती बमा ना-सम्पादक मिथिला दर्पण ।  
*रुक्मिणी* अंतर्गत प्रिष्ट फार्म पठि आ एकर



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ग्रंथरत्ना देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शैछ,  
एकबा जेन प्रयाज कऽ बहल छी । रिदेहक उन्नोन्नत  
प्रगतिक शुभकामना ।

३०.श्री नरेन्द्र ना, पटना- रिदेह नियमित देखैत  
बैत छी । मैथिली जेन अद्भुत काज कऽ बहल  
छी ।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोनकाता- मिथिलासूत्र  
रिदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भवि उठल, अंकक रिशान  
पविदृष्ट आसुस्तकारी अछि ।

३२.श्री तारानन्द रियोगी- रिदेह आ कृष्णार्जुन  
अतर्किक देखि चकरिदोव लागि गेल । आश्चर्य ।  
शुभकामना आ रक्षा ।

३३.श्रीमती प्रेमवती मिश्र “प्रेम”- कृष्णार्जुन  
अतर्किक पठनहुँ । सब वचना उच्चोष्ठिक लागल ।  
रक्षा ।

३४.श्री कीर्तिनाथ मिश्र- रैगुसबाय- कृष्णार्जुन  
अतर्किक रैगु नीक लागल, आगाँक सब काज जेन  
रक्षा ।

३५.श्री महाप्रकाश-सहस्र- कृष्णार्जुन अतर्किक नीक  
लागल, रिशानकाय संगहि उन्नोन्नत ।





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३७.श्री अश्विप्रभ- मिथिलासूत्र आ देवासूत्र बिदेह  
पठन-ग प्रथम तँ अछि एकटा प्रशंसामे झुदा हम  
एकटा दूसाहसिक कहै। मिथिला चित्रकलाक सुन्दर  
झुदा अगिला अंकमे आवि रिसुत रैनाहु।

३९.श्री मंजव सुनेमान-दबडंगा- बिदेहक जतेक  
प्रशंसा कएन जेह कम हेत। सब चीज उभय।

३९.श्रीमती प्राफेसब रीणा ठाकुर- ककश्वेदम् अंतर्मनक  
उभय, पठनीय, रिचावनीय। जे का देखेत छथि  
पोथी प्राप्त कबबैक उपाय प्रदेष्ट छथि।  
शुभकामना।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह ना- ककश्वेदम् अंतर्मनक  
पठनहुँ, रैहु नीक सब तबहै।

४०.श्री ताबाकाबु ना- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला  
समाद- बिदेह तँ कन्ठेन्ट प्रागडबक काज क  
बहन अछि। ककश्वेदम् अंतर्मनक अद्भुत नागन।

४१.डा बरीन्द्र कमार चौधरी- ककश्वेदम् अंतर्मनक  
रैहुत नीक, रैहुत मेहनतिक परिणाम। रैषाग।

४२.श्री अमवनाथ- ककश्वेदम् अंतर्मनक आ बिदेह दुनू  
स्वर्णाय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

४३.श्री पंचानन मिश्र- रिदेहक बैरिधा आ निवन्तवता  
प्रभारित करैत छि, शुभकामना ।

४४.श्री केदाव कानन- रुक्मिण्यम् अन्तर्मनक लेन  
अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ रैधाग स्वीकार करी ।  
आ नटिकेतक भूमिका पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागर  
जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित लेन छि  
रूदा पोथी उनैपौना पब ज्ञात लेन जे एहिमे तँ  
सब रिधा समाहित छि ।

४५.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कइ बहन  
छी । होष्टे गैलबीमे छि एहि शिताईक जन्मतिथिक  
अनुसार बहत तइ नीक ।

४६.श्री आशीष ना- अहाँक प्रस्तुतक सरंधमे एतरी  
निखरी सँ अपना कए नहि रोकि सकनहुँ जे आ  
कितारँ मात्र कितारँ नहि थीक, आ एकठाँ उम्मीद छी  
जे मैथिली अहाँ सन प्रत्येक सेरा सँ निरंतर समृद्ध  
होगत चिबजीवन कए प्राप्तु कबत ।

४७.श्री शिबू कुमार सिंह- रिदेहक तपेवता आ  
प्रियाशीलता देखि आह्लादित भइ बहन छी ।  
निश्चितकपेण कहन जा सकैछ जे समकालीन मैथिली  
पत्रिकाक अतिहासमे रिदेहक नाम स्थायिकरूपेण निखर  
जाएत । ओहि रुक्मिण्यम् घटना सब तँ अठारहे



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

दिनमे खतम भऽ गेल बहए झुदा अहाँक ककस्केदम्  
तँ अशेष अछि ।

४५.डा. अजीत मिश्र- अपनक प्रयासक कतरौ प्रशंसा  
कएन जाय कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ  
द्वारा कएन गेल काज हाग-हागानुब धरि पूजनीय  
बहत ।

४६.श्री रीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक ककस्केदम् अन्तर्मुख  
आ रिदेहःसदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक  
स्नातृ ठीक बहए आ उमोह रैनर बहए से कामना ।

४७.श्री कृपाव बापावमण- अहाँक दिशा-निर्देशमे रिदेह  
पहिर मैथिली आ-जर्नर देखि अति प्रसन्नता भेल ।  
हमर शुभकामना ।

४८.श्री कृतचन्द्र ना प्ररी-रिदेहःसदेह पठने बरी  
झुदा ककस्केदम् अन्तर्मुख देखि रँद १३ देरौ लेन  
रौपा भऽ गेलहुँ । आरि रिश्नास भऽ गेल जे मैथिली  
नहि मबत । अशेष शुभकामना ।

४९.श्री रिभूति आनन्द- रिदेहःसदेह देखि, ओकर  
रिस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३.३.श्री मानेश्वर मनुज-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख एकव  
भरता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिशोत ग्रन्थ  
मैथिलीमे आग धरि नहि देखने बही । एहिना  
भरिष्यमे काज करैत बही, शुभकामना ।

३.४.श्री रिद्वानन्द ना- आग.आग.एम.कोनकाता-  
रुक्मिणीम् अन्तर्मुख रिस्तार, दुपाङ्क सग गुणरत्ना  
देखि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक अनेक पद्यराद  
कतेक रँवखसँ हम नेयारैत छनहुँ जे सभ पैघ  
शेखरमे मैथिली नागर्बेवीक स्थापना होखए, अहाँ ओकरा  
रैरँपव क२ बहन छी, अनेक पद्यराद ।

३.५.श्री अवरिन्द ठाकुर-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख मैथिली  
साहित्यमे कएन गेल एहि तबहक पहिने प्रयोग अछि,  
शुभकामना ।

३.६.श्री रुमाव परन-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख पठि बहन  
छी । किछु नमूना पठन अछि, रँवत मार्मिक छन ।

३.७. श्री प्रदीप रिहारी-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख देखन,  
रँपाङ्ग ।

३.८.डा मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन रिद्वानन्द  
नियमित सेरासँ हमरा लोकनिक हृदयमे रिदेह सदेह  
भ२ गेल अछि ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३.६.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास  
सबानहीय । दूध होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे  
अपेक्षित सहयोग नहि क२ परैत छी ।

३०.श्री देवशेखर नरीन- रिदेहक निबन्धबता आ रिशाल  
स्वरूप- रिशाल पाठक रत्ना, एकटा ऐतिहासिक रैनरैत  
अछि ।

३१.श्री मोहन भावद्वाराज- अहाँक समस्त कार्य देखल,  
रैहूत नीक । एखन किछ परेशानीमे छी, झुदा शीघ्र  
सहयोग देरै ।

३२.श्री फजलुर रहमान हाशमी- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मुख  
मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुरादक अधिकारी  
छी ।

३३.श्री लक्ष्मण न्या "सागर"- मैथिलीमे चमकोविक  
कपेँ अहाँक प्रवेशे आह्लादकारी अछि । ..अहाँकेँ एखन  
आब..दुब..रैहूत दुबधवि जेरौक अछि । स्वस्थ आ प्रसन्न  
बही ।

३४.श्री जगदीश प्रसाद मंडल- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मुख  
पठनहुँ । कथा सभ आ उपन्यास सहस्ररौठनि  
पूर्णकपेँ पठि गेल छी । गाम-घबक भौगोलिक  
विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्ररौठनिमे अछि, से



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली  
लेखनमे बिरिधता खनलक अछि । समालोचना शीघ्रमे  
अहाँक दृष्टि, रैयञ्जिक नहि रबन् सामाजिक आ  
कलाशकावी अछि, से प्रशंसनीय ।

३३. श्री अशोक न्या-अध्यात्म मिथिला विकास परिषद-  
रुक्मिणी अर्चनक लेल रैपाड़ा आ आगाँ लेल  
शुभकामना ।

३३. श्री ठाकुर प्रसाद झा- अर्द्धत प्रयास । धन्यवादक  
संग प्रार्थना जे अपन माँ-पानिऊँ ध्यानमे बाधि  
अँकक समायोजन कएल जाए । नर अँक धरि प्रयास  
सबलनीय । बिदेहकेँ रँहुत-रँहुत धन्यवाद जे एहेन  
सुन्दर-सुन्दर सचाव (आलेख) लगा बहल छथि ।  
सबलष्ठा ग्रहणीय- पठनीय ।

३१. रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी, अहाँक सम्पादन  
मे प्रकाशित 'बिदेह' आ 'रुक्मिणी अर्चनक'  
बिदेह पत्रिका आ बिदेह पोथी । की नहि अछि  
अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास  
होयत, निस्संदेह ।

३४. श्री रूचिनी चन्द्र दास- गजेन्द्रजी, अपनक पुस्तक  
रुक्मिणी अर्चनक पठि मोन गदगद भय गेल ,  
हृदयसँ अन्नगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

७९. श्री पवमेश्वर कापडि - श्री गजेन्द्र जी ।  
रुक्मिणीम् अंतर्निहित पठि गदगद आ नेहार भेदह ।

१०. श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठित बहत् छी ।  
धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपव आलेख पठनह ।  
मैथिली गजल कबुत सँ कबुत चलि गेलैक आ ओ  
अपन आलेखमे मात्र अपन जानन-पहिचानन लोकक  
चर्च कएने छथि । जेना मैथिलीमे मठक पवम्पवा  
बहन छथि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमर्षि जी ओहि  
आलेखमे ए स्पष्ट निखने छथि जे किनको नाम जे  
छट्टि गेल छथि तँ से मात्र आलेखक लेखकक  
जानकारी नहि बहराक द्वारे, एहिमे आन कोनो काब  
नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि विषयपर बिस्तृत  
आलेख सादर आमंत्रित छथि । -सम्पादक)

११. श्री मन्त्रेश्वर मा- बिदेह पठन आ संगहि अहाँक  
मैगनम उपस रुक्मिणीम् अंतर्निहित सेहो, अति  
उत्तम । मैथिलीक लेन कएल जा बहन अहाँक समस्त  
कार्य अतुलनीय छथि ।

१२. श्री हरेन्द्र मा- रुक्मिणीम् अंतर्निहित मैथिलीमे  
अपन तबहक एकमात्र ग्रन्थ छथि, एहिमे लेखक  
समग्र दृष्टि आ बचना कौशल देखबामे आबल जे  
लेखकक हार्डवर्कसँ जुडल बहराक काबसँ छथि ।



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

१३.श्री सुकान्त सोम- कुरुक्षेत्रम् अतर्म्निक मे  
समाजक अतिहास आ रतिमानस अतर्क जूड १र रँड  
नीक तागत, अतर्क एहि क्षेत्रमे आव आगाँ काज कवरँ  
से आशी अडि ।

१४.प्राफेसर मदन मिश्र- कुरुक्षेत्रम् अतर्म्निक सन  
कितारँ मैथिलीमे पहिले अडि आ एतेक रिशार  
संग्रहपव शोध कएत जा सकेत अडि । भविष्यक लेन  
शुभकामना ।

१५.प्राफेसर कमला चौधरी- मैथिलीमे कुरुक्षेत्रम्  
अतर्म्निक सन पोथी आरँए जे गुण आ कप दनुमे  
निम्न होअए, से रँडत दिनसँ आकास्का डल, ओ आरँ  
जा क२ पूर्ण भेल । पोथी एक हाथसँ दोसव हाथ  
घुमि बहल अडि, एहिना आगाँ सेहो अतर्क आशी  
अडि ।

१६.श्री उदय चन्द्र ना "रिनोद": गजेन्द्रजी, अतर्क  
जतेक काज कएतहुँ अडि से मैथिलीमे आग धवि  
कियो नहि कएने डल । शुभकामना । अतर्कै एखन  
रँडत काज आव कवरँक अडि ।

१७.श्री छद्म कृमाव कथप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अतर्क  
भैँठै एकठै अक्षय क्षण रँनि गेल । अतर्क जतेक





१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

काज एहि रसमे क२ गेल छी तहिसें हजार गुणा  
आब रैशीक आशा छि ।

१५. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा  
जेन शिष्ट नहि भेटैत छि । अहाँक कवकक्षेत्रम्  
अनुमनक सम्पूर्ण रूपे पठि गेलहूँ । ब्रह्महन्त रैह  
नीक लागल ।

१६. श्री हीरेन्द्र कुमार झा- बिदेह अ-पत्रिकाक  
सभ अंक अ-पत्रसें भेटैत बहल छि । मैथिलीक  
अ-पत्रिका छेक एहि रातक गरि होगत छि । अहाँ  
आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना ।

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

(c)२००४-१२. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि छटि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका ई-पत्रिका । ISSN 2229-547X  
VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडव । सहायक सम्पादक: शिर कमार सा आ झल्लाजी (मनोज कुमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन: नागेन्द्र कुमार सा आ पञ्चिकाव रिहानन्द सा । कवि-सम्पादन: रानीता कुमारी आ बमि रेखा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रम्या आ डा. बाजरीर कुमार रम्या । सम्पादक- नाटक-वैयर्थ-चर्चा-चर्चा-रेचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडव आ प्रियंका सा । सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत डेवर ।

बचनाकाव अपन मौलिक आ अप्रकाशित बचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छति) [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) केँ मेर अटैचमेन्टक रुपमें .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अपन सम्पूर्ण परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल होठे पठेताह, से आशिा करैत छी । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे आ बचना मौलिक छति, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पत्रिका) आ पत्रिकाकेँ देल



१०६ स अंक १५ मई २०१२ (वर्ष ५ मस ५३ अंक १०६)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जा बहन थडि । मेन प्राप्त होयराक रौद यथार्थर  
शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक  
सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पत्रिका  
ए पत्रिका थडि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ  
अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना  
प्रकाशित कएन जायत थडि । एहि ए पत्रिकाकेँ  
श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ  
ए प्रकाशित कएन जायत थडि ।

(c) 2004-12 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमे  
प्रकाशित सब्न्ध बचना आ आकर्षक सर्वाधिकार  
बचनाक आ संग्रहकर्ताक ढंगमे छन्हि । बचनाक  
अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किंवा आकर्षक उपयोगक  
अधिकार किनराक हेतु  
[ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) पर सम्पर्क कर ।  
एहि सागठकेँ प्रति या ठाकुर, मधुलिका चौधरी आ  
बन्धि प्रिया द्वारा डिजाइन कएन गेल ।



सिंहबट्ट

